



# मूंडै बोलै रेतड़ली

सरदारअली परिहार

परिहार प्रकाशन  
वीदासर वारी के बाहर  
वीकानेर

- प्रकाशक  
परिहार प्रकाशन  
बीदासर बारी र बाहर बीकानेर
- पल्डी छपाई 1992
- पोधी दीठ पिचेतर रुपिया
- पूठ री सजावट विजयकुमार श्रीमाली
- छापाखानी  
साखला प्रिण्टस  
सुगन निवास चन्दन सागर  
बीकानेर 334 001

## समर्पण

मावड री हेत  
जहा जम्या सस्कार  
पिछाण मानख री  
बर  
मरम बोली री  
गीता री रागळ्या

बर  
सोरम धरती री  
आज ताई लगी-लग पा रह्यो हू  
उण हेत-हज री वनड न अरपू  
अँ ओळ्या  
अ ढाळा  
अ बोल

म्हारी मा स्वल्प वनड रहमत नै  
घण मान सू

रहमन रहम मोक्ली वरस, भाई मूड हासडली ।  
ॐ माय बरयो वीर री, हेत वन री होवडली ।

## विगत

लू लपटा	9	ऊट	93
काळ-दुकाळ	14	जीव जिनावर	96
ठढी ठघारी	20	घरमा-करमा	98
होळी	25	रामसा पीर	100
दादळ बरस	27	सुगना	102
भगत	33	पीर-ओलिया	104
घास-पात	35	गोगाजी	107
तळ-तळाव	36	पावूजी	109
बासोज	38	तेजोजी	111
दियाळी	40	जामोजी	113
ब्याव-सावा	42	जसनाथजी	114
भात भरें	43	जन	115
हुव विदाई	47	भीरा	116
टाबर	49	करणी माता	117
रीता	52	रहणो-सहणो	118
बखरो-नखरो	54	सुखा भरोडी	127
सयोग सिणगार	57	चढी खुमारी	128
ऊजळी	61	रमता	129
गणा	64	दवा-दार	130
गाभा	70	गवर	131
वियोग	72	जोगी	132
जूझार	77	बला	133
अमरसिध अर दुर्गादास	81	सठा	135
खीवी-आमल	82	जसाण	136
टूग जवारो	83	सखाण	137
कोडम द	84	सोखा	138
ब्यामखानी	85	मरुघरा	140
वाक हलौ	86	परिगिष्ट	
भेडा		भिणल	141
गाया भस्या			144

## म्हारी बात

म्हार अतस मै गीत राग री हूस हिलोळा लेवण ढकी, जण हिवाळ पहाड र 12 हजार फुट ऊँची घाटघा सून च्यारू खूटा झरणा वळ-वळ वहवता देरया । उण ठोड कुदरत र रू रू मै क्षीण क्षीण सगीत री रणकी जण लेहरा लेवतो । इसडो रूप देख र मनडो गावण खातर मच मचिया सावण ढूकी । जिन ही निजर जावती हरीटास भोम फूला लदीडो घाटघा च्यारूमरा खुसबू फलाय री ही । थोडोव ऊँचो जाया क्षीखा ज्यू बरफ पडणी सुरू हुई । रुखा री ढाळथा अर पत्ता धौला घख दीसण लाग्या, चादी जडी डूगरिया देख देख र मन हरखण लाग्यो । भोम अर आम रो इसो रूप देरया जीव ठिकणै नी रह्यो मूड सून बोल निसरग्या—‘इण पहाडा रँ बीच साथी हस-हस चालो रँ, बरफ पडो अयाग साथी धीरे चालो र आज तो इण आळी म पणी वमी दीस है पण उण टम जिवा सबद निसरया हा बाज ही राख्या है ।

डूगर ही बोल अडो बात नी है । यळी री रेत पूनम री चादणी रात साफ-सूधरी आनी, टम-टमावता तारा, इमरत बरसाती चाद, नीचं मज्जमल जडी रेत र धोरं पर बैठ र सोनल रूपल वेकळून न देखण ढूक्या भिनख देखतो ही जाव । अँच रात म्हन भी इण माटी पर पाळो चालण री मोकी मिल्यो । म्हारी आख्या इसडो रूप देरया पछे फारया ही नी पिरि, बरसा पैली मन मै बस्याडो हिवाळ रो रूप फीकी लसावण लाग्यो । कुदरत री ओ अट्ट रूप देरया पछ हाठा सून गीत नी निकळ, आ किया हुव । दूधा न्हायो चादणी मै इयावलो लाग्यो वँ रेत री कण-वण मूड सून बाल है । ठाह नीं किण घटी मूड सून सबद अर घुन निसरी—

चादडले री रात चादणी, तारा छायो रातडली ।

घोरलिया र गावा बीचा रळ मिळ वठ सायडली ॥

आ रळ मिळ वठ सायडली’ सून ही जीव मै आयी व यली र सागा मै जिनरो हेत निजर आव धो अपणै-आप म अनूठो है । रेत हेत री रेली यली रँ घर-घर म दीस है । यळी रँ चितरांम पर सिक्कण री बात हिवडें मै हिलोळा लेवण लागी । हमे मनडो इण मुजव आगी-पाछो भाजण ढूक्यो । पाथीखाना रा चक्कर लगाया पण जीव ना पाप्यो वूड-वडेरा सून वाता चीता की पण मन नीं मायो । छेबड गावा मै, छेतां मै अर अवेड म जांर रहया ही मनड न ठावम आयो । ठोड-ठोड पर जावण सून

ठाह लाग्यो क थळी रा चितराम इतरा है कि लिखतार्इज जावो कोई छेडो ही वोनो । गाव मै जाया पछ किसोव लाग्यो इण रो चिन्हक वाता आपर सामन राखू ।

जालोर र गावा म अेवाडिया सू ठाह लाग्यो क भेडा मै जण छूत री बीमारी फल जाव तो अेक भेड (जिकी रोगली नी हुवै) रो काळजी छुरी सू छून'र दुकडा न भेडा र काना न छेद र घाल्या नै रोगलिया नी हुव । अठ रा लोग कोकडी न घण चाव सू जूस है दिसावर मै भी साथै राख है । बम्बई मै आ वात देखण नै मन मिली है । सेन्वावाटी छेत्र मै जीवण माता वास्त कहिज है क मा रो मिंदर तोडण न फौज आयी तो सहद मारया रा छत्ता रा छत्ता उड र फौज पर पडघा जिक सू फौज भाज छूटी । बाडमेर जिल मै तिलवटा गाव मै मलीनाथ जी रो किरपा तणा भेळ माव थोनीक साडो खोदघा मीठी पाणी निसरण दूक है । जसलमेर अर बाडमेर र गावा मै कठ कठ ही सफे फूला रा आक मिळ है । इण रा फूल चमेली जण घोळा घस है । गाव रा लोग मान है क इण मै सिवजी रो वारी है । सगळी गाव इण रो पूजा कर है । मोढा गाव रो घोरो भल भल गिगता ऊचो है । इण रें उपर सू नीच उतरता पाण घसक घसक उतरणो आज भी पाद आवै है । जसलमेर रो भोम तो चितराम रो खाण हीज है । जोघाणो नागाणो अर बीकाणो धीर-वीरा रो भोम है । इण रो वाता लिखण म जोधपुर रो पुस्तक प्रकासक, बीकानेर रो राजस्थान अभिलेखागार नागोर रो पोथीखानी देखा ही लिखण रो काम पूरो होयो है ।

काळी कळावण कागलिया हाखती जण इण भाग पर आव है तो थळी रो माटी रो रूप देखण जोग हुव है । मोरा रो मीठी मीठी बोली र बीचा हृडियो चालतो देख मनडो आपो-आप नाचण दूक है । चि'हा चि'हा पानडा सता मे दिखण लाग है जद खेत घणी रात मै दूचो बणाय खेत मै ही सोणी सुट करद है । दूच पर अेक रात हू भी काटी है । जिकी लाखोणी नीद दूच पर आयी वा हू आज भी नी भूल्यो हू । दिन निक्कला दूच नीच देख्यो तो सापा र चालण रा निसाण मडोण पडघा हा । काती रें महीण मै आस पास र खेता रा लोग रात मै अेक ठोण पर भेळा हा र घूणी माघ तपता दीस । थोड-थोड टेम पछ अेक जणो उठ र खेत रो फेरो दे आव । फेरो देती टेम मूड सू जोर जोर सू बाल गोघो गोघो । अधारी रात मै खेत मै कोई जिनावर है तो भाग जाव । आपस मै बठघा आम कानी किरत्या हिरण्या देख'र टेम बताव । जण किरया आम र बीचो-बीच दीसी तो पट बोल्या 12 बजगो है । म्हारो घडी देखी तो 12 ही बजो ही । जीव मै आयो तारा सू टेम जाणणो कितरो चोखो है । खेत मै भणत बोलणो लळा काढणो अर धान घरा लावणी अक दूज रो मदद बिना नी हुव । भाई चार रो रूप गावा मै घणो सातरा है ।

थळी रा मिंदर दरगा जिकी जाव न खुख दीनी है वो म्हार कालज रो कोर है । आज भी आख मूद इयाम रमू हू तो रमनी ही जावू हू । गावा र लोग

साची घरम अगेज्यो है क व जीव मारणी तो दूर रहघो रुख बाढणो भी पाप समझ है। किण मुजब रुखा रो रुखाळी घरम नै जोड किया बरता हा आ गममण जोग बात है। घरम धीर हेत रा घणी मिनख तो काइ जिनावरा सू इतरो हेत राख है क अेवड मै रहवतो रहवती भेडा खातर घर बार टाबर टीकर मा बाप अर लुगाई न छोड न भेडा बीचाळ जा पूग है। अ मिनख जिकी बार घरम रो नी हो बीन मार द ? मानख न हाण पूगावै, म्हार गळे नी उतर है।

ओळघा वणणी सुख हई ती बणती ही गई। च्यार सौ अेक छद बण्या पछ जो मै जाई क जिकी लिखियो है वो ठीक है क नी तो राजम्यानी रा विद्वान दा मनाहर गर्मा न दिखाया। धीरज रा घणी घण चाव सू छदा न सुण्या अर पडिया। बार मारग लिखावण पाछ ही गाढी की आग बघियो। इण र थोडक टेम पछ जोधपुर जावण रो काम पन्थी। अठ जहूरखा जी महर र आग छद राफ्या। वा जितरो इण छदा सू हेत दिखायो भूलावण जोग नी है। भावड भापा न हिबड मै वसावडो मादिलो ज्यू लिख त्यू ही बोल है अर ज्यू बो- त्यू ही लिख है। इतिहास रो लिखारो भावड भापा रो व्याकरण पर जिकी पक्क राख है उणरो जवाब नी। जहूरखा जी सू भावड भापा रो की पान लेन गाड न आग खीच्यो। खेला सू जुडोडी जीव जर्ण बल्म सू जुण ठूकयो तो अबखो लागणी नुइ बात नी ही। इण मोव पर म्हार हेताळू महेगस्वरूप भटनागर र टेम-टेम पर हिम्मत बधावण सू ही काम आग बघ्यो है। आखरा रो भण्डार म्हारी बहवड (भवरी) टेम टेम पर सहयोग नी देवती तो काव्य पूरो होवणी घणी अबखो हुवतो। जण जण बल्म रकी तो सबद कोस रो ठोड मरवण ही काम पूरो कीनी।

धळी र अगुण पास सेखाणो, आयुण पास जेसाणो, घोराळ पास बीकाणो अर लकाळ पास जोघाणो आव है। इण छेप म आज रा जिला—सीकर, झुझुनू, चूरू श्रीगगनगर, जसलमर, वाटमेर सिरोही जालोर, पाली जोधपुर अर नागौर है। अठ रो खानो पीणो, व्याव मायरा, तीज तिवार मेळा-ठेळा, गीत राग, होळी दियाळी, रीत रिवाज सयोग वियोग, धीर बीर सिणगार विरह पढ़णी लिलणी, लूलपटा, काळ दुकाळ ठडी ठचारी, मेह छाट सेठ साहुकार जात-पात मिदर दरमा घरम करम, जीव जिनावर गैणा गाभा, खेल-तमासा आनि रो वरणण इण काय मै कीनी है।

पहलड छद मै ही 'सापडली रातडली' र वख मै जीव इसडो आयो क इण जाळ माय सू निसरनी उणर बस मै नी रहनी। साब बात काळज र ठेट माय जा र बठ है। ऊन त्रिया मै जिकी अपणायत है वा दूजी ठी नो दिख है। जिकी स्वाद झमकूटी बहवण मै आव है वो झमका बहवण मै नी आव है। पछ भगवान सू नेडो कोई नी है वान भी आपा तू कह परा ही पुकारा हा— हे भगवान तू ही रखवाळी है। ऊन ~~...~~



रा इनरा आपर सोध र लावणो अबतौ लागण ढक्यो तो नूय सबदा न बणावण रो काम मुक्त कीनी तो बलम भाठी होगी टस सू मत ही ना होवै। इण अवर टेम म बलम न टोरणआठी उमरदान प्रभावली आग आई अर मारग बतावण सारू—रेहली सहडली धहडली देहडली, अहडली छेहली, नहली, बेहली अर महली सबदा नै राख्या। हू इण महान बवि रो सदा आभारी रहमू। इण आपरा न देख्या पछ ही हिम्मत बधी क इण मुजब लिख्यो जा सक है। छद र दोनू ओळघा र आखर में स्त्रीतिग र सबदा न काम लिया है पण दो टोड पर फरक आयो है। गाव सू गावन्नी इण मुजब कीनी क जयपुर जिले म अत्र गाव रो नाम ही गावरी है हाथ सू हाथली इण मुजब कीनी क हथेली न हाथ मायी है।

इण पापी र बणन मै म्हारा हेनाऊ श्री जयचंद जी गर्मा श्री सावर दया श्री रामनरेशजी सोनी श्री इन्द्राहीम खा समेजा, श्री निजाम खा तबर, श्री मुरारीजी गर्मा श्री भवरलाल रताया डा घनश्याम देवण डा गक्तिपूर्णा श्री लक्ष्मण श्रीमाली श्रीसागीलाल सागण्या श्रीविजय कुमार रे अलावा इण पोषो रो लिखाई सू छपाई ताई रो जात्रा म जिने जिने सगी सायियो रो मन्त्र मिळी बा रो ई आभारी हू।

बीकानेर रे राजस्थान अभिलेखागार राजस्थानी भाषा साहित्य एव सस्कृति अकादमी अर भारतीय विद्यामंदिर गोध प्रतिष्ठान सू भात भात रो पोष्या सदम सारू दखण बाचण सातर मिळी इण सातर उणारी ही आभारी हू।

थळा र चितराम रो खाण इतरी राती माती है कै इण माय सू कितरी ही निजाठी खाली हुव ही कोनी। बाचणिया न म्हारी बात आछी लागी तो इण मुजब फेरू लिखण रो मन मै है। बाचणिया सू म्हारी अरदास है कि इण काव्य मै जिवी कम्पा रही है बान बता र म्हने रस्ती लिखाय र म्हा पर किरपा कराला।

बीदासर वारी के बाहर  
बीकानेर

सरदारअली परिहार

## लू-लपटा

आंधी चाल आर्या फूटे, घुळजा पाणी रेतडली ।  
 बळती चाल खोरा<sup>1</sup> उछळै, बळ-बळ जावे चामडली । 1 ।  
 ऊचा घोरा<sup>2</sup> रेत उडाव, ऊभी सूकी खेजडली ।  
 सिल-लोढी अर नूण-मिरचडी, चटणी बाटै मावडली । 2 ।  
 ताल-तलैया पेट दिखावे<sup>3</sup>, पाणी दिख न वूदडली ।  
 खेळी खाली डागर देख, आसू व्हाख आखडली । 3 ।  
 लूवा चाल्या थूक सूकजा, आटा लावे जीभडली<sup>4</sup> ।  
 कागलियो<sup>5</sup> कठा म चिपियो, मूड अटको वातडली । 4 ।  
 होठा ऊपर फपया<sup>6</sup> आई, बळती चाल लूवडली ।  
 विन पाणी तिरवाळा<sup>7</sup> आवै, दिन म देखै रातडली । 5 ।  
 घूळ वतूळा घेरा घाल, आख्या फिरगी रातडली ।  
 पून चालती दे सूसाडा<sup>8</sup>, सीटचा बाजै रोहिडली<sup>9</sup> । 6 ।  
 जद तावडियो आट्या काढै, डागर देखै मोतडली ।  
 चक्कर खातो पडे मानखो, खाय भुंवाळी टाटडली<sup>10</sup> । 7 ।  
 जेठ असाढा जोवन भलकै, मदमस्ती में लूवडली ।  
 बळती-भळती पून चालिया, चडका लागै चामडली । 8 ।  
 पगा उभाणो आज भाजै, रूख दिखै नी छावडली ।  
 सूक होठा फिर जीभडो, आख्या जोव नाडडली<sup>11</sup> । 9 ।

- 1 अगारे 2 रेत के स्तूप 3 खालीपन 4 जीभ 5 काबुल  
 6 होठो पर परत जमना 7 आलों के सामने अघेरा छाना  
 8 हवा की जारदार आवाज 9 जगल 10 टाट 11 छोटा तालाब

तावडिय म गडक<sup>1</sup> सिसक, लाबी लटकै जीभडली ।  
कान फडफडी देतो बैठचो, मूडे दीस दातटली । 10 ।

कागलिया रो चूचा गुलजा, भपा लुकजा चिडकडली ।  
कोडा कीडी मर तावडे, बळती बाळ धरतडली । 11 ।

लू-लपटा सू पासो राखण, टावर बडजा झूपडली ।  
बूढा-बडेरा माय दुवकजा<sup>2</sup>, बठे ऊडी आरडली । 12 ।

जद साफलियो घरा भूलजा, तप तावडो घाकडली ।  
कनपटिया पर द झपटारा, बळती झळती लूवडली । 13 ।

बिछू काटा मरता दीसै बिल मै बडजा सापणली ।  
तीतर-हीरण दिख सिसकता, जेठ आसाढा रोहिडली । 14 ।

दोफारा म सूरज ताप, दिखें पसीनी खाखडली<sup>3</sup> ।  
रग-रूप स्स लियो तावडो, काळी पडगी चामडली । 15 ।

भरो दुपारो ऊजड<sup>4</sup> चाले खाली होजा दीवडली<sup>5</sup> ।  
गेलो<sup>6</sup> भूल्यो भटका खाव, छाव दिखें नी खेजडली । 16 ।

माथे ऊपर तपे तावडो, नीच ताप धरतडली ।  
लू-लपटा म कर कामडो, ऊभी बोचा रोहिडली । 17 ।

लूग ऊटिया खाय खुटोयो, अंबड चरग्यो पानडली<sup>7</sup> ।  
सूके काटा रही झाडक्या, उजडो दीस टोवडली<sup>8</sup> । 18 ।

फूल पाखडी बळी पडी है, घाकड चाल्या लूवडली ।  
रूख-वाठका<sup>9</sup> सूका दीसै, ऊभा ऊचो टोवडली । 19 ।

पान आकडा पीळा पडग्या, लूवा चाल्या धरतडली ।  
हरिया हरिया कर दिख है, पीजू पाक्या घाकडली । 20 ।

1 कुत्ता 2 मदर बठना 3 बगल 4 बगर रास्ते के 5 केतली

6 रास्ता 7 पत्ते 8 बाळू रेत का छोटा स्तूप 9 झाडिया

लूवा चाल्या बळें पगयळघा, सूत्यो ऊपर माचडली ।  
पाणी छिडक्या जो-सोरो है, लेतो दीस नीदडली । 21 ।

चकर खाता उठै भतूळा, भूता लावो चोटडली ।  
ऊचो ऊभी दिस गगन में, घोळी धुधली जेवडली । 22 ।

करडा<sup>1</sup>-करडा कोस<sup>2</sup> भाइडा, गाव आतरा<sup>3</sup> रेतडली ।  
बळती बाळू लूवा चाल्या, अबखी<sup>4</sup> लागै डाडडली<sup>5</sup> । 23 ।

लूवा-धवा लो ऊठ है, रू-रू वाळें चामडली ।  
सास आख में अटकी दीसै, बात कर है मौतडली । 24 ।

जगतो गोळी सूरज निकळघो, लाय पलोता आगडली ।  
डाकण लूवा जीव गटकलै, तपता तावड टोवडली । 25 ।

हाथ आगळघा वळता झलता, राती<sup>6</sup> दीस नाकडली ।  
घोमी-घोमी आच देवती, खून चूसलै लूवडली । 26 ।

तळो तळावा फाटचो दीस, दिख पापड या घरतडली ।  
सप्या तावडो लूवा चालै, भोम उघडजा चामडली । 27 ।

बळती रेता चिणा भूजिज, भटयारण री चूलडली ।  
अकरी आचा लूवा भूज, मिनख-डागरा गावडली । 28 ।

आक खावतो मिरगो भटक, बळती बाळू घरतडली ।  
लूवा पीबा<sup>7</sup> मूडो खोत्यो, भखती<sup>8</sup> दीस पूनडली । 29 ।

हिरण बाखोट<sup>9</sup> दिख भुळसता, लूवा चाल्या घाकडली ।  
नाड<sup>10</sup> हाखिया हिरणी ऊभी, आसू बहवै धारडली । 30 ।

बिन पाणी बिन छावडली रे, हिरणी देख मौतडली ।  
बाखोटा री दै भोळावण, जीव छोड घो मावडली । 31 ।

1 कठिन 2 मील 3 दूर 4 अनखनी 5 पगडडी 6 लाल  
7 पीने के लिए 8 खाना 9 हिरण के बच्चे 10 गदन

- काळी मिरगी घणी चमकणी, भूल्यो भरणी चोवडली ।  
 हियो<sup>1</sup> हाखिया<sup>2</sup> पड्यो दिख है, वर आक री ओटडली । 32 ।
- लूवा झाडा इसडा दीना, जोव भूलग्यो रोहिडली ।  
 जोडा<sup>3</sup> पाळा हिरण ऊभिया, भूल्या विसरघा गावडली । 33 ।
- जेठ असाढा तोसी मरगी, आज-भाज रेतडली ।  
 सूखे नाला पाणी चिलक, पूग देखल मोतडली । 34 ।
- कादो कीचड घोळू काटा, पड्या दिख है कूडडली ।  
 गमछ माया आणै छाण, भरती दीस दीवडली । 35 ।
- गदलीज्योढी पाणी दीस, लथ-पथ कादो नाडडली ।  
 कीचा मँ ओढणियो न्हाख्यो भरे नीचोय मटवडली । 36 ।
- होळी-दियाळी न्हाव घोव, पाणी भेळो कूडडली ।  
 जोव जिनावर पीता दीस, ऊभा घर री वासळडी<sup>3</sup> । 37 ।
- गाव गोठ सू आय बटावू<sup>4</sup>, पाणी माग लोटडली ।  
 दूध दही ती दिख मोवळी, खाली दीस मटवडली । 38 ।
- आघी चाल्या रेत उड है, घोरा बदळे डाडडली ।  
 ऊचा चढता दिख घोरिया, लाघ-घरा री भीतडली । 39 ।
- जेठ आसाढा मिरगी<sup>6</sup> चाल, वरसे रातू रेतडली ।  
 सूरज ऊग्या झाड झडक धूळ भरोडी गूदडली । 40 ।
- काळी पीळी आघी आव, चाल दिन अर रातडली ।  
 तेरह दिन तक दिखे चालती, देती झपटा पूनडली । 41 ।
- ऊभी कामण पाणी छिडक, गावा चाल्या आघडली ।  
 माच ओट<sup>7</sup> चूल बठी, दीख सेकती राटडली । 42 ।

1 निराश 2 तालाव 3 घर और फलसे के बीच का स्थान  
 4 राहगीर 5 पार करना 6 तेज आघी कालगामतार चलना 7 ओट

पाट्या<sup>1</sup> पाड़े मेंण लगावै, मोढ्या चेपै कामणली ।  
वारै दिना २ आतरा<sup>2</sup> सू, दीखै हावती गोरडली । 43 ।

दस कोसा सू गाव आवता, आर्या देसै खेजडली ।  
पाणी लूणी पूग्या पीवै, बैठचीं घर री झूपडली । 44 ।

मनडौ-तनडौ बुझ्यो पडचीं है, खाय फदीडा<sup>3</sup> लूवडली ।  
काम-काज मै मन नी लागै, बैठ उडोकै<sup>4</sup> रातडली । 45 ।

कच्च टापर<sup>5</sup> मोष्या<sup>6</sup> राखै, घर-घर भीता गावडली ।  
दोफारा मै सूता दीसै, वचता बळती पूनडली । 46 ।

बळती भूजै भख तावडौ, जीव-जीनावर रेतडली ।  
सूरज लूवा राज देखिया, छावा डूढै छावडली । 47 ।

गावडक्या रा दूध सूकग्यी, सिसकै ऊभी भैसटली ।  
लूवा वाथा भरी खटी है, भीच दिखाव मौतडली । 48 ।

नागी लूवा दिख नाचती, ऊच घोरा टीबडली ।  
वेरया<sup>7</sup> सूनी देख गोरटी, ऊभी फोडै मटकडली । 49 ।

ऊभी किरणा आर्या काडै, बळती चाल पूनडली ।  
सोनलिय हिरणा री रगडा, बिदरग कर द्यो लूवडली । 50 ।

जे टावरिया भूल्या-भटक्या, दूर निकळजा गावडली ।  
वावल मावड सोधण<sup>8</sup> चाल्या, मिलिया देखै ल्हासटली । 51 ।

घोरलियै लहरा मै फसियो, गावा भूल्या डाडडली ।  
खाली लाटी होठा लागी, आती दीस मौतडली । 52 ।

बिन पाणी रै मरचीं पडचीं है, घोरलिया री घरतडली ।  
रेतडली न ओढ्या सूत्यो, लावी लेतो नीदडली । 53 ।

1 केशा को विपकाना 2 अतराल 3 भापट

4 इतजार करना 5 मकान 6 छेद

7 तालाब के तले भ गहरी दरारें 8 डूढने

## काळ-दुकाळ

ऊनाळो-सीयाळो मिलकर, दिखें तोडता दातडली ।  
चोमासो ऊभो तरसावें, घोरा धरती रीतडली । 54 ।

आघो राता काग करूक<sup>1</sup>, अदरा<sup>2</sup> चाळें पूनडली ।  
डाकी वाळ आवती दोसै, सुणलें भाया वातडली । 55 ।

गाव गडकडा रातू कूकै, गादड<sup>3</sup> कूक रोहिडली ।  
घरा घरा मे वाता चाल, काळा मरसी गावडली । 56 ।

कुरज कुरळाय उडकर जावें, मुड नी आवें नाडडली ।  
मेह गयी घरा आपर सुण, काळ पडेली घावडली । 57 ।

दाणा पाणी आख दिखें नी, नी ऊर्ग है घासडली ।  
त्रिकाळ<sup>4</sup> आय मिनख न मार, डागर देखें मौतडली । 58 ।

काळ गाव मै पड मोकळा, तीज कुरियो<sup>5</sup> धरतडली ।  
बरस आठवें आय आघोरी<sup>6</sup>, जीर्मे बठचो ल्हासडली । 59 ।

वार वरसा काळ पडचा सू, रिणी उजडगी गावडली ।  
जमुना बीचा मरवा चाल्या, नदिया थमगी धारडली । 60 ।

सइया भइया काळ पडचा सू, दिख फाटती आखडली ।  
भूखी मिनख मिनख न खाव, दाता चावें हाडडली । 61 ।

खेजडलें रा छोडा छाग्या, पाणी सीजें हाडडली ।  
घास पात सगळा नै चाब्या, भूखा मरती गोरडली । 62 ।

1 बोलना 2 नक्षत्र 3 सियार 4 घान, पाणी और घास तीनों के अभाव वाला अकाल 5 आधा अकाल 6 अधिक खाने वाला

मूडे लाळा पडती दीस, आसू नाखँ गावडली ।  
तावडियँ मै भटका खाती, जीव छोड द भसडली । 63 ।

भूखी तीसो घूळ भरोडी, काम करे दिन रातडली ।  
टाबरिया नै घरा छोड घा, रोता डुसका हिचकडली । 64 ।

टाबरिया गरळाव<sup>1</sup> भूखा, मास चाटले आतडली ।  
रोता रोता हिचक्या धधगी, आसू सूक्या आखडली । 65 ।

गोद्या मै टावरिया बिलखँ, मावड विलख रोटडली ।  
बाबल गुम सुम<sup>2</sup> वण ऊभो है, ना निसर है बोलडली । 66 ।

फाटी कुडती हाथ कटोरी, लीरम लीरा<sup>3</sup> चूदडली ।  
सुघ-वुघ भूली घर घर मागै, हाथ फलाय मरवणली । 67 ।

पेट भूख है लूवा चाल, आरया फिरगी रातडली ।  
तनडो सूक्यो मनडो बुझियो, हाड्या चिपगी चामडली । 68 ।

कुटम-कबीली मूडी मोट, भगदड मचजा गावडली ।  
पकड काळजी सासर<sup>4</sup> ऊभा, हेला देवे मौतडली । 69 ।

भूखा मरता आजै भाज, टकरा खावै भीतडली ।  
तिरवाळा आख्या मै आवै चक्कर खावै साथडली । 70 ।

घर म सूत्या टाबर छोड्या, रात बिराता गोरडली ।  
भूखा मरती काकड<sup>5</sup> छोड, बाबल साथै मावडली । 71 ।

आण बाण नै छोड्या छिटक्या, भगती माग रोटडली ।  
भूखा मरतो दिनडो काट, रोवै आखी रातडली । 72 ।

हाथ पगा सू दिखँ अडोळी<sup>6</sup>, काजळ सूनी आखडली ।  
आसूडा रा बाळा वहव, डुसकै रोवै कामणली । 73 ।

1 हृदय विदारक रोना 2 चुप चाप 3 तार-तार 4 जानवर  
5 गाव की अन्तिम सीमा 6 शृंगार-आभूषण विहीन



घर धनियाणन<sup>1</sup> घर न छोडघी, मगती बणगी गोरडली ।  
गळी-गळी मै फिरै मागती, लिलडघा<sup>2</sup> गाती कामणली । 74 ।

जद टावरिया रोटी माग, जामण सोधै हाडडली ।  
खाली ठीकर देख घरा म, छातो कूटै मावडली । 75 ।

रोही डाकण बण बठी है, दिख गटकती घासडली ।  
ठूठी<sup>3</sup> बण खेजडली ऊभी, छाव दिखै नी घरतडली । 76 ।

पग पग ठीकर खातो भटक, भूखी तीसो टीबडली ।  
होळ होळ नेडी आती, जीव देखनै मौतडली । 77 ।

काळ पडघासू रामनिक्ळजा, निसर सुरली<sup>4</sup> भरवणली ।  
टावरिया न दिस बेचती, दो रिपिया म मावडली । 78 ।

ल्हासा इखरी विखरी दीस, माजा गीघा कागडली<sup>5</sup> ।  
दिन दोफारा काळी राता, कूक कुत्ता-कुत्तडली । 79 ।

मरता टावर आख्या देस, गाव-गाव मै मावडली ।  
मौतडली री नाच हुब है, घर-घर गूज चीखडली । 80 ।

दाणो पाणो स्स की खूटची<sup>6</sup>, सालो घर म हाडडली<sup>7</sup> ।  
भूखी तीसो मर मानखी, पटघा काळ री छावडली । 81 ।

काळ थपेडा<sup>8</sup> इसडा<sup>9</sup> दीना, सांसण<sup>10</sup> बणगी भरवणली ।  
सोनल रूपल बणी डोकरी, भूखा मरती गोरडली । 82 ।

छपनी काळ काळा री राजा, आता फाटी घरतडली ।  
करसाटी गावा म फूटघा, नागी नाच मौतडली । 83 ।

द्विरमो राक्स दिख आवतो, धूळ भतूळा आघडली ।  
खोल जवाडा गिटती दीस, जीव जिनावर खेजडली । 84 ।

1 घर की मालकिन 2 करुणामय 3 वह पेड जिसकी पत्तियाँ व  
डालिया काटी हुई हो 4 अबल 5 कौवे 6 समाप्त 7 हाडी  
8 झटके 9 ऐसा 10 भिलारिन (जानि विशेष भी)

पेट आतडचा पीदं बेठी, सामे दीसै हाडडली ।  
पाख-पखेरु मरचा डागरा, सूनी दीसै भूपडली । 85 ।

सूकी हाडचा दिखं पीजरी, खाडा घसगी आरडली ।  
गला गुगा बणिया दीसै, मिनख डागरा गावडली । 86 ।

काळ घाडवी दिखे लूटती, लोही मास चामडली ।  
सूकी हाडचा दिखं बेचती, सूनी गळिया गावडली । 87 ।

काळ खूनडी पीती दीस, घोळो पडगी गोरडली ।  
हाडचा भारी उखण्या चाली, समसाणा न डोकरडी । 88 ।

मुडदा बिखरचा च्यारू कूटा, रूळै भोडका रेतडली ।  
इखगी बिखरी पडी हाडक्या, जीव जिनावर रोहिडली । 89 ।

काळ फफडं मिनख डागरा, ऊभौ डाकी टोबडली ।  
राकस घाटी दिख मोसती, गवरू टाबर डोकरडी । 90 ।

ल्हासा सडती पडी गाव म, भभका मार पुनडली ।  
आख्या नासा फाटी दीस, मूडै दीसै दातडली । 91 ।

काळ दुकाळ अकलडो काढ, समझ रहो नी हीवडली ।  
रात अधारी चोरी करता, पीडी झाल कुत्तडली । 92 ।

सानौ चादी रह्यौ गाव म, भूखौ लीनी मौतडली ।  
वरतन भाडा घर मै रहग्या, जेबा रहगी रोकडली । 93 ।

काळ पडचा सू छीया पडगी, मूड चिगदा कामणली ।  
आख्या गोडा भरी दिख है, घर-घर टाबर टीगरली । 94 ।

काळ पडचा सू दूध सूक्यौ, सूनी दीस छतडली ।  
टाबर न बिलमावण खातिर, हाचळ देवै भावडली । 95 ।

1 छपने के अकाळ मे लोगो के घरा म सोना चादी एव जेबो मे  
छपये होते हुए भी उन्हें धान नहीं मिला था ।

भूखा मरता पेट बिप्यो है, कमर लाग्यो कामणली ।  
कठ बँठोडी मूँडे निसरै, फुस-फुस करती बातडली । 96 ।

बिन गाभा र दिखै बापडा, टावर टिक्कर डोकरडी ।  
दिनडो भूसा मरता काट, डाफी गटक रातडली । 97 ।

काळ आवती कड तोड है, गवरू डोकर गोरडली ।  
कमर भुकोडी गोडा लागी, हिलती दीस टागडली । 98 ।

काळ रोगडो इसडो लाग्यो, झाल्या वठो माचडली ।  
घोस्या घाट्या दिख घसक्ती, चाद्या पडगी चामडली । 99 ।

तनडो दिवली बुझती दीस, सास अटकगी आसडली ।  
माचँ सूती मौत उडिकँ, पल पल गिणती डोकरडी । 100 ।

वाडो काळ वीकाण आय, व्याव रचावै रेतडली ।  
जोघाण मै घाकड नाच्यो, देखी मिनखा मोतडली । 101 ।

बळती रमता घाकड घाल, काळ पड्या सू घरतडली ।  
छोट छोट टावरिया रौ, कर सिरावण लूवडली । 102 ।

काळ पड्या सू डाफी डावण, घमचक घालँ रातडली ।  
भूख पेटा, बिन गाभा रँ, मौत देखल साथडली । 103 ।

मालव न दीसँ जावती, भूष मिटावण गोरडली ।  
डरू-फरू मावडली देख, जद छूट है गावडली । 104 ।

कामण सूती सुपनी देख, हरी भरी है खेतडली ।  
बाख खुल्या सू रोती दीस, डुसका खाती मरवणली । 105 ।

दूर दिसावर चाट्यो भाई, पूरा लादी गाडडली ।  
तनडो मनडा दोनू वेच्या, साथ लायो सासडली । 106 ।

घरा दाणियाँ अँक दिखँ नी, ठाकर देवं घमकडली ।  
ऊट डागरा ठाणा खाल, रोती दीस गोरडली । 107 ।

करसौ सच जुलमी लेव, काळा काळी रातडली ।  
 खेत मजूरी कर वापडी<sup>1</sup>, लुच्चा लेलै पूजडली ॥108॥  
 तीन रूप काळ रा देख्या, पाणी घान घासडली ।  
 चौथी काळ साच री देग्यो, ठगा वणी है मौजडली ॥109॥  
 च्यारुमेरा दिलै लूटता, वण सचवादा<sup>2</sup> गावडली ।  
 मिनख मारता ह्या-दया<sup>3</sup> नी, घर-घर देख साथडली ॥110॥  
 चौड घाडै रिपिया जीम, काळ पडत्रा सू घरतडली ।  
 बीच-बिचोला मंठना भर लै, गिरज कागला गोठडली ॥111॥  
 धोर-उच्चका लुच्चा लफगा, लूटै कामण लाजडली ।  
 लूट-पाट नै सहती सहती, छेकड लेवै मौतडली ॥112॥  
 भोळा-ढाळा नै बिलमावै, डाकण कहती बातडली ।  
 मौकौ देख्या झट गटकाव, मिनखा थारी रोकडती ॥113॥  
 मरियोडा न फेरु मारै, काळा उलटी रीतडली ।  
 लूठा<sup>4</sup> आग वणै वापडी, दाब्या टाग्या पूछडली ॥114॥  
 राज काज री ध्यान मोकळी, सूप दिखावै<sup>5</sup> रोकडली ।  
 रिपियो घिस घिस पैसो वणग्यो, वो भी दूजी जेवडली ॥115॥  
 घरती थारी थू घरती री, सुणल भाया बातडली ।  
 मावड दूघा लाज राखदी, हसती लेली मौतडली ॥116॥  
 राज-काज हाथ मै थार, क्यो बिलखै है मावडली ।  
 चेत्या जीव जीवसी भाई, फेर हिये मै कागसडी<sup>6</sup> ॥117॥  
 हीम पाट नै खोल साधिडा, घरमा राखी बातडली ।  
 किरक<sup>7</sup> सार्थ जीव जीवडा, पाप मेटदै घरतडली ॥118॥

1 बेचारा 2 सच्चाई के देवता 3 थोड़ी भी दया नहीं  
 4 बलशाली 5 देना 6 कषा 7 मनोबल, हिम्मत

## ठडी-ठ्यारी

सियाळें में सी पडे भाई, सूनी होजा नाकडली ।  
डाफर<sup>1</sup> चाल दात वाजें, दोनू धूजें टागडली ॥119॥

हाथ पगा में ठ्यारी लागे, व्याई फाट अेहडली ।  
तेल लगाव, चोपा देव, लीरघा बाघे मावटली ॥120॥

भूपडली तीणा सू आवें, ठडी तोखा पूनडली ।  
गोडा बोचा माथी लीनी, खाचें ताणें कामळडी<sup>2</sup> ॥121॥

राम नाम न जपती जपती, धोव मूडो हाथडली ।  
भजन गावती कर कामडो, कड-कड वाज दातडली ॥122॥

आधो राता आरघा खुलजा, चढं धूजणी<sup>3</sup> बहवडली<sup>4</sup> ।  
घटो घमडका देती-देती, आखी काट रातडली ॥123॥

रुख-बाठका<sup>5</sup> रस मुरझाया, डाफर चाल्या रातडली ।  
घडिया माटा पाणी जमग्यी, पाळा<sup>6</sup> पडता गावडली ॥124॥

घबर<sup>7</sup> पडचा सू हुव अधारी, दिन म दीसे रातडली ।  
सो सी करती तप वासती, बंठचा आग चूलडली ॥125॥

फाट्या जूना<sup>8</sup> गाभा लीना, बंठी सीवै<sup>9</sup> गूदडली ।  
ठभारी आया दिस ओढता, घर-घर टावर टीगरलो ॥126॥

डाफर चालें मेही वरसें, टूट्या<sup>10</sup> पडजा आमळडी ।  
काम काजडो छोटघा बठी, खोरा ताप मारडली ॥127॥

1 शीत लहर 2 बम्बल 3 कपकपी 4 बहू 5 कर आदि  
काटदार झाडिया 6 बरफ जमना 7 कोहरा 8 पुराने 9 खिलाई  
करना 10 हाथा की उगलियों मे पडनेवाला मोड

पूर पला<sup>1</sup> री कमी दिलै है, सोया मरजा साथडली ।  
तारा गिणती रात काढल, पलका धाम्या आखडली ॥28॥

कमर झुकोडी डोरर<sup>2</sup> बैठी, ओटी लीया भीतडली<sup>3</sup> ।  
तावडिम<sup>4</sup> में बैठी-वठी, कर पाघरी<sup>5</sup> टागडली ॥29॥

र र खड्यो दीसै चामडी, डाफर चाल्या गावटनी ।  
काळजिय में सी वड जावै, दिख धूजती कामणली ॥30॥

पोह<sup>6</sup> खालडी<sup>7</sup> खोह कहीजै, मेहो न्हाट्या छाटडली ।  
ठाली-भूनी<sup>8</sup> ठचारी आर्द, मूड धोलै टोकरटी ॥31॥

ठडौ-ठडौ पाणी पीया, रीळा<sup>9</sup> चाल दावटनी ।  
नीना नीला होट दिख है, घर-घर गावा गोरटनी ॥32॥

टावरिया नै ठचारी लाग्या, घासी देवें मावटनी ।  
रातू टावर इणकै-रिणकै, सूता जामण गोदटनी ॥33॥

ठचारी खाया नाक झर है, टप टप टपक बूदटनी ।  
मार रगटका ओछ-पोछै, राती दीमै नाकटनी ॥34॥

दिन निकळवा सू तपै वासती, कामण वैठी चूलटनी ।  
उठ उठ घर री काम करै है, ओढचा भायै कामटनी ॥35॥

रोही रुखा हियाँ नाखद्यो डाफर चाल्या घाकटनी ।  
खीप, फागला, कैर, आकडी, पीळी होजा मेजटनी ॥36॥

घाराऊ<sup>10</sup> सू लपका करती, डाफर आय रावटनी ।  
गाव घरा में धमचक घालै, बडती छेत्या नूडटनी ॥37॥

गोरो मूडी लालवव है, छीका खाव गाटनी ।  
डाफर चौरै मनडी तनडी तरवारा री घारटनी ॥38॥

1 कपड 2 बुडिया 3 दीवार 4 घूप 5 साधा 6 निच्यर माट  
7 चमडी वा जलानेवाला 8 सबसे बुरी 9 चाय 10 उच्चर टिया

डाफर फदीड इसडा दीना, गाला काना नाकडली ।  
 सुनौ हायी फिरं भाइडो, वाळू घोरा धरतडली ।।39।  
 पोह माह में जोवन भरियो, राफड<sup>1</sup> घालै धाकडली ।  
 डाफी डाकण बैठी जीम, टावरिया री ल्हासटली ।।40।  
 वोद<sup>2</sup> रुखा वर<sup>3</sup> घणी है, डाफर तीखी पूनडली ।  
 वाळ वाळ कर राख करै है, जडा मूळ सू खेजडली ।।41।  
 माझत<sup>4</sup> राता ठघारी आवै, पाह माह में गावडली ।  
 हळवा हळवा बैठ काळजै, डाफर देवै भौतडली ।।42।  
 धीव जम्योडौ भाटो<sup>5</sup> वणम्यो, पिघळ ताप्या<sup>6</sup> भागडली ।  
 वरफ जम्याडो दिख गाव म, घोळी घक है चादडली ।।43।  
 ठघारी ठरका करती आव पडता पाणी छाटडली ।  
 सूसाडा सू डाफर चाल्या, मरजा डागर डोकडली ।।44।  
 सकराता म डाकी थारी, जोवन दोसै धाकडली ।  
 हाडक्या न दोसै गाळती, वडती छेत्या भूपडली ।।45।  
 डरता-डरता दिखै रुखडा, डाफी गाडचा<sup>7</sup> आसडली ।  
 रस कस डाकण दिख चूसती, डाळ-डाळ अर पाखडली ।।46।  
 रिघरोही गादडिया कूक, गावा कूकें कुत्तडली ।  
 जण रात में दावो<sup>8</sup> पडजा, हिरणा खिरजा पूछली ।।47।  
 तावडियै री वाटा जावै, किरणा ढवजा<sup>9</sup> वादळडो<sup>10</sup> ।  
 झिर मिर झिर मिर मेहो वरस, मूड वाजै दातडली ।।48।  
 अळका-सळका मा'रा<sup>11</sup> चाल, डाफर चान्या गावडनी ।  
 चिलम तवाबू पीता पीता, बठघा काट रातडली ।।49।

1 धमक 2 घुराना 3 दुसमनी 4 आधी 5 पत्थर 6 तपाने से  
 7 गाडना 8 पाला पडना 9 छिप जाना 10 बदली 11 पीठ

हाथ-पगलिया सूना होजा, चढचा घूजणी<sup>1</sup> डोकडली ।  
गोडा भेळा करिया वठी, हाथा दाब्या छातडली ॥150॥

हाथ टागडी करै कीरतन, डाफर चाल्या गावटली ।  
आगाँ-पाछी कर कामडी, नेडी राखँ चूनडली ॥151॥

ठडी पून काळजिया वीध, माची ढाळची भूपडली ।  
सिरख पथरना वीचा सूत्यी, ढकिया मूडी नावडली ॥152॥

नाक ढक्या सू ठगारी आघी, ऊनी<sup>2</sup> लागै सासडती<sup>3</sup> ।  
काना माथै गमछी वाध्या, चाल वीचा रोहिडली ॥153॥

घरा घरा स भेळा होजा, हुवै हथाया चौतरडी<sup>4</sup> ।  
रळ मिळ वैठचा घूणी तापै, जगै वीच मँ आगटली ॥154॥

भरै सियाळ दिनडा छोटा, लाम्बी होजा रातडली ।  
माचलियै पसवाडा फोर, खोलै मीच आखडली ॥155॥

पाह माह मै खेह<sup>5</sup> छायजा, जोरा चाल्या आघडली ।  
तावडिय मँ ताप दिलै नी, ठडी चालै पूनडली ॥156॥

ठगारी लाग्या ताव तपा सू, वळता-झळता चामडली ।  
आठ रजाई घर मै सूत्यी, लै ऊकाळी वाटकडी<sup>6</sup> ॥157॥

मूडे सास छाडता दीसै, भाप उडै है धाकटली ।  
टावरिया न रम्मत लाघजा, मूडे हाका हाकडली ॥158॥

आख तावडी सूरज दिखै न, वादळ नाखँ छाटडली ।  
टावर टोकर सी-सी करता, मार्गै भुगलौ टोपडली<sup>7</sup> ॥159॥

च्यारुमेरा टागर वठ्या, तप वासती<sup>8</sup> चूनडती ।  
ताती ताती<sup>9</sup> रोटचा सेकै, वैठ रसोई मावडली ॥160॥

1 कपकपी 2 गम 3 सास 4 चौकी 5 खख 6 कटोरी

7 टोपी 8 आग 9 गम-गम



तावडिय मै रमता दीसै, घर-घर टायर टीगरली ।  
सियाळै रो सिइया पड्या सू, वडता दीसै भूपडली ॥161॥

घर घर घूजै है टावरिया, चिपजा जामण छातडरी ।  
जूना गूदडा<sup>1</sup> लिरघा लटकै, अपटै-दपट मावडली<sup>2</sup> ॥162॥

डाफर चाल्या डफाचूक<sup>3</sup> है, मिनख लुगाई गावडली ।  
फिरणी टुरणी<sup>4</sup> स्सकी भूल्या, ओढघा बैठघा कामळडी ॥163॥

डेडरिया डरडाता फिरता, चोमास री रातडली ।  
ठघारी कडक्या<sup>5</sup> ली समाधी, सूनी दीसै नाडडली ॥164॥

चादी मेखा दिग्यै रोपती डाफर चात्या रातडली ।  
ओस पटी पथरीज<sup>6</sup> भाई, माती बिखरघा घरतडली ॥165॥

वीर चडघाडी डाकण भाज घमचक करती टोवडली ।  
डाफी बख<sup>7</sup> म जीव आवता, पटक दिखाव मौतडनी ॥166॥

पागणिया सी चागणिया है, जोरा चाल्या पूनडली ।  
घर-घर साथी दिग्यै घूजता, सी-सी करता गावडनी ॥167॥

रात विराता भूत्यौ भटक्यौ, रहजा भाई रोहिडली ।  
भर सियाळै बाळ् ठडी भीच्या बैठघी दातडली ॥168॥

लोरम लोरा ओढ गूदडी, डोकर फिरलै टोवडती ।  
खाच नाण हिवड लिपटान, घर घर करती वातडली ॥169॥

हाढा चुमती सूळा लाग, डाफर चाल्या रेतडली ।  
विन तावडियै दबै न डाफी, धाळू धोरा घरतडली ॥170॥

डाफर चात्या पथरीजै है ताल तलाई नाडडली ।  
वरफ जमोडी घर-घर दीसै, टायर कडकै दातडली ॥171॥

1 पुराने कपडे 2 मा 3 विवेकहीन 4 चलना फिरना 5 जोरदार  
ठड का आना 6 वरफ बन जाना 7 दाव पेच म आना ।

## होळी

होळी माथ सुगन मनावै, स्सं री देखें आखडली<sup>१</sup> ।  
शाळा लपटा सीधी जाया, धान भरेली घरतडली ।।१७२।

फागण महिणें गिदड घालें, ढोल वाजता घाकडली ।  
हाथ डाडिया नडता दीसै, मधरी लागें तानडली ।।१७३।

गवरू रळ मिळ गावें घमाळा, मीठी वाजें चगडली ।  
फागण महिणें गीत सुहावें, रस भीजी है कामणली ।।१७४।

भात भात रा साग रचाया, नाचें कूदें घाकडली ।  
मरवण ऊभी ढोली निरखें, पलका थाम्या आखडली ।।१७६।

साज्ञ पट्या सू भेळा होजा, चग वजावें हाथडली ।  
मधरा मधरा गाता दीसै, ऊभा ऊपर टीवडली ।।१७५।

चगा माथें गीत गावता, गवरू कहद वातडली ।  
गजवण हेली सैनी लखलें, बठ ऊडिकें सजडली ।।१७७।

छाळोडी न छैल छवीला, रग उछाळें हाथडली ।  
ऊच नीच न भूल्यो विसरघो, मधरा गावें गीतडली ।।१७८।

घरा-घरा सू टुरघा गैरिया, पूगें दूजो गावडली ।  
होळी रग मै दिख रगीज्या, गवरू टावर गोरडली ।।१७९।

दूर गाव सू आय साथिडा, नाच दिखाव घाकडली ।  
मूडो नाक घुघटिय ढकियो, देखें अकल आखडली ।।१८०।

१ होळिका मंगलते समय गाव के लोग आग की लपटो की झळ को देखते हैं यदि वह सीधी है तो सभी जगह जमाना होगा ।

गाव लुगाया भेली होजा, ऊभ्या दीम छातडली ।  
 मोकौ देख्या रग रेडद, हसती-हसती कामणली ॥181॥  
 भर पिचकारो देवर मारी, भीजी चोळी भावजडी ।  
 हरख किलोळा करती-करती, होळी खलं गोरडली ॥182॥  
 देवरियो मोकं न सोधे, भावज लुकजा ओरडली ।  
 ज भाभी जी हाथ आयजा, रगदै मूडौ नाकडली ॥183॥  
 भरी जवानी होळी आयी, घुघरू वाघ्या टागडली ।  
 लटका झटका नाच दिखावै, निरख ऊभी कामणनी ॥184॥  
 गळी गळी मै हुडदग करता, टाग्र हाका हाकडली ।  
 वृढा ठेरा रळका देता, नाचं धोचा गावडली ॥185॥  
 सिझ्या पड्या सू आय गरिया, वठं ऊची टीवन्ली ।  
 दूध भाग न पीता पीता, मीठी लेनै नोदडली ॥186॥  
 होळी लूरा घणी सुहाव, वठी गाव बीदणली ।  
 छोटै-छोटै गीता बीच, मनटी मोत्र सायटली ॥187॥  
 वेटीं होया सुगन मनाव, गाव घरा री रीतडली ।<sup>1</sup>  
 होळी माथे दूढ पीटदै ऊभा घर री वाखळडी ॥188॥  
 होळी रामा-सामा माथे, गावा हरखा कोडडली ।  
 अक दुज रै पगै लागता, घर-घर दीसै गावडली ॥189॥  
 नुवा गाभा पहर भाईडा, मिळल भर गळ-वाथडती ।  
 अक दुजै र जाय सासर, जीमै मीठी नाफसडो ॥190॥  
 जात-पात स्स भेली दीसै हाळी माथे गावडली ।  
 अक दुज रो मूडौ रगद, हस-हस करना वातडली ॥191॥

1 गह्ला बच्चा होने पर होली के त्यौहार पर दू पीटने का रिवाज है।  
 बच्चे के ऊपर एक लकड़ी को दोनों तरफ से पकड़ ली जाती है  
 तथा अन्य लोग उस पर डड बरसाते हैं।

## बादल बरसै

पछी पाख पसारघा बैठघा, चूचा भखलै पूनडली ।  
तीतर गूगा वणिया बैठघा, आमै कानी आखडली ।192।

छाळी<sup>1</sup> मूडी कियो पूनडो, डेडर चढजा वाडडली<sup>2</sup> ।  
विसघर<sup>3</sup> बड पर चढती दीसै, मेह वरससी घाकडली ।193।

कीडी कण असाढा नीनी, लाय न्हाखदै डेळकडी<sup>4</sup> ।  
करसी कहत्रै सुणलै गजवण, मेही आसी रातडली ।194।

ढळती रात मोरिया वोलै, बैठजा ऊपर खेजडली ।  
घटा-टोप वादळिया छाया, भरसी नाडा नाडडली ।195।

तीतर भरकी दिखै वादळी, आमै छाया घाकडली ।  
घरा-घरा मै वात हुवै है, आज पडेली छाटडली ।196।

भाख पाटता<sup>5</sup> गौघौ दडूकै, घाना भरसी घरतडली ।  
घर-घर सुगन मनाता दीसै, डोकर कहता वातडली ।197।

मोठ वाजरो चूले सीजे गुळ सू भीठी गूगडली<sup>6</sup> ।  
झिरमिरभिरभिर मेहो वरसै, कामण गाता गीतडली ।198।

खेजडलै री डाळा माय, हीड माडली गारडली ।  
सावण आया दिखै हीडत्या, नणदल भावज साथडली ।199।

ऊभी कामण हीडा हीडै, मचका देती टागडली ।  
हीडो चढती दिखै गगन मै, रुळ रुळ जावै जेवडली ।200।

1 बकरी 2 वाड 3 साप 4 सफेद दाणा 5 प्रात काल  
6 गूगरी (उबाला हुआ अनाज)

काग कबूतर द उडारा, ऊची दीमै चिलखडली ।  
 पाख पखेरू ओटी लेव पडता माटी छाटडली ।201।  
 काळि-कळायण दिखै उमडती, बरसै वादळ धाकडली ।  
 मोटी मोटी छाटघा हाख, हरसै घोरा धरतडली । 202।  
 घरा घरा सू भेळी हाजा गीत उगेर<sup>1</sup> सायडली ।  
 सावण महिण रात पडघा सू, मघरी गूजै तानडली<sup>2</sup> ।203।  
 वादळ छाया मेहु वरसावै, सावणियै री रातडली ।  
 ठडो-ठडो पून सूवावै, पलका छाई नीदडली ।204।  
 सावणिय रा लोर<sup>3</sup> आवता, घर-घर दीसै हरखडली ।  
 माचा डेला हाथा लीना, धरै मायन झूपडली ।205।  
 टापरियो<sup>4</sup> पाणी सू चूव<sup>5</sup>, झूपड उडजा आघडली ।  
 टावरिया नै साथै लीया, धार ढाळी माचडली ।206।  
 उमड घुमड वादळिया आव, मोरा मीठी बोलडली ।  
 पीव पीव बोली रै बीच दिख वरसती वादळडी ।207।  
 गुडका खाता वादळ दीस, आभै चमक बीजडली ।  
 काळा पीळा वादळ वरस्या, भरजा नाडा नाडडली ।208।  
 जण वादळी वरसण लाग नाच टावर-टीगरली ।  
 घरा-घरा मै हरख छायग्यो, स्स र मूडै हासडली ।209।  
 आभो<sup>6</sup> गाज धरती धूजै, भवका मार मेखडली<sup>7</sup> ।  
 साप सळेटा डरता भाजै, बीज<sup>8</sup> पडघा सू टीवडली ।210।  
 सावण महिणी घणो सवाव, घोरलिया री धरतडली ।  
 तनडो मनटो<sup>9</sup> ठडो करदै, पडजा फुवारा रेतडली ।211।

1 धुरू करना 2 तान 3 तेजी से आत बादल 4 मरान  
 5 टपकना 6 आकाश 7 बिजली 8 बिजली 9 तन और मन

काळी बदली घाकड बरसै, घोरा फाटै घरतडली ।  
 गिला घोरिया मन हरसावै, सोणी<sup>1</sup> लागै माटडली ।212।  
 सावण महिणै वादळ आवै, पाणी बरसै धारडली ।  
 अक घडी मै रेला-पेला, ठडी चालै पूनडली ।213।  
 पाणी खळकै च्यारुमेरा, नाळा बहवै घाकडली ।  
 गोडा-गोडा पाणी चालै, घास भरी है जोडडली<sup>2</sup> ।214।  
 बादळ गाज बीजळ चमक, विल मे बडजा सापणली<sup>3</sup> ।  
 जीव जिनावर ओटौ लेपै, कैर आकड खेजडली ।215।  
 खाय गुळाच्या वादळ आवै, साथै लीया आघडली ।  
 दिन दोफारा हुयौ अधारौ, घोरा उडता रेतडली ।216।  
 काळै नागा, कासी थाळा, वैरण दीम बीजडली ।  
 अडक कडक कर पडतो दीसै, देती दीसै मौतडली ।217।  
 तीन दिना री शडी लागिया, पडजा कच्ची टापडली ।  
 टप टप टोपा पडता दीसै, छेत्या माया भूपडली ।218।  
 वादळ गाज्या कुम्या निसर, साग बणावै भावजडी ।  
 चूल वैठी सोगर सेक, जाडी-जाडी रोटडली ।219।  
 कद छावली कद तावडौ, पडतां दीमै टोवडली ।  
 आपसरी मै रमता दीमै, घर-घर टावर टोगरली ।220।  
 च्यारुमेरा खट्या रूखडा<sup>4</sup>, वीच दीसै नाडडली ।  
 जीव जिनावर पाणी पीव, मटकी भरलै गोरडली ।221।  
 सावण महिण रळ मिळ वैठे, घरा घरा री कामणली ।  
 मघरा मघरा गीत गावती, भवर चितार<sup>5</sup> साथडली ।222।

1 मन भाने वाली 2 जोड (घास वा रक्षित मैदान) 3 साप  
 4 पड 5 याद करना

वादळिया सू आभो छायो, शीखा<sup>1</sup> वरसे बूदडली ।  
 सळा पडोडी माटी दीस, हरी भरी है खेजडली ।223।  
 हरघो पोमचो ओढघा वंठी, मरुधरा री टीवडली ।  
 शीण धूघट माटी मुळके ठडी करदे आसडली ।224।  
 सावण माता पूजन करले जद जावे घर लूवडली<sup>2</sup> ।  
 ठोव-पीज हळिय न साभ, फेरो दे आ खेतडली ।225।  
 वाड भनाती वरसा चाट्यो, वीज वीजवा<sup>3</sup> घरतडली ।  
 मतवाळो भतवार दिसे है, भातो लोया हाथडली ।226।  
 पहलो मेहो हळियो चाल, डूजे दीस घासडली ।  
 तीज मेहै घान खडघो है, भरसी साठी छाटडली ।227।  
 खेता बूझा घणा दिसे है, कसियो धाम्यो हाथडली ।  
 छोटा-मोटा रळमिळ वाडे<sup>4</sup>, सिणिया, झाडघा घासडली ।228।  
 सिखरा सूरज तपतो दीस, काम करे है धावडली ।  
 तेज तावडो आख्या काठे, काध बळजा चामडली ।229।  
 वाधे ऊपर हळियो धरियो, माधे ऊपर पागडली ।  
 छोटा मोटा खेता चाट्या, फाट्ये कुडत घोटडली ।230।  
 खेत बिचाळ करसी ऊभो, मो'री खीच साढडली ।  
 कोछा मारधा तेजो गाव, हळिया चाले घरतडली ।231।  
 चामास मै जेरू काटी<sup>5</sup>, पगा लिपटजा सापणली ।  
 काळी नाग फुफारा मारे, खेत खेत मै वाडडली<sup>6</sup> ।232।  
 साप सलेटा परडा मिलकर, रमता घाल रोहिटनी ।  
 डूचे<sup>7</sup> माथ करसो सूत्यो, सबडक लेन नोदडली ।233।

1 पानी का बहुत ही छोटी बूदे 2 लू 3 बोना 4 फाटना  
 5 साप बिच्छू 6 वाडो (छोटा साप) 7 खेत म बना हुआ  
 मचान जिस पर रात्रि म सोते हैं ।

रातू खेत किसारी करके, बाघल चरके खैजडली ।  
दिनडो दळता डेडर डरडे, दोफारा में टीटडली ।234।

खेत निदाणा वूजा बटजा,<sup>1</sup> डेरचा लागी घासडली ।  
घरा डागरा चरता दीस, लादचा लावें गाडडली ।235।

हरियाळी घरती पर छाई, खेता माडी भूपडली ।  
दिन में ऊभी खेत रुखाळ, सासर<sup>2</sup> घेरें रातडली ।236।

घरती मायें वेता फे्ली, आघ दिख नी डाडडली<sup>3</sup> ।  
मार फदाका<sup>4</sup> बेल बघावें, पूगें दूजी खेतडली ।237।

रास पिराणी<sup>5</sup> बेला रळगी, लूवा लडिया मोठडली ।  
ज्वार सुरगौ दिखें मोकळी<sup>6</sup>, बाजर ऊची सीटडली ।238।

खेता बीचें जग वासती, तापें बैठ्या हाथडली ।  
टागरिया नें घेरण चाल्यो, हाथा थाम्या डागडली<sup>7</sup> ।239।

आधी राता गोधी बटजा, हेला सुणलें खेतडली ।  
हेला हेला सुणती सुणती, दिखें छाडती सीबडली<sup>8</sup> ।240।

गाफणियो जद भाटी फकें, उडें पखेरू खेतडली ।  
गेता बीच अडवी दीस्या, डरती भाज लूकडली ।241।

चूट-चूटें लट लटके हे, ऊन्दर कुतरें पानडनी<sup>9</sup> ।  
झाली बहता दिखें खेत में, बाणी होजा काकडली ।242।

तिना-तेलियां दिखें चूसता, करवां चूसें बाजडली ।  
जण कातरां दिग लागती, पोदें<sup>10</sup> बेंठे खेतडली ।243।

पोळे रग री आभी दोसे, दळ-जळ आवें टिटुडली ।  
जद फाकलिया आन पडें है, सूनी वरदे खेतडली ।244।

- 1 घेत म अनुपयोगा पास शाबो आदि 2 जानवर 3 रास्ता  
4 बूदना 5 बेलों को हाकने की लकड़ी की दण्डिया 6 बहुत  
7 लकडा 8 घेत की सीमा 9 पान-पत्ता 10 उबड़ जाना



- मोर पाखंडी हाथा खीचै, घाकड बाजै भूकडली<sup>1</sup> ।  
 डरता-डरता सासर नाठ<sup>2</sup>, ऊची करिया पूछडली ।245।
- ऊच डूचै टावर ऊभी, दै फटकारा जेवडली ।  
 चिडी कमेडी उडती दीस, जद बाज है ताटडली ।246।
- आखी राता फिर भाजतौ, सासर घेरण खतडली ।  
 रातडली आख्या मै काट, दिन मै लेवै नीदडली ।247।
- खेता बीचा थाळी बाज, उडती दीसै चिडकडली ।  
 हाका करता टावर भाज, दाणा रहजा सीटडली ।248।
- आल मतीरा खुण्या<sup>3</sup> फाडलै, खुपरी लोनी हाथडली ।  
 खेजडल री छाया बठी, दिख जीमती गोरडली ।249।
- काकटिया बघारै कामण, खलर सूकै छातडली ।  
 काचरिया नै छोल सुकाया, वणती दीस काचडली ।250।
- चूला चाकी खेता लीना, टीवै माडी भूपडली ।  
 बाजरलै री गेटचा सेक, फळचा छमकल हाडडली ।251।
- सिटा मोरती खेता बठयो, तातू उडजा पूनडली ।  
 मीठा मीठा गुटका लेवै, दाणा चाब्या दातडली ।252।
- सिणिया माथी जोडचा ऊभा, आक खडचा है टीबडली ।  
 हरी टास हरियाळी दीस, पग पग ऊभी खीपडली ।253।
- काटी बेकर पग म चुभजा, तिणखै चुभजा आखडली ।  
 भूरटियै री काटा लाग्या, बठ काडलै गारडली ।254।
- हाथ आगळचा लीरचा वाधी, मोठ पाडलै बहवडली ।  
 कमर झुकोडी गजवण दीसै, चूड या भणक हाथडली ।255।

1 भूकण (किसी बरतन के मुख पर खाल मड कर बीच में मोर पल को डालकर खीचने पर आवाज होती है) 2 दौडना 3 कुहनी

## भणत

ल्हास<sup>1</sup> बोलवा चाल्या भाई, घर-घर गवरु गावडली ।  
भरी दुपारी हाथ रुक नी, काम करै है धाकडली ।256।

दोफारा म जीमण जीमचा, गैळ छायजा आखडली ।  
ल्हासिया नै चतन- राखण, भणता ऊची गीतडली ।257।

जात पात स्स भेळी होजा, ल्हास वोलिया खेतडली ।  
साथै-साथै भणता वोलै, साथै जीमै रोटडली ।258।

अगवी<sup>3</sup> वणियाँ मधरो गावै, घूघर वाजै हाथडली ।  
सगळा मिलकर टेरा<sup>4</sup> देवै, गूजै खेता गीतडली ।259।

लटका करती भणता वोल, निरखै घर री गोरडली ।  
मीठी मीठी बोल भाइडा, वीचा चाल वालडली<sup>5</sup> ।260।

गाडी ढाळ<sup>6</sup> तोडै मोठिया, पटती दीसै हाथडली ।  
सूनौ-मूनौ खेत दीस है, हुई अडोळी रोहिडली ।261।

खेता माथ टूट ल्हासिया, काम करै है धाकडली ।  
मोठा मूगा नेणा ऊचा, डेरचा लागी धरतडली ।262।

गाव ठाकरा ल्हास वोलिया, सगळा खोदै नाडडली ।  
आप आप री पात्या वाटचा, सोदै न्हाखै माटडली ।263।

घुणी माथ भेळा हाजा, पूछै डोकर वातडली ।  
किण किण भाई काम करचौ है, मूडै बोला साचडली? ।264।

1 खेत काटना 2 सचेत 3 सबसे आगे 4 गाने म ऊँचा  
स्वर 5 बोली 6 घुटना झुकाकर जमीन से लगाना 7 सच सच

ढाणी सामै ढेरघा लागी, दिखै सूकती पानडली ।  
 ऊड साड ऊपर राख, तिल भडकावण सीटडली ।265।  
 वाजरिय सीटा न राखण, खेता दीस करहुली ।  
 कोडा-कीडी ऊदर फिरलै, नीचै वाळू धरतडली ।266।  
 हाथ छाजलौ लीया ऊभी, घान उफाण वहवडली ।  
 घान फळगटी यारी यारी, ढेरघा लागी सेतडली ।267।  
 धोमी पून घान नी उफणै, बठयी भाई रोहिडली\* ।  
 काळा पडता दिखै दाणिया, वादळ नास्या छाटडली ।268।  
 खेत खळा पर भाडू दीनी, घान बचै नी घासडली ।  
 गाडघा लादघा घर मै लावै, भर-भर टोकी छाटडली ।269।  
 घान नैणकी टोकी लागी, ऊभी कूटै ढागडली ।  
 गुणौ मोठिया यारा यारा, भरती दीस बोरडली ।270।  
 घान राखबा ठाव वणाव, पाया ऊची कोठडली ।  
 ऊदर नीचै रमता घाल, बिल दीसै नी छेतडली ।271।  
 घरा घान रुखालण सारू बोरया चिणदै भपडली ।  
 पून तावटी दोनू लागै, घुण मार है राखडली ।272।  
 कोठा भरिया घान दिख है, सुख सू लेयै नोदडली ।  
 धर-धर वैठया करै हथाया, पीता चिलम तत्राकूटी ।273।  
 खेत लाट जद घरा आयजा, घावै घापै गोरडनी ।  
 तीज तिवारा घूम मचाव, घूघर घमक घाकडली ।274।  
 भाईडा ससै साथै रहवै, सम्पत दीस गावडली ।  
 अेक दुज रौ काम किया बिन, ना लाटीज खेतडली ।275।

\* धीरे धीरे हवा चलने से अनाज व चारा अलग-अलग नहीं होता है ।  
 इस समय वर्षा की बूँदें गिर जाती हैं तो अनाज काला पड जाता है ।

## घास-पात

ठोड-ठोड पर ऊभो दीसँ धोमण घास रोहिडली ।  
राता माता दिख डागरा, दूधा भरद चाडडली ।276।

सिरकनिया<sup>1</sup> है दीसँ मोकळी, धरती फँली साटडली ।  
भेडा बकरचा चरती दीस, कवळी कवळी पानडली ।277।

कडकी धाकड रोहो फँली, पग-पग दीसँ सोनडली ।  
दूधोली नै चरै डागरा, ऊभा ऊपर टीबडली ।278।

बसूदा धरती पर छायो, बेकर चरलै साडडली ।  
गाया भसा रळ मिळ चरल, ऊची ऊभी सेवणली ।279।

वूर घास लहरावै खेता, ऊची धोळी सीटडली ।  
आगणियँ मै भाडू देव, गाव घरा मै वहवडली ।280।

हरै घास नै दिखै तोडती, भारी लावै गोरडली ।  
दुचाबडी नै चरती दीसँ, घर घर बकरचा गावडली ।281।

बोरडली<sup>2</sup> रा पत्ता भाडचा, पाली न्हाखै ओरडली ।  
ठाणा<sup>3</sup> माथै चरती दीसँ, घर-घर गाया भसडली ।282।

पग-पग भूरट ऊभो दीसँ, चोमासँ मै धरतडली ।  
सासरिया रँ मोजा बणगी, चरती दीसँ गावडली ।283।

कूतर करती दिख भाडबड<sup>4</sup>, कडबी सेवण घासडली ।  
डागरा न दिख नीरती<sup>5</sup> गाव घरा री बाखळडी । 284।

1 मूज 2 काटेदार झाडी 3 गाय भँस के चरने का स्थान

4 जवार बाजरे के सीट के नीचले भाग तथा सेवण घास को काट कर गायो के चरने योग्य बनाने का औजार 5 डालना

## तळ-तळाव

- साभ पडचा पाणी भरवा नै, हिळ मिळ चाल कामणली ।  
घडियो माथ उम छम चाल, गीत उगेर<sup>1</sup> साथडली । 285।
- साठ पुरस री कुची खोदियो, दूर नाखदी माटडली ।  
ऊड तळ<sup>2</sup> म पाणी दीस, पीव सगळी गावडली । 286।
- ऊट वळघिया वारी खीच, पाणी वेव चाठडली ।  
खाली घडिया भर घडाई, भरती दीस कूडडली । 287।
- मुणता पाण कीलियो हेली, पडतो दीस लावडली<sup>3</sup> ।  
गरणाट पर चढयो भूणियो, सारण उडजा रेतडली । 288।
- खाल भसरा साळू भेळा, लाव गूधल साथडली ।  
भरघो वारियो खीच्या लाव, हळवै हळवै साठडली । 289।
- लाव टूटिया वारी पटजा, टकरा खाती भीतडली ।  
गीत गावती तळ म उतरै, झात्या बठघी जेवडली । 290।
- मटकी माथै हाथ वालटी, कूवै पूगी गोरडली ।  
होळ-होळ दिख खीचती, थाम जेवडी हाथडली । 291।
- सारण-ढाळ दिग्न कूवै पर, सोरी चाल टोडडली ।  
पो लेवती<sup>4</sup> दिख भाईडी, राकट रिपिया घेतडली । 292।
- कूव छतडचा<sup>5</sup> दिख गगन म, घटती दीस हाथडली ।  
दोफारा म वैठचा दीस, जीव जिनावर छावडली<sup>6</sup> । 293।

1 घुरू करना 2 कुर्जा 3 लाव 4 कुएँ से पानी निकालने वाला वर जो लेता है उसे पी लेना कहते हैं । 5 गेलावटी क्षेत्र म सभी कुओ पर छतरिया दिखाई देती है । 6 छाया

भरियो घडियो दिखै लावती, माथे ऊपर गोरडली ।  
गजगामणिया<sup>1</sup> दिख चालती, हस चाल सू कामणली ।294।

दिन भर घुटती गजवण बठी, कथ घरा नी गावडली ।  
सिखरा सूरज कणै टळेली, कामण जोवै घाटडली ।295।

साभूपडघा पाणी न चारी, जी विलमावण भरवणली ।  
घटयो साम्या घर सू निकळी, हेला देती साथडली ।296।

कूवै पाणी भरवा आई, घरा घरा री वीदणली<sup>2</sup> ।  
परदेसा मै साथर बठया, करत्या दीमै वातडली ।297।

गाव किनारै तळ दीसै है, पाणी दीमै वूडडली ।  
मटकी ऊच्या वहवड चानी, हस-हस करती वातडली ।298।

मिळणी जुळणी वूवा माथे, करै हयाया साथडली ।  
व्याव सगाई ओसर मौसर करती दीमै वातडली ।299।

जीव जिनावर पाणी पीवै गाव तळावा घाटडली ।  
साफ सूधरी पालर पाणी, भरती दीसै मटकटली ।300।

भगवन ध्याता भजन गावता, तळ खादै है घरतडली ।  
मीठी पाणी दिखै निकळती, स्स रै मूडै हासडली ।301।

ताल तळाया दिखै खोदता, वार हाखदै माटडली ।  
चोमासै मै मेहौ वरस्या, भरती दीसै नाडडली ।302।

आगोरा सू पाणी खळकै भरती दीसै भोलडली ।  
पाख पखेरू उडता आव, पाणी पीवै चाचडली ।303।

गधिया ढाचा लादघा लाव, भर भर पाणी मटकडली ।  
चोघड लाती दिखै साथिडो, घरिया ऊपर साढडली ।304।

1 हथनी की चाल से (हाथी हथनी पजों पर चलते हैं जिससे जब वे चलत हैं तो सारा शरीर झूमता हुआ लगता है) 2 कुआ गाव की औरतों के कलब वा काम करता है ।

## आसोज

हरघा खेतडा मन बिलमावै, ज्यू सूवै री पाखडली ।  
साफ सूथरै आभ मायै, ओस पड है धाकडली । 305।

भूख भागणौ तीस बुझाणौ, दिख मतीरौ खेतडली ।  
अथरी पथरी बहती दीयै, पाणी पीया आलडली । 306।

खेत कामडी अग चग लाग्यौ, सुख सू लेव नीदडली ।  
जीव अधारा खती म्हारी, अन धन भरसी चाडडली । 307।

खेत लावणी करती वेळा, अकौ दीसै गावडली ।  
धारी म्हारी बात रही नी, घर री समझै खेतडली । 308।

भाईडा स्म रळ-मिळ बठे, रोटी पुरस मावडली ।  
दूध दहौ रा जीमण जीम, बठघा सबड रावडली । 309।

काकड मतीरा<sup>1</sup> दिख मोकळा<sup>2</sup>, तुम्बा पग-पग टोबडली ।  
मिनख लुगाई दोनू जीमै, डागर धणगो मौजडली<sup>3</sup> । 310।

हरघौ साग है दिखै मोकळौ, ग्वार फळी भर मोठडली ।  
वाजरलै री रोटघा चूरै, वैठघौ खेता भूपडली । 311।

दिनडौ ढळता घरा आयजा, हाडी सीजै खीचडली ।  
मिरिया-मिरिया<sup>4</sup> घीव घालती, पुरसै मावड गावडली । 312।

लाल बोरिया मीठा लागै, पग पग ऊभी बोरडली ।  
दैं घघूणी<sup>5</sup> दिख भाडतौ, ऊभौ बीचा रोहिडली<sup>6</sup> । 313।

1 ककडी मतीरे 2 अधिक 3 आनन्द 4 बडा चम्मच  
5 जोर से हिलाना 6 जगल

रात बिराता खेत रुखाळ, बेठचो ऊपर टीवडली ।  
 हिरण्या किरत्या<sup>1</sup> दिखै गगन मँ, टेम देखलै आगडली ।314।  
 कँर सागरी साग भोकळो, दिखै तोडती गोरडली ।  
 विखरघा खोखा बकरी चरलै, ऊमी नीचै खेजडली ।315।  
 भूरट काटो पग-पग विखर्यो, लडिया लूवा धोतडनी ।  
 हीरा-मोती जडी दिखै है, गोरडली री चूदडली ।316।  
 ठमकी मारघा ठम-ठम बोलै, पाकी दोसँ आलडली ।  
 गुढ सिरोडो पडचो मतीरो, तातू बळिया बेलडली ।317।  
 गोधलियो खेता म बडजा, गवरू पकडै पूछडनी ।  
 दे फटकारो हेठे न्हाखै, दिखै चाटती रेतडती ।318।  
 हरियँ-हरियँ खेता दीस, बाजर ऊची सोटडली ।  
 काचर घणा टीडसी दीस, फळचा भरोडी मोटडली ।319।  
 आसोजा मँ मोती निपजै वादळ नाख्या छाटडली ।  
 हरियाळी खेता मँ दीस, घान हुवेलो घाकडली ।320।  
 हाथ पगा मँ बळता भळता भूरट लाग्या वाटडली ।  
 हाथा सू काटलिया चुगलै, सिळिया चुगलै चीपडली ।321।  
 बिन वरस्या सू सावण जावै, डबकी पडजा जीवडली ।  
 देवि देवता घ्याता दीस मिनख लुगाई गावडली ।322।  
 जण हिरणियो डावँ आव, सुगना माडी वातडली ।  
 ऊणा टूणा करती दीस, गाव घरा मँ साघडली ।323।  
 काचर-बोर मतीरा मीठा, हुया दियाळी गावडली ।  
 दीया दीठचा घान पकै है, घर-घर मुणलै वातडली ।324।

1 तारो के नाम(तीन तारे लगातार दिखाई देते हैं उसे हिरणघा कहते हैं । छ तारो के झूमके को किरत्या कहते हैं ।)



## दियाळी

अेरु वाटी आटी लेव, देण दियाळी गावडली ।  
डरता-डरता बिल मँ बडजा, सूनी दीस रोहिडली ।325।

दिया दियाळी जगता दोस्या, दिख तोडता माठडली ।  
खत लाट कर घर म आव, घान लादिया गाडडली ।326।

घर आगणियो झाड झडवं लीप पोत गोरडली ।  
वही चोपडा पूजा करता, परख<sup>1</sup> हाथा रोकडली<sup>2</sup> ।327।

घनतेरस न वरतन लेवा, गजवण पूग हाटडली ।  
ठोड-ठोट पर सजी दुकाना, थाळी लेवे कामणली ।328।

म्हैल माळिया लिया मखाणा, फूल्या वाघी गाठडली ।  
गाव घरा न नाटो<sup>3</sup> जाव, काध लीया पोडडली ।329।

तेल वाती दीस भोजती, सज्या दीवटा भोतडली ।  
तूळी लाग्या जगता दीस, घरा-घरा रो छातडली ।330।

भिलमिल भिलमिल कर दीवटा, घीमी चालपूनडली ।  
सोनल<sup>4</sup> घोरा दिख घानण<sup>5</sup>, दमक-चमक रेतडली ।331।

गणा गाभा पहरी ऊभी, दिख गवरजा मूमलडी ।  
चणक मणक<sup>6</sup> अग अग मँ दीस, झणक चूडघा हाथडली ।332।

लिछमी पूजन लिछमी चाली, लिया आरती गारडली ।  
घ न घान सू माटा भरिया, परख नगदी रोकडली ।333।

1, देवना 2 घनरासी 3 दीडता 4 गुनहरे रणके  
5 उजाला 6 चचलता

सास खैरता घर घर दीसै, बैठ्या ऊपर जाजडली ।  
 हार जीन नै भूल्या बिसरघा, सुगन मनावै सायडली 1334।  
 रातडली मै छुट अनारा, फूल भडै है टीबडनी ।  
 च्यारू मेरा दिख बिखरता, हीरा मोती रेतडती 1335।  
 तूळी लाग्या तीर छटजा, दिखै गिगन मै आगडली ।  
 भूल्यो भटवयो घर पर पडजा, जगती दीसै भूपडली 1336।  
 आटा खातो साप वणै है, फण फैल्यो है धाकडली ।  
 हसता-हसता टावर देख, ऊमा साथै भावडली 1337।  
 अेक बरस सू आइ दियाळो, घर-घर छायी हरखडली ।  
 पुरख लुगाई पूजा करता, मागै सोनी चादडली 1338।  
 जगती लडन दिखै हासता, खाली लीया मटकडनी ।  
 पट्टाका री पड पड चाल, देख टावर आखडली 1339।  
 पूजा-पाठ सू निपट साथी, पूगै ऊची टीबडली ।  
 घम्माका रा उठै घमोडा, घूजै बाळ् धरतडली 1340।  
 छट्या सोर मरै कीटाणू, सुख सू लेव सासडली ।  
 साफ सूयरी पून चालिया, रोग दिख नी गावडनी 1341।  
 अभावस री रात अघारी, तारा गिणल आखडली ।  
 सीयाळै री भलक देखल, सूती माच गोरडली 1342।  
 घर घर जीमण होती दीसै, दिख सीजती नाफसडी ।  
 गणा गाना पहर कामणी, बाटै घर-घर सायडली 1343।  
 नीयाळी री उछव मोकळी, बट मिठाई गावडली ।  
 मिलता बोल रामा-सामा, स्स र मूड हासडली 1344।

1 पटावे छाडने पर घुआ उठता है उससे वायु मण्डल म रोग  
 फलान वाले कीटाणु मर जात हैं ।

## ब्याव-सावा

मौरत निकळचा ब्याव हुय है, घर-घर गावा गीतडली ।  
इणती गिणती आवै कोनो, दिन गिणाव गडडली १३४५।

ब्याव तिथी न मुकर करचा सू, दिखै बाघता गाठडली ।  
हळदी गाठियौ मोळी बाघ्यौ, माळा टागी भीतडली १३४६।

विघन विनायक आय विराज, ब्याव रचावै साथडली ।  
विन गणेशजी काम सरै नी, गीत लडाव मावडली १३४७।

ब्याव टाकलै गीत गायवा घर सू आवै बहवडली ।  
मघरा मघरा गीत गावती, घर घर दीस गोरडली १३४८।

हरिया मूग विखेरण रीता ब्याव मडघा स गावडली ।  
मोठ म्ग न चुगती चुगती, गीत उगेर बहवडली १३४९।

ब्याव घरा रौ ठा पडजाव, मीठी बाज्या ढीनवडी ।  
मघरी मघरी डूमण गाव, ऊची खीच तानडती १३५०।

घुटा-बडरा वाता पक्की, पोथी जोसी हाथडली ।  
घर- घर पीळा चावळ बटजा, कुटम कबील ह्गखडती १३५१।

वान वैठियौ वनडी दीस, बाधी पीळी पागडली ।  
चमकी भाला दिखै चमकती, हाथा लीनी गैडडली १३५२।

हाथ काम लेता र साथै, पीठी मसळ साथडली ।  
मूड ऊपर लाली छायी, गोरी दीस चामडली १३५३।

१ पुराने समय म गाव के लागे को पूरी गिनती नहीं आती थी, दूल्हा दूल्हन छडिया को उठा कर एक कोने से दूसरे कोने म रख कर दिनों की गिनती करते थे ।

## भात-भरै

- व्याव टाकलै भाई नेतण, पीवर पूगे वैनडली ।  
विना भात रै व्याव अघूरी, वनड आसू आखडली ।354।
- गाव घरा सू छाटयी भाई, ओढण लादो गाडडली ।  
बुढा बडेरा भाई बधू, भात भर स्स गावडली ।355।
- गाडधा माथै बठ लुगाया, वोरा लादचा साडडली ।  
वीर मायरी घाकड नायी, वैनड मूडै हासटली ।356।
- ओरण बीच आय बिराज, भाई वैनड मावडली ।  
थाळ सजाया हाया लीना, पूगे आगण धीवडनी ।357।
- दादा काका नाना मामा, माथ बाघी पागडनी ।  
गाजा वाजा भर मायरी, हाथा नीया चूदडनी ।358।
- कुटम कवीली भेल्लो होजा, वैनड ऊपर जाजमडी ।  
वनड ऊभी भाई टीकै, नणदल गाव गीतटनी ।359।
- बोक्षा मरतो वनड ऊभी माथ गुळ री भेलटली ।  
गीता हेली वन सुणावै, वीरी समझै वातडली ।360।
- भात भरचा स् रिपिया वरम दिखै मोकळी रोकडली ।  
गाव लुगाया दिखै गावती, मधरी मधरी गीतडली ।361।
- ज भाई री भात चूकजा, सासू भारै तानडली ।  
ओ कलक धोया नी धूपै, भाई समझै वातडनी ।362।
- वैन घरा सू हुवै विदाई, लादी भाया गाडडली ।  
घरा आगण ऊभा ऊभा, फेरै माथै हाथडली ।363।

## ब्याव-सावा

- मौरत निकलघा ब्याव हुवै है, घर घर गावा गीतडली ।  
 इणती गिनती आवै कोनो, दिन गिणावै गैडडली 1345।
- ब्याव तिथी नै मुकर करघा सू, दिख बाघता गाठडली ।  
 हळदी गाठियो मोळी बाघ्यो, भाळा टागी भीतडली 1346।
- विघन विनायक जाय विराज, ब्याव रचावै साथडली ।  
 विन गणेशजी काम सर नी गीत लडावै मावडली 1347।
- ब्याव टाकलै गीत गायवा, घर सू आवै बहवडली ।  
 मघरा मघरा गीत गावती, घर-घर दीसै गोरडली 1348।
- हरिया मूग बिभेरण रीता ब्याव मडघा सू गावटनी ।  
 मोठ मूग न चुगती-चुगती, गीत उगेर बहवडनी 1349।
- ब्याव घरा गै ठा पडजावै, मीठी बाज्या डोनवडी ।  
 मघरो मघरो डूमण गाव, ऊची खीचै तानडली 1350।
- बुढा बडरा वाता पक्की पोथी जोसी हाथडली ।  
 घर- घर पीळा चावळ बटजा, कुटम कवीलै हरणडनी 1351।
- वान वैठियो वनडी दीस, बाघी पीळी पागडली ।  
 चमकी भाला दिखै चमकती, हाथा लीनी गैडडली 1352।
- हाथ काम लेता र साथ, पीठी मसळै साथडली ।  
 मूडै ऊपर लाली छापी, गोरी दीम चामटनी 1353।

1 पुराने समय म गाव के लागों का पूरो गिनती नहीं आती थी  
 दूल्हा-दूल्हन छडिया को उठा कर एक कोने से दूसरे कोने म रख कर  
 दिनों की गिनती करते थे ।

तीरण ढूँक्या कामण फक्के, भर-भर दाणा मूठडली ।  
वीद साथिडा गमछी ताणे, ऊभा ऊची घरतडली ।375।

तीरण आया हुवे आरती, दिया सजाया गोरडली ।  
सासू ऊभी नापै-जोस, हाथा थाम्या डोरडली ।376।

टीकी काढे ऊभी सासू, थाळी लीया हाथडली ।  
भिलमिलझिलमिल करे आरती, कामणगारी भावजडी ।377।

कवर-कलेवी जणे हुवे है घर मै गावे गीतडली ।  
वीच थाळ रे कवी उठारै, बैठयी वनडा जाजमडी ।378।

ताना देतो दिखे लुगाया, मधरी गाती गीतडली ।  
भूडा जानी लायो लाडल, मूडे कहती वातडली ।379।

काणा जानी लाया लाडल, किस विद करसी वातडली ।  
आघा जानी लाया लाडल, चुपके वैठा जाजमडी ।380।

सोटा जानी लायो लाडल, किस विद करसी वातडली ।  
लूला जानी लायो लाडल, चुपके वठी जाजमडी ।381।

ठिंगणा जानी लायो लाडल, किस विद करसी वातडली ।  
बूडा जानी लायो लाडल, चुपके वैठी जाजमडी ।382।

पहली जीमण घीव खीचडी, ऊपर रेडी साकरडी<sup>1</sup> ।  
हाथ सवडका देतो जीमै, वठघौ ऊपर जाजमडी ।383।

थाळ परूस्या जीमण वठे, गजवण गावे गीतडली ।  
गीत गावती जान वाघ दे, जाया रोकी हाथडली ।384।

ऊभी भाई जान छुडारै, साख्या दोले धाकटली ।  
ऊक चूक मूडे पर आता, कवी देयदे लाफसडी ।385।

1 गावो मे गाती पर पहला जीमण खीचडी का दिया जाता था। देखी धी से थाळी भरदी जाती थी फिर खीचडी को मिला कर अधिक से अधिक धी खिलाया जाता था ।

- वनड रै माथै न घोवै, मामी लीया छछडली ।  
पाट माथ वठघौ न्हावै, भावज गावै गीतडली ।364।
- वीद वणाव ऊभी भावज, काजळ घालै आसडली ।  
निजर वचावण सातर माड, मूढे काळी टीकडली ।365।
- वीद राज वण ठण नै वैठघा, माथ वाध्या पागडली ।  
हीरा कटी पळका मार, लावी पहरी अचकणली ।366।
- फीडी<sup>1</sup> जती वनठ पहरी, सलमा तारा डोरडली ।  
वीद पगलिया घरती चाल हाळें होळ टागडली ।367।
- फूल-गुलावी दिखै कमरबध, भीणी मलमल ओढणली ।  
माय घाल नारेल वाध दै, घर-घर गावा भावजडो ।368।
- वनडी घोड चढियो चालै वाजा वाज धाकडली ।  
गीत गावता धूम मचादै, मावड भावज वनडली ।369।
- छैल छीला जाना जावै घर मै रहजा वहवडली ।  
अक दुज सू व्याव रचाव, रम टूटियो<sup>2</sup> साथडनी ।370।
- सामी जान चट भाईडा, करजा सवारी साढटली ।  
जाया साथै आता क्षिखै, पड जानी भी गावडली ।371।
- वार गाव सू आया जानी, वठें ऊपर जाजमटी ।  
होका चिनमा गोट उठ है, अमल गळ है वाकडली ।372।
- माढी पगा तणा खडचा है, हस हम करता वातडली ।  
आव भगत मै कमी दिखै नी, चरती दीमै साढटनी ।373।
- चदन लकडी तौरण दीमै, वाधयो ऊची भीतडली ।  
जग मोत्या री थाळ सजाया, सासू लीना हाथडली ।374।

1 वगर एडी के 2 बारात जाने के पश्चात दूल्हे के घर पर औरता द्वारा आपस में रचा जाने वाला नकली विवाह ।

तीरण हूवया कामण फव, भर-भर दाणा मूठडली ।  
वीद साथिडा गमछा ताण, ऊभा ऊची धरतडली ।375।

तीरण आया हूव आरती, दिया सजाया गोरडली ।  
सासू ऊमी नाप-जोखे, हाथा थाम्या डोरडली ।376।

टीवी काढ ऊमी सामू, घाळी लीया हाथडली ।  
फिनमिलझिलमिल करे आरती, कामणगारी भावजडी ।377।

कवर-कलेवो जणे हूवे हे, घर म गावे गीतडली ।  
वोच थाळ रे कवी उठावे, वंठची वनडां जाजमडी ।378।

ताना देती दिखे लुगाया, मघरी गाती गीतडली ।  
भूडा जानो लायी लाडल, मूडे कहती वातडली ।379।

काणा जानो लाया लाडल, किस विद करसी वातडली ।  
आधा जानो नाया लाडल, चुपवे वंठा जाजमडी ।380।

खाडा जानो लाया लाडल, किस विद करसी वातडली ।  
लूता जानो लायी लाडल, चुपवे वंठां जाजमडी ।381।

ठिंगणा जानो लायी लाडल, किस विद-धरसी वातडली ।  
बूडा जानो लायी लाडल, चुपक वंठां जाजमडी ।382।

पहलो जीमण घोव खोचडी, ऊपर रेडो साकरडी<sup>1</sup> ।  
हाथ सपडवा देतो जीम, वंठघी ऊपर जाजमडी ।383।

थाळ परूस्या जीमण बठे, गजवण गाव गीतडली ।  
गीत गावती जान वाघ दे, जाया रोकी हाथडली ।384।

ऊमी भाई जान छुडावे, साख्या वोले घाकडनी ।  
ऊन-चूव मूरे पर आता, कवी देयदे नाफसडी ।385।

1 गावा म गाणे पर पहला जीमण खाचडी का दिया जाता था। देती घो से घाळी भरदो जाती घो फिर खोचडी का मिला कर अधिद से अधिद घो बिलावा जाता था ।



वनड रे माये न घोवै, मामी लीया छछडली ।  
पाट माथ बठचौ हावै, भावज गाव गीतडली ।364।

वीद वणाव ऊभी भावज, फाजळ घाल आखडली ।  
निजर वचावण सातर माड, मूड काळी टीकडली ।365।

वीद राज वण ठण नै वैठघा, माये वाध्या पागडली ।  
हीरा कटी पळका मार, लायी पहरी अचवणली ।366।

फोडी<sup>1</sup> जूती वनड पहरी, सलमा तारा डोरडली ।  
वीद पगलिया धरती चाल, होळ होळें टागडली ।367।

फूल-गुलावी दिव कमरवध, भीणी मलमल ओढणली ।  
माय घाल नारेल वाध द, घर घर गावा भावजडी ।368।

वनडी घोडै चढियौ चालें वाजा वाज धाकडली ।  
गीत गावता धूम मचादे, मावड भावज वैनडली ।369।

छल छवीला जाना जाव, घर मै रहजा बहवडली ।  
अक् हुज सू व्याव रचाव, रमै टूटियौ सायडनी ।370।

सामी जान चढ भाईडा, करवा सवारी साढडली ।  
जाया साथै आता दीखै, पड जानी भी गावडली ।371।

वार गाव सू आया जानी, बठ ऊपर जाजमडी ।  
होवा चिलमा गोठ उठ है, अमल गळ है धाकडली ।372।

माडी पगा तथा सडधा, है, हस हम करता वातडली ।  
आव भगत मै कमी दिखै नी, चरती दीस साढउती ।373।

चदन तकटी तौरण दीसै, वाधयो ऊची भीतडली ।  
जग मोत्या रौ थाळ सजाया, सामू लीनी हाथडली ।374।

---

1 बगर एही के 2 बारात जाने के पश्चात दूल्हे के घर पर औरतो द्वारा आपस में रचा जाने वाला नकली विवाह ।

तोरण ठूक्या कामण फक्के, भर-भर दाणा मूठडली ।  
वीद सायिडा गमछीं ताणें, ऊभा ऊची धरतडली ।375।

तोरण आया हुवें आरती, दिया सजाया गोरडली ।  
सासू ऊभी नाप-जोसै, हाथा थाम्या डोरडली ।376।

टीकी काढे ऊभी सामू, थाळी लीया हाथडली ।  
भिलमिलझिलमिल करे आरती, कामणगारी भावजडी ।377।

कवर-कलेवां जण हुव है घर में गावें गीतडली ।  
वीच थाळ रें कनी उठावें, बैठघीं वनडी जाजमटी ।378।

ताना देती दिवें लुगाया, मधरी गाती गीतडली ।  
भूडा जानी लायी लाडल, मूडें कहती वातडली ।379।

काणा जानी लाया लाडल, किस विद करसी वातडली ।  
आधा जानी लायीं लाडल, चुपकें बैठे जाजमटी ।380।

खोडा जानी लाया लाडल, किस विद करसी वातडली ।  
लूला जानी लायीं लाडल, चुपकें बैठे जाजमडी ।381।

ठिंगणा जानी लायीं लाडल, किस विद-करसी वातडली ।  
बूडा जानी लायीं लाडल, चुपकें बैठे जाजमडी ।382।

पहली जीमण घोव खीचडी, ऊपर रेडी साकरडी<sup>1</sup> ।  
हाथ सत्रडका देती जीमं, बैठघीं ऊपर जाजमडी ।383।

थाळ परूस्या जीमण वठे, गजवण गाव गीतडली ।  
गीत गावती जान धाघ दे, जाया रीकी हाथडली ।384।

ऊभी भाई जान छुडावें, साम्या वोलें धाकडली ।  
ऊक चूक मूडे पर आता, कवा देयदे नाफसडी ।385।

1 गावों में गानी पर पहला जीमण खीचडी का दिया जाता था। देखी धी से थाळी भरदी जाती थी फिर खीचडी को मिला कर अधिक से अधिक धी बिलाया जाता था ।

- आपसरी मै क्वा देवता, हस-हस करल वातडली ।  
मनवारा सू जीमण जोमै, सगा गनायत गावडली ।386।
- व्याव रचावण आया जानी, वैठ्या माचें वासळडी ।  
चार दिना तक जीमण जोमै, जूनी गावा रीतडली ।387।
- चवरी म फेरलिया खात्र, वीद वीदणी रातडली ।  
आसै-पासै भीड मोकळी, दिखें लुगामा धाकडली ।388।
- हथळेर हाथ मै मेहदी, फेरा खाव वीदणली ।  
टावरिया रा व्याव हुव है, देखें वावल मावडली ।389।
- अगनी सामै सोगन खात्रे, कदै न छाडू साथडली ।  
मरणा जीणौ साथ साथणी, दिख धामती हाथडली ।390।
- वनटी वनटी जूवो खेल, बीटी गुमजा छाछडली ।  
लाटल बीटी भट जी लेव, साळ्या मूडें हासडली ।391।
- जानीवामें पूग साथिडा, बठ ऊपर जाजमडी ।  
मधरी-मधरी डमण गाव, रिपिया बरसै धाकडली ।392।
- जानी वास गीत गावती, धूम मचाद गोरडली ।  
पान-सुपारी बटै मावळी, खारक बटजा भूठडली ।393।
- सगा सोई नै सीख देवता, मिळें गळा भर बाथडली ।  
मूठ्या भर-भर उडै गुलाला, रगा रगीज हाथडली ।394।
- जान विदाई करवा खातिर, ऊभा साथी साथडली ।  
टावर टीगर रेला पेला, मधरी बाज डोलकडी ।395।
- ऊटा पडची घरता दीस, कस्या पलाणा साडडली ।  
अेक दुज सू विदा होवता, हस हस करलै वातडली ।396।
- ऊट कतारा दिखें जावती, ऊचै घोर टीवडला ।  
मधरी-मधरी डौली गावै वैठची ऊपर साडडली ।397।

## हुवै विदाई

दूर देस में भयौ सासरो, वेटी छोड गावडली ।  
वावल माथे हाथ फेरता, आसू ढळके आखडली ।398।

काका मामा दियो दिलासौ, मूडे आधी वातडली ।  
आसूडा गाला पर छाया, भाई भीची दातडली ।399।

भोळी चिडकल गूगी बणगी, ना निसरै है वातडली ।  
खानी-पीणी स्ता विसरायी, गुम-सुम वठी सोनडली ।400।

आसूडा री मेहा वरसै, मूडे डुसका हिचकडली ।  
मधरा मधरा पगल्या धरती, फळसी लार्थे कोयलडी ।401।

गळनाथडली घाल्या चाली, फळसे ताई साथडली ।  
साथणक्या री साथ छूटग्या, याद आवसी बेनडली ।402।

जामण री काळजिया फाटे, आगण छोडचा धीवडली ।  
आसूडा रा वाळा बहवै, भीजी कुडती चूदडली ।403।

गाव लुगाया भेळी होजा, मधरी गाव ओळूडी ।  
चिडकल मुड-मुड धरन देखै, घुडली घेर साडडली ।404।

गाव घरा पर दिख उदासी, विदा हुवै जद वटडली ।  
छोटा मोटा स्से रोव है, घर में ढीक बाछडली ।405।

भाई बहन री ध्यान राखी, नीरो म्हारी गावडली ।  
घोरलिया री सोन चिडकली, द भोळावण मावडली ।406।

आखिर देस्यौ घरा गाव नै, टुरी सासर कोयलडी ।  
रूस वाठका लारै छूटचा, घर में छूटी भावडनी ।407।

व्याव रचाय'र आया जानी, गाव घरा में हरखडली ।  
 वीद-वीदणी काकड बैठ्या, हेटं गादी जाजमटी ।408।  
 घरा घरा सू निरखण आयी, गाव घरा री बहवडली ।  
 घूघट सू घूघटियो रळियो, देखें आख्या नावडली ।409।  
 व्यावा रीता पूरी होगी, घरा पूगजा वीदणली ।  
 आरतियै री थाळ सजाया, फळमै ऊभी मावडली ।410।  
 वनटी वनडी घर म बटता, फळसो रोकें वैनडली ।  
 नेक-चाक वावलजी देव, मावड मूडै हासडली ।411।  
 गठजोडै सू बडता घर म, वीद बिखर थाळनटी ।  
 इखरचा बिखरचा वरतन दीसै भेळा करलें लाडली ।412।  
 नुई नवेलण घरा पूगगी, यातड भेळी वाखळडी ।  
 मूह दिखाई पगा लगाई, देव रिपिया रोकडली ।413।  
 व्याव हुवण पर रातीजोगी, घर-घर दीस गावडली ।  
 घरा लुगाया मधरी गाव, बैठी आखी रातडली ।414।  
 लाड जवाई घरा आवता, सासू गाव आखडली ।  
 छोट्या साळ्या कर मसकरद्या, पाव पान सुपारडली ।415।  
 लाड कोड दिख जीमतौ, आय पावणी गावडली ।  
 रात पड्या सू गीत उगर, रळ मिळ वठी सायडली ।416।  
 हसी मजाका करत्या करत्या, साळ्या वठी भूपडली ।  
 मधरी मधरी वाता वीचै, बीत आखी रातडली ।417।  
 सजी धजी बहवडली दीसै, चुडली पहर्या हाथडली ।  
 ओळू गाती दिखें लुगाया, विदा हुव है बटडली ।418।  
 डोलें साथ मरवण टुरगी, वठ्या ऊपर साडडली ।  
 लूमा-भूमा करे गोरवद, गणी भूणक टागडली ।419।

## टावर

- पूरा पट बीदणी बैठ्या, कोड मनावे नणदडली ।  
सासू मोटी आस लगाई, वेटी जणसी वहवडली ।420।
- जणै बीदणी दिखै पेट सू, जोरा फेरै घट्टडली ।  
घण काम सू टावर सोरी, होती दीस गोरडली ।421।
- पहली जापा पीहर करसी, गाव घरा रो रीतडली ।  
वेनड लेवण भाई आयी, घरा उडीक भावडली ।422।
- बुढ्या बडरचा भेली होजा, सोची समभी वातडली ।  
भट दाई नै हेली देवै, वरै चादणी भूपडली ।423।
- पहलो जापा खाय-बठीटा, मूडै चिपजा दातडली ।  
दोरो सोरो टावर जणदै, भावड मूड हासडली ।424।
- नाळी काटे, भावळ बूरै, दाई पूरी वातडली ।  
सवा महिण नाईण आवै, काम करै दिन रातडली ।425।
- नणदोली हाचळ खोलावै<sup>1</sup>, दूधी पाव भावडली ।  
नेक चाक बावल जी देव, हाथा रिपिया रोकडली ।426।
- घरा घरा सू आय लुगाया, चढती दीसै छातडली ।  
वेटी होया थाळ वजाव, बेलण लीया हाथडली ।427।
- उछव मोकळी दिखै घरा म, डूमण गाव गीतडली ।  
भाई वधू, सगा परसगी, जीमण जीमै यातडली ।428।

1 बच्चा जन्म लेने के पदचात बच्चे की मा बच्चे को स्तन पान तभी कराती है जब ननद आकर बच्चे के मुह म स्तन देती है। इस पर उसे रुपय, गहने, कपडे आदि प्राप्त होते हैं।

व्याव रचाय'र आया जानी, गाव घरा में हरखडली ।  
 बीद-बीदणी काकड बैठघा, हेटै गादी जाजमडी ।408।  
 घरा घरा सू निरखण आयी, गाव घरा रो बहवडली ।  
 घूघट सू घूघटियौ रळियौ, देखै आख्या नाकडली ।409।  
 व्यावा रीता पूरी होगी, घरा पूगजा बीदणली ।  
 आरतियै रो थाळ सजाया, फळसै ऊभी मावडली ।410।  
 वनटौ-वनडी घर में बटता, फळसौ रोकै वैनडली ।  
 नेक चाक बाबलजी देव, मावड मूडै हासडली ।411।  
 गठजोडै सू बटता घर में, बीद विखर थाळवडी ।  
 इखरघा विखरघा वरतन दीस भेळा करलै लाडडली ।412।  
 नुई नवेलण घरा पूगगी, यातड भेळी बाखळडी ।  
 मूह दिखाई पगा लगाई, देव रिपिया रोकडली ।413।  
 व्याव हुवण पर रातीजोगी, घर घर दीस गावडली ।  
 घरा लुगाया मधरी गाव, बठी आखी रातडली ।414।  
 लाड जवाई घरा आवता, सासू गाव आखडली ।  
 छोटया साळघा कर मसकरघा, पावै पान मुपारडली ।415।  
 लाड कोड दिख जीमती, आय पावणा गावडली ।  
 रात पडघा सू गीत उगर, रळ मिळ बठी सायडली ।416।  
 हसी मजाका करत्या-करत्या, साळघा बठी भूपडली ।  
 मधरी मधरी याता बीचै, बीत आखी रातडली ।417।  
 सजी धजी बहवडली दीसै, चुटली पहरया हाथडली ।  
 ओळू गाती दिख लुगाया, विदा हुव है बटडली ।418।  
 डोलै साथ मरवण टुरगी, बठघा ऊपर साढडली ।  
 लूमा भूमा कर गोरवद, गैणी भूणकै टागडली ।419।

नेना टावर दिखै गाव मै, बैठै मावड गोदडली ।  
लाड लडावै वैंठी जामण, हसती दीसै बैठडली ।441।

भाडूली टावरिया उतरै, बाजा बाजै गावडली ।  
देवि-देवता केस चढाता, जाता पूरी वातडली ।442।

पैरी ओढी दिखै वीदणी, पगल्या लागै डोकडली ।  
दूधा हावी पूत फळी थै, सामू बोलै बोलडली ।443।

पोतडिया नै वाध्यी सूती, टावर लेवै नीदडली ।  
ईली गीली की नीं दीसै, सुख सू सोवै मावडली ।444।

सजी-घजी बहवडली दीस, गीगौ लीया गोदडली ।  
बैटी दादी दादी सूपै, आय सासरै गोरडली ।445।

पकड आगळी टावर चालै, मूडै दादी हासडली ।  
ठमका करती आगै भाजै, घुघरू बाजै टागडली ।446।

पालणियै मै टावर हीडै, लोरी देवै मावडली ।  
हीडा लेती सूती दीसै, मीठी लेती नीदडली ।447।

दादी लाड लडाती दीसै, टावर बठची गोदडली ।  
टट-पट टट-पट बाता करती, तोती बोलै बोलडली ।448।

छ महिणा री होता-होता, वैंठै टावर गोदडली ।  
आती जाती दै डिचकारी, घरा घरा मै बहवडली ।449।

टावरियै रै जलम लेवता, जात बोलदै मावडली ।  
बडौ होवता जाती दीसै, देवि देवता सायडली ।450।

घर घर टावर रमता दीसै, गळिया गावा रेतडली ।  
। हाकी करता करता, रळघुळ घाल धाकडली ।451।

। काड घर-घर मै दीसै, टावर होया गावडली ।  
। टावरा सुनी दीसै, गाव घरा री घरतडली ।452।



घर में टावर जणिया सूती, जच्चा खावै सूठडली ।  
 अजवाणा रा सीरा जीम, वठी ऊपर माचडली ।429।  
 घोव सहद मूडे में देव, जलम्या टावर बहवडली ।  
 जात करम सस्कारा पूरा, घर-घर दीस गावडली ।430।  
 ग्द गिरी रा लाडू बाध्या, घाल बिदाम साकरडली ।  
 खाणौ पीणौ रचलै पचलै, मूडी चमक धाकडली ।431।  
 तेल पीठी दीस मसळती, माथी घोव गोरडली ।  
 चिकणी चुपडी दिख कामणी, मखमल जन्नी चामडली ।432।  
 हाव घोव केस सवारै, पीळी ओढ बहवडली ।  
 नणदोली र हाथा धाळी, बीदण बाट लाफसडी ।433।  
 जापै स जद उठ सवागण, आगण बाजै ढालवडी ।  
 घरा लुगाया भेली होजा, मधरी गाव गीतडली ।434।  
 करवी पूजण बहवड चाली, ओढया तारा लूगडली ।  
 वेटी जणिया है गोरडली, करै लुगाया वातडली ।435।  
 पूजन कर जद दोघड ऊच्या, पाणी लाव बीदणली ।  
 चूली चोका कामण साभ, दिख राधता लाफसडी ।436।  
 सग्या सगार घरा पूगजा, धमचक घाले धाकटली ।  
 मधरी-मधरी गाळया गाव, घणी सुहावै वातडली ।437।  
 टाबरिया र नामकरण पर, राध मोठी लाफसडी ।  
 मिरिया-मिरिया घोव लेवता, जीमै बठया जाजमडी ।438।  
 भोळा टाळा टावर रमता, धुयकी घाल डोवडली ।  
 निजर वचावण मावड माड, मूड काजळ टीकटली ।439।  
 चुटवी देता टावर हसद, बाखी दीस वैटडली ।  
 जद किल वाळया भर लाडली, मावट मूडे हासडली ।440।

- वात सगाई लावी होजा, पचा पडजा वातडली ।  
 वेटी घर में माव कोनी, व्याव रचावे मावडली ।462।
- धीवड सोळा साल होवता, वावल उडजा नीदडली ।  
 मावड देवि देवता घ्यावे, दिखे जोटती हाथडली ।463।
- मधरा-मधरा गीत सुणीज व्याव टाकले गावडली ।  
 माड राग घोरलिया गूज्या, धम वटावू डाडडली ।464।
- सुमी पड ती करी भाइडा, व्याव सगाई चाकरडी ।  
 तिन राजीपे अेक हुव नी, घर घर वाता गावडली ।465।
- काकण डोरा हाथ पगा में, नीचे लटके कोडडली ।  
 मुरचे माथे मोळी वाधी, लाग मेहदी हाथडली ।466।
- टावरिया रा व्याव रचावे, दीस गुड्डा गुड्डडली ।  
 गोदधा ऊच्या फेरा खाव, वावल साथे मावडली ।467।
- जेठ असाढा व्याव हुने है, आधी चाने धाकडनी ।  
 लू लपटा ने भूल्यो विसरधी, जीमे बैठयो लाफसडी ।468।
- तेरह वरसा हुई लाडली, वर देखे है डोकरडी ।  
 वृढा ठाढा ने परणावे, रिपिया लोभण मावडनी ।469।
- गायन रीत लेवती दीस, वेचे घर री धीवडली ।  
 तिन रिपिया, तिन गण भाई, व्याव हुवे नी गावडली ।470।
- व्याव सगाई आणे माथे, उछत्र छायजा गावडनी ।  
 रग रगीना घर दीसे है, राती दीसे भीतडली ।471।
- राग रग घोरलिया वसिया, वण-वण गावे रेतडली ।  
 भगत मोनता, भजन गावता, व्याव तिवारा गीतडली ।472।

1 मरुप्रदेश में राग रग प्रतिदिन होते रहते हैं । खेता में भजन-वाणी तथा "याव-स्योहारों पर गीनों की भीठी गूज बानों में पडती रहती है ।

## रीता

ब्याव-मायरे खरच मोकळी, खाली होजा आटडली ।  
किरकी लीया जिवे जीवडी, सारी देवे हिम्मतडी ॥453॥

गठजोडे री बात निराळी, बाध घर घर गावडलो ।  
ई वधन र सारे जोल, गाव घरा री गोरडली ॥454॥

हियो हेत सू गाठा घुळजा, काकण डोरा हाथडलो ।  
पुरख लुगाई इसडा घुळिया, ज्यू पाणी मं साकरडी ॥455॥

कामणिया रं गीत विना सू, ब्याव अधूरी बातडली ।  
रळ मिळ गाती दिखे लुगाया, ब्याव टाकल गावडलो ॥456॥

वावल मावड मनता मान, सुख सू रहवे बैठडली ।  
दूध घीव री नदिया बहवे, वेटी रमले गोदडलो ॥457॥

ऊनाळ म ब्याव हुया सू, आवे काळी आघडली ।  
घर-घर गावा बात हुवे है, वनड चाटी हाडडली ॥458॥

गाव सगाई लावी चाल, घरा घरा री रीतडली ।  
अक-दुजे न अरखचा परखचा, ब्याव मड है साथटली ॥459॥

सासरिय म सासू दोरी, ताना देव नणदडली ।  
जेठाणी री काम छूटग्यी, काम करू दिन रातटली ॥460॥

सासू म्हारो बुरी घणी है, घर-घर वाता वीदणली ।  
सासू विन सासरियो सूनी, कामण मूडे बातडली ॥461॥

---

1 शादी मायरे पर गाव के लोग खुलवर खच करत है ।  
इस मनावल के साथ जीत है कि कज सीध ही उतार दंगे ।

लाबा नावा केस दिखै है, बिछिया ऊपर धरतडली ।  
 फूल बनी रो वनडौ सूती, मीठी लेती नीदडली ।482।  
 रूप डळा री गजप्रण ऊभी, गठ गठीली गोरडली ।  
 नख लाग्या मू लोही झलक, गोरी-गोरी चामडली ।483।  
 काळी लटा बटा खायीडी, पूगी कामण ठोडडली ।  
 गाला माथै भवरा गुडक, मधरी चाल्या पूनडली ।484।  
 उभरची हिवडी ऊचो दीसै, दिख कबूतर चाचडली ।  
 सरवर तिरता हस दिख है, ठम ठम चाल्या गोरडली ।485।  
 तीन सळा री पेड्या दीसै, पेडू ऊपर कामणली<sup>1</sup> ।  
 रुवा डाडी वणी दिखै है, सूडी ऊपर गोरडली ।486।  
 घटी पाट ज्यू डगर<sup>2</sup> गोरडी, कसियी घाघर टोरडली ।  
 ऊचा नीचा होता दीस, पाणी लाता सोनडली ।487।  
 नख अगूठा उभरचा दीसै, घोरा धरती बैटडली ।  
 सीस सरूप नारेल कामणी, देवळ धाना जाघडनी ।488।  
 हिगळू रग री रुचन काया, घर-घर दीसै वीदणली ।  
 घोळा दात बतीसी चमक, वासग नागा चोटनी ।489।  
 बजती वीणा वान सुण है, जद बोले है कामणली ।  
 हस-हस बाता जद करै है, फूल भडै है पाखडनी ।490।  
 सीतळ पातळ घीमी चाला, बाळू धरती वहवडली ।  
 काण घूघट मिनग देखलै, हिवड बसगी लाजडली ।491।  
 हाडन-गुडल डील र माथै, लागी नस है गोरडली ।  
 डीगी डीगी दिगै लुगाया, घर-घर घोरा धरतडली ।492।

1 नाभी के नीचे तीन सठ पटन दिखाई देते हैं। नाभी के ऊपर दूओ  
 से बनी पगडडी जो वक्षस्थल तक होती है। 2 नितम्ब । ✚

## अखरो नखरो

गाल गुलाबी नण रसीना, नाव सुवै री चाचडली ।  
मदमात जोवनिय माथै, होट फूल री पाखडनी ।473।

ऊची ऊची दिखै काचळी, रतन कचोळी सूडडली ।  
पतळी पेट पीपळ री पत्ती, कमर सावडी मूठडली ।474।

लाबी वाह चपरी डाळी, रसळा फळिया<sup>1</sup> आगळडो ।  
पान पीव री गिटता दीस, गोरी पतळी चामडली ।475।

भिण घुघटिय मूडी दीस, पलका प्याला आखडली ।  
नवल धन रा नैण मित्या सू, डसती लागै सापणली ।476।

गुलगुलियै गाला न लीया, फिरै भाजती गोरडली ।  
पतळै पतळै होटा वीचा, मोती जडी दातडली ।477।

राती-राती दिख चामडी, चमक मूडी सोनडली ।  
होटा नाली लाल मुख है, सुरग सुपारी अेटडली ।478।

तीखी भोवा खीच कवाणा, तिरछी लाबी रेखडनी ।  
बट खावोडी पलका दीस, खजण जेडी आखडली<sup>2</sup> ।479।

केस अणी पर मोती चमक, जद हाव है गोरडली ।  
कचन काया माथै ढलकै, पूगै ऊडी सूडडली ।480।

भरियो-तरियो हिवडी दीस, ऊसा<sup>3</sup> भारी गोरडली ।  
हसला रळ मिळ सूता दीस हिवडै माथै कामणली ।481।

1 पेड का नाम जिस को फलियां पतली और लम्बी होती है ।

2 खजण पक्षी की आस की तरह सुंदर आस । 3 मादा पगुआ के धन तथा धनों के ऊपर की धली जिसमें दूध रहता है ।

लावा लावा केस दिखै है, बिछिया ऊपर धरतडली ।  
 फूल वनी रो वनडौ सूतौ, मीठी लेती नोदडली ।482।  
 रूप डळा रो भजरण ऊभी, गठ गठोली गोरडली ।  
 नख लाग्या सू लोही झलक, गोरी-गोरी चामडली ।483।  
 काळी लटा रटा खायौडी, पूगी कामण ठोडडली ।  
 गाता माथे भवरा गुडके, मधरो चाल्या पूनडनी ।484।  
 उभरघो हिवडी ऊचो दीसै, दिखै बवूतर चाचडली ।  
 सरवर तिरता हस दिखै है, ठम ठम चाल्या गोरडली ।485।  
 तीन सळा रो पेडघा दीसै, पेडू ऊपर कामणली<sup>1</sup> ।  
 रूवा डाढी वणी दिखै है, सूडी ऊपर गोरडली ।486।  
 घटी पाट ज्यू डगर<sup>2</sup> गोरडी, कसियो घाघर डोरडली ।  
 ऊचा नीचा होता दीसै, पाणी लाता सोनडली ।487।  
 नस अगूठा उभरघा दीस, धोरा धरती बेटडली ।  
 सीस सरूप नारेल कामणी, देवळ घाना जाघडनी ।488।  
 हिगळू रग रो वचन काया, धर-धर दीसै वीदणली ।  
 घोळा दात बतीसी चमके, वासग नागा चोटडली ।489।  
 वजती वीणा वान सुणं है, जद बोल है कामणली ।  
 हस-हस बाता जदे करे है, फूल भट्टे है पासडनी ।490।  
 सीतळ पातळ घोमी चागा, बाळ् धरती बहवडली ।  
 वाण घूघट मिनग देखलै, हिवडे बसगी लाजडली ।491।  
 हाडन गुडल डील रे माथे, लावी नस है गोरडली ।  
 जोगी डीणी दिग्य लुगाया, धर धर घोरा धरतडली ।492।

1 नामी के नीचे तीन सळ पडत दिखाई देते हैं। नामी के ऊपर रजो  
 र बनी पगडही जो वशास्थल तब होती है। 2 नितम्ब । +

केस सवार पाटधा पाड, रूप निखारै मरवणली ।  
 गणा गाभा पहरचा ऊभी, परी दिख है सोनडली ।493।  
 दो पलकार बीच गोरडी, घीचै काजळ रेलडली ।  
 आभी घरती मिळधा बीच म, पळका मार मेखडली ।494।  
 मकराण री दिख मूरती, दूघा हायी गोरडली ।  
 मरघरा रूपा री भारी, घर घर मूमल मरवणली ।495।  
 अँडी-बडी<sup>१</sup> निजर न आवै, इण घरती री धीवडली ।  
 घोरलिया री रूप लियो है, सोनल रूपल सायडली ।496।  
 जसाणै रा पीळा भाटा, पीळी हुळका कामणली ।  
 सोनलिय रूपा नै लीया, गजवण ऊभी टीणडली ।497।  
 कमर दूलडो कामण नाचै, द फटकारा खडली ।  
 तीज तिथारा घूमर घालै, लटका देती हायडली ।498।  
 घर-घर चाद पुनमरी निक्कलै वण ठण चाल्या सोनडली ।  
 हिरणो जिसडी दिखै चानती, लावी पतली टागली ।499।  
 लाबी-चोडी सीनी लीया, डोली पोढघा<sup>३</sup> सैजडली ।  
 हाथ फेरती गजवण निरख<sup>४</sup>, केस भरोडी छातली ।500।  
 नई नवेलण<sup>५</sup> वण-ठण वैठी, ढळता आधी रातडली ।  
 राता डारा डोळा छाया, काजळ घुळग्यो आखडली ।501।  
 इदर लोक सू उतर अपसरा, वसगी घोरा घरतडली ।  
 इमरत हाख रस वरसाव, ऊभी उपर टीवडली<sup>६</sup> ।502।  
 आभै चाद पुनमरी निसरयो, मूमल ऊभी छातडली ।  
 सरमा भरती ओटी<sup>७</sup> लीनी, घूघट काडया वादळडी ।503।

1 रेखा 2 कुरूप 3 सोना 4 देखना 5 हाल ही में  
 घानी हुई हो । 6 ऊपे टिले 7 आह म छुपना

## स्योग - सिणगार

मुखड घूघट थळी<sup>1</sup> आखडै<sup>2</sup>, कामण पूग मैजडली ।

अडका घडका कर काळजी, भवर कर जद वातडली ।504।

वार-वार ढोलौ घतळाव, गूगी वणगी मरवणली ।

ओढणिय सू मूडौ ढकियौ, घणी सतावे लाजडली ।505।

पहल मिलण नाळजियौ<sup>3</sup> घूजै, हल चल मचजा जीवडली ।

टूटी फूटी वोली निसरे, मूडे अटके वातडली ।506।

सजा माय मरवण बठी, ढोलौ खीच चूदडली ।

अघ मुदिये<sup>4</sup> नणा सू निरखै, हाय आगळी छेतडली<sup>5</sup> ।507।

पिवजी हाय हाय मे लीनो, रस भीजी है कामणली ।

झुवती पलका कर इसारा, वठू ढोल गोदडली ।508।

सुवागळ राता संज विछाई, छेत्या बीचा भूपडली ।

किरण चाद री छण छण आय, भाका घाल भावजडो ।509।

दिवल ने हाया सू डावमो<sup>6</sup>, हुयो अघारो भूपडलो ।

दात दाडम्या<sup>7</sup> पळका भार, हुयो उजासी सजडली ।510।

साजा मरती कर अघारो, सूती सजा गारडली ।

नाकडली री सासडली में<sup>8</sup> होळ-होळ वातडली ।511।

बाजवद री लूवा टूटी, गळ री टूटी हारडली ।

इमरो बिसरी माग दिख है, तिणख<sup>9</sup> सूनी नाकडली ।512।

1 धोत्र 2 ठोकर खाना 3 कलेजा 4 आघ मुदे हुए  
5 हाथों की उँगलियों की दरारों से 6 ढकना 7 अनार के दाने  
8 पुस-पुस की आवाज 9 नाक में पहने कर आभूषण ।



हयणी जिसडो दिख चालती, मरूधरा री गोरडली ।  
 घर धुमेरा पहर धाघरी, गजवण पूग सँजडली ।513।  
 क्षीणा गाभा कामण पहरघा, पीव मिलण री रातडली ।  
 चाद पुनमरी रातडली मै, झाकं अग-अग गोरडली ।514।  
 दिनडो ऊग्या पूछे ताछे, घरा लुगाया वातडली<sup>1</sup> ।  
 सरम लाजडी घणी सतावे, माथी टेक्यो गोडडली ।515।  
 साथी धारी वातडली मै, किण विद रीक्षी भावजडी ।  
 मुळक-मुळक भाईडो कहवै, राता बीती वातडली<sup>2</sup> ।516।  
 रातडली री वातडली मै, मनडो उळझ गोरडली ।  
 नाचै कूदै हसी खुसी म, करे मस्करी साथडली ।517।  
 हेतालू सँजा पर सूतो, कामण चाप टागडली ।  
 कवळ-कवळ हाथा माथ, पीव उडावै भोजडली ।518।  
 वादळ लोरा पाणो वरसै, मरवण ऊभी छातडली ।  
 केस विखेरचा हसती दीडे, ढोली पकडै हाथडली ।519।  
 वोच भरोखा गजवण ऊभी, सनी देव आखडली ।  
 हाथ कामनै छोडै छिटक, ढोली पूग सँजडली ।520।  
 गोरी घण सू नण मिल्या सू उडी सायव नीदडली ।  
 खाणो पीणी स्स बिसरायो, बठी काटे रातडली ।521।  
 घीमा हेला कर इसारा, हुया चादणी रातडली ।  
 पीव सैन नै कामण समझै, जीवा हल चल साथडली ।522।  
 ऊठ बठता गजवण ढळकी, छैल थामी हाथडली ।  
 सिणगारा सू सजी गवरजा, ढोली निरख मरवणली ।523।

1 सुहागरात के दूसरे दिन घर की ओरतें दुल्हन म रात की बातें पूछती है । शम के मारे अपना माथा गोडो के बीच म ले लेती है ।

2 दुल्हा अपने साथियो को रात्रि की बातें बता देता है ।

सायबजी सू मिलवा खातिर, टुरी घरा सू गोरडली ।  
 काटलिया री पीडा भूली, भाजी जावै मूमलडो ।524।  
 घटाटोप वादळिया छाया, गुप्प अघारी रातडली ।  
 पीव मिलण रौ मारग सोधै, आभं खीया बीजडली ।525।  
 ढोली ऊभौ हेली देवै, भणव पडै जद मरवणली ।  
 सरम लाजडो भूनी विसरी, चढै पीव री साढडली ।526।  
 कामण पीवर जाय वेठजा, पीव जीव नी चैनडली ।  
 सासरियै मै पूग अचपळो, मनरी करलै वातडली ।527।  
 बिन बोल्या सू बात हुवै है, आट्या मिलिया आखडली<sup>1</sup> ।  
 ढोली मरवण दोनू समझ्या, अंक दुज री बातडली ।528।  
 सिंझ्या पड्या सू घर मै दीसै, गवरू सूती सजडली ।  
 साथीडा रौ साथ छोडदघी, आछी लाग बहवडली ।529।  
 दिन मै काम हिय सू लागै, कामण राता सैजडली ।  
 भर सियाळै रळ मळ वठ, लावी चालै वातडली ।530।  
 ताका तोली करती दीसै, पीव बुलाया कामणली ।  
 हिचका खाती<sup>3</sup> पगल्या<sup>4</sup> धरती, चढती दीस छातडली ।531।  
 सावण महिणौ घणौ सुहावै, हेला सनी बहवडली ।  
 हरी भरी गोरडली दीसै, टाबर रमसी गोदडली ।532।  
 बुढै-बडेरा लाज घणी है, घघट काढै बीदणली ।  
 माझल<sup>5</sup> राता बीद पगलिया, पूगै गजवण सैजडली ।533।  
 नोका भाकी दिन मै होलै, भगडा भगडी रातडली ।  
 ढळता आसू बालम पूछै, रीभ घीजै गोरडली ।534।

1 आश्व स आख मिलते ही झगारों मे बात हो जाती है । 2 नई नई  
 शादी होने पर अपने मित्रो को भूल कर दुल्हन के पास रहता है ।

3 झटका खा-खाके 4 पाव 5 आधी रात

अगले आसण मारू बैठ्या, लार बढी मरवणली ।  
 रिघरोई र वीचा निरख, ढोल री गळ मूछडली १ १५३५।  
 क्षीण घूघट मनडो मोहै, थळवट पिणघट बहवडली ।  
 काम वाण नणा सू छोड, वाजळ सारया आखडली १५३६।  
 मेळा ठळा डेरा नाख्या, थठ नीच गाडडली ।  
 अकल बहवड देख सायवी, सूप पान सुपारडली २ १५३७।  
 रात होया सू सावण टुरगी, घर मै जागै डोकरडो ।  
 सासू पगत्या चाप्या सोव, गोरी पूगै सजडली १५३८।  
 कोछा मारघा कर वामडो, गजवण सायै नेतडली ।  
 पलटा खावँ मुड मुड देरौ ताका भाकी आखडली १५३९।  
 दोफारा मै खेता ऱठघी भाती लावै बहवडली ।  
 भूख तीस नै भूल्यो विसरघी, सायव देखै कामणली १५४०।  
 मिरगानैणी सायव निरखै, ढोलो छाग खेजडली ।  
 कुवाडियो लूखा मै उळश्यो मनडो उळश्यो गोरडली १५४१।  
 रात चादणी खेत रुसाळै, घर मै सूती सोनडली ।  
 काम वाज विसराया बठघी, आरया उडगी नीदडली १५४२।  
 भिरमिर झिरमिर मेही वरस, मधरी चाल पूनडली ।  
 गजवण ऊभो हेला देव, पोढी ढोला सजडली १५४३।  
 आख फरुक भुजा फरुकै, जणै फरुक सूडडली ।  
 आज कत नै आया सरसी, सुणल साथण वातडली १५४४।  
 गबरू करार मान घणो है, हठ्टु घणो है गोरडली ।  
 अक-दुज री वाता माथ, जी लै सायो साथडली १५४५।

१ ऐसी मूछे जो जुल्फो के साथ मिली हो २ मेले मे गाडी की छाया  
 बठकर खाना पीना किया जाता है ऐसे समय जब दुल्हन अकेली दिखती  
 है तो दूल्हा पान सुपारी देता है ।

## ऊजळी

- सियाळ री रात अधारी, वादळ वरसै घाकडली ।  
चेती भूल्यो कुबर पडचो है, मो'रा माथं घोडकडी ।546।
- ऊचै धोरें जगं दीवटी, घोडी देख आखडली ।  
धोमा धोमा पगल्या घरती पूगै फळसै भूपडली ।547।
- ठडो पडचो कुबर दिखै है, पथरीजी है आखडली ।  
अमरी चारण साभ उतारै, लाय सूवारै माचडती ।548।
- लकड्या तिणखा स्स की वाळ्या, वाळी घर री मूदडली ।  
इण जतना सू काम सरै नी, कुबर टळै नी मौतडली ।549।
- बूडो चारण आजै-भाजै, समझ न आरै बातडली ।  
सुवक्या खाती कुबर पडचो है, पल पल गिणती सासडली ।550।
- सरणागत री मौत हुवै ली, जीवा आकड पाकडली ।  
वेटी आगै वावल रोवै, आसू चालै धारडती ।551।
- इण जलम मै वदै नी देख्या, आसू वावल आखडली ।  
मूह उतारया ऊजळ रुमी, पूछै ताछ वातडती ।552।
- वावळ बोळ्यो सुणल लाडन, धरमा राखी साखडली ।  
पावर्ण री ज्यान वचाई, भूल्या विसरया लाजडली ।553।
- मूह सू मूडो चिपकाया, कुबर टळेली मौतडली ।  
वावल वाता सुणी ऊजळी, सरमा मरगी धोवडली ।554।

जालोर के घूमली दीकाने का राजकुमार सर्दी में गिबार खेलते हुए बेहोश हो जाता है। घोड़ी उसे अमरे चारण की झोंपड़ी के सामने ल जाती है। अमरा ऊजळी को आग जलान हेतु कहता है परंतु इस आग

गाभा नास्या टुरी ऊजळी, छोटी छिटकी लाजडली ।  
 वीद पगलिया भरती चाली, पूगी कुवरा माचडली ।555।  
 गळ्वायडली भरी ऊजळी, होटा पाव पूनडली ।  
 चदण रूखा नागण लिपटी, मद मस्ती मं गोरडली ।556।  
 लाय पलीता लपटा उठगी, जीव जेठव आगडली ।  
 धीमौ धीमौ ल पसवाडौ, खोली दोनू आखडली ।557।  
 पलटा खाती दिस ऊजळी, गुडक वीचा संजडली ।  
 सुध-बुध भूली कामण सूती, पलका मूदचा आखडली ।558।  
 सोनपरी सी ऊजळ दीसं, सूती ऊपर संजडली ।  
 दूधा हायी दिस कामणी, ज्यू पूनम री रातडली ।559।  
 चदली सजा वीच सज्यो है, ठडी करद आखडली ।  
 कुवर टटोळ हवळें हवळें, कचन काया गारडली ।560।  
 जद ढोलें सू आख मिळें है, हलचल मचजा जीवडली ।  
 वाथा भरती कुवर दिखें है सूती ऊपर संजडली ।561।  
 कुवर ऊजळी दोनू घुलग्या, ज्यू पाणी मं साकरडी ।  
 जीवा सू जद जीव मिल्यो तो, गजवण सूपी पूजडली ।562।  
 कुवर किया है कौल ऊजळी, सोगन म्हानें सायडली ।  
 पटराणी री ठोष्ट बठसी, राज घूमली धरतडली ।563।  
 धोरें ओटें मिलता दीसं, मेह जेठवी सायडली ।  
 गळ्वायडली भरता भरता, गुडक ऊपर टीवडली ।564।  
 कुवरा गोदघा ऊजळ सूती, हस हस करती वातडली ।  
 मधरी मधरी वाता वीचा, ढळती दीसं रातडली ।565।

से कुवर की बेहोशी नहीं टूटती है । जमरा ऊजळी का अपने शरीर की गर्मी देने हेतु कहता है बेटी के आनाकानी करने पर कहता है कि मैं तेरी गादी इसके साथ कर दूंगा । इस पर ऊजळी ने अपने शरीर की गर्मी

चारण बेटी वैन हूवै है, गाव घरा रो रीतडली ।

लोक लाज सू डरती-डरती, कुवर लुकावै आखडली ।566।

कोल भूलग्यौ, मुड नी आयौ, जुग बीत्या दिन रातडली ।

ऊजळ वाटा दिखै जोवती, ऊमी ऊची टीवटली ।567।

वीती वाता याद करे है, अंकल सूती सैजडली ।

आसूडा रा वाळा वहवै, डुसका खावै गोरडली ।568।

तनडी घरा गाव म वसियौ, मना जेठवै यादडली ।

भूली विसरी दिखै ऊजळी, वात करे जद साथडली ।569।

होडा-होडी आसू वहवै, गाला माथे कामणली ।

ठोड-ठोड पर मोती विखरचा, माळा टूटी डोरडली ।570।

भवर याद में हिवडौ उफणै, आढ्या सोधै कुरजडली ।

जेठ नै म्हारो हाल कहिज, उडती जा थू वैनडली ।571।

वीती-वाता भूलौ ऊजळ, व्याव हूवै नी साथडली ।

धन-धान सू माटा भरलौ, सूपू थानै रोकडली ।572।

जीवा कीमत जीव जाणसी, कुवर समझलौ वातडली ।

मरणी जीणो साथ पीव रै, प्रीत घरा रो रीतडली ।573।

ऊजळ दियो सराप कुवर नै, ऊमी ऊपर धरतडली ।

बळता झळता जीवा लागी, तपती दोसै चामडली ।574।

ल्हास वणियो पडची जेठवौ, सुणी ऊजळी वातडली ।

पगा उभाणो भाजी कामण, जाय कूदगी आगडली ।575।

मेहु जेठवौ ऊजळ दानू, कण कण वसिया रेतडली ।

घोरा धरती घर-घर गूज, प्रीतडली रो गीतडली ।576।

---

देवर कुवर को जान बचाती है । दोनो में प्रेम सम्बन्ध स्थापित हो जाने हैं । कुवर ऊजळी को अपनी पटरानी बनाना चाहता है परन्तु चारण बेटीबहन होती है अतः गान्गी नहीं होती है। ऊजळी कुवर को श्राप देती है और कुवर मर जाता है । ऊजळी कुवर के साथ सती हो जाती है ।

## गौण

- भूमर लटके विछिया बाजें, दाता चमकै चूपडली<sup>1</sup> ।  
 कैंस बिणा<sup>2</sup> र माथै ऊपर, मोती लडिया चीढडली 1577।
- हीरा मोती नथली पहरो, लटकै नीचै नाकडली ।  
 ऊची-नीची होती दीस, घात कर जद गोरडली 1578।
- सोने री गुलमेख<sup>3</sup> जडो है, दीस गजवण दातडली ।  
 हस हस कामण वात करै जद पळका मार मेखडली 1579।
- ढोल मिल्वा मरवण चाली, पग मै झणकी आयलडी ।  
 हळवा-हळवा पगल्या घरती, चूडचा थामी हाथडली 1580।
- कडला उपर आवळा पात्या, गणी पूग्यो गोडडली ।  
 ठुमक-ठुमक कर दिख चालती, मचका<sup>4</sup> देती कामणली 1581।
- हाथा चादी चूड पहरली, पोई नावी कीलडली ।  
 सासरिय न कामण चाली, चढिया उपर साढडली 1582।
- वाजूबद वूषया पर बाध्या, दिख लटकती लूम्रडली ।  
 आती जाती द फटकारा, मेळा पळा बहवटली 1583।
- झीण आढण साम दीस, पनटचा तोमण सानटली ।  
 पहरघा ओढचा गजवण ऊभी, घूघट काढवा चूदडली 1584।
- हाथ गुजरी अणक झणक, पगल्या बाजें पायलडी ।  
 आगणिय मै ऊभी गजवण, घूमर घाल घाकटली 1585।

1 दाती म जडवाया जाने वाला छोटा सा सोने का आभूषण 2 वालो को ललाट तक आगे लाकर चिपकाना 3 सोने की छोटी कील जो दात के भीचाबीच लगाई जाती है । 4 झटका दे देकर ।

कूची-कस घाघरियै टाग्यौ, नाडौ कसियौ डोरडली ।  
 घूघरिया झणकारा देती, घर-घर फिरलै गोरडली ।586।  
 पगा पान पगल्या पर दीस, लटकै चादी लूबडली ।  
 नखल्या ऊपर पहर नखलिया, छम छम चलै कामणली ।587।  
 घाघर माथ दिख कदोळी, गजवण चाली खेतडली ।  
 ऊचा नीचा डगर हुया सू, झणक घघर घाकडली ।588।  
 टणका झण-झण दिसै वाजता, ठहरकी दिया अेडडली ।  
 जोवन भळक है कामण रौ, जणै उठ है टागडली ।589।  
 गळ टेवटौ दमकै-चमकै, बण-ठण चाल्या गोरडली ।  
 चादी सोनल हसली पहरो, ब्याव तिवारा सानडली ।590।  
 चाकरडी न डोलौ चाल्यौ, मरवण ऊभो छातडली ।  
 हाथ फूल चादी रौ झणकै, झाली देता कामणली ।591।  
 कठी-कठ पर सजी-घजो है, चमक हीरा घाकडली ।  
 माथे टीकी भळ-भळ पळकै, तिणखौ चमक नाव डली ।592।  
 खळ बच खळ बच चुडली बाजै, काम करै जद वहवडली ।  
 विलिया माथ तेल चोपडघा, चमकै हाथी दातडली ।593।  
 फिणी नाक पर जद पहरै है, मूडौ चमकै गोरडली ।  
 वाना बीचा पहर सुरलिया, गवरल ऊभो टीवडली ।594।  
 मुरचै माठी, चाद चोटडो, बाघी रेसम डोरडली ।  
 बीच आगणियै बँठी कामण, मघरो गाव गीतडली ।595।  
 सोनल चादल तखतया पहरो- पोया रेसम डोरडली ।  
 भरिय तरिय हिवड माथै, ओपे वहवड घाकडली ।596।  
 चदण हारनै पहर कामणी, बँठी रूपर सजडली ।  
 सोनल रूपल किरण निसरिया, मूडौ चमकै सोनडली ।597।



चूड्या आग पहर मटरिया, टुरी सासरं वीदणली ।  
 जणै गोरडी घूघट खीच द झणकारा हाथडली 1598।  
 ऊची वगड्या गोळ चकरिया, चमकै दाणा चादडली ।  
 हाथा रळका देती चालै, मेळा-ठेळा गोरडली 1599।  
 मोहन माळा गोळ मणीका, पोया गजवण डोरडली ।  
 लावी नस पर दिख पहरती, दोलड करती कामणली 1600।  
 इली बोरली अळकै पळक, भालर लटकै सोनडली ।  
 चाद पुनम रौ दिखै निवळती, घरा घरा सू गावडली 1601।  
 बीटी पहरया गवरल दीस, घर-घर सोनल चादडली ।  
 मिनख लुगाई दोनू पहरै, चिठूली री आगळडी 1602।  
 अळका पळका टडा कर है, पहरया कामण हाथडली ।  
 सठवा सठवा दीसै वूकिया, हाथा थामचा मटकडली 1603।  
 भुजवघ वाघ्या गजवण चाली पाणी लावण नाडडली ।  
 होरा मोती जडया दिख है, लटक सोनल साकळडी 1604।  
 माथै ऊपर टीटी भळकौ, दमकै चमक बहवडली ।  
 तीज तिवारा घूमर घालै, झीणी आढ्या चूदडली 1605।  
 मगळ सूत्र न पहर कामणी, व्याव रचाव गावडली ।  
 सासा वीचा वस्यी सायणी, घोरलिया री वटडली 1606।  
 आड पहरिया गावा आव, सासरिय म वीदणली ।  
 घरा घरा सू आय लुगाया, निरख ऊभी बहवडली 1607।  
 वान भरोडा दिख गारडी, वाळघा पहरौ चादडली ।  
 पीवरियै न जाती दीस, भाई साथ वनडली 1608।  
 चमक-चूडि चिलकारा मारै, चमकै-दमक गोरडली ।  
 पगा पालरी पहर कामणी, काम करै दिन रातडली 1609।

कडिया हाथ पगा मै दीसै, टावर गवरू डोकरडी ।  
 भूखा घाया सगळा पहरै पीतळ चादी सोनडली 1610।  
 कुण्या माथे दीसै कतरिया, राती चुट है चामडली ।  
 मुक्लावी कर चाली गजवण, पूर्गे डोल गावडली 1611।  
 केसा माथे वाघ दाभणी, पनघट चाली बहवडली ।  
 आता जाता रसे देखै है, भीणी ओढया चूदडली 1612।  
 बेवडिया चिलकणिया लीना, नुई वीदणी गावडली ।  
 गणा गाभा अदळे वदळे, पाणी जाती गोरडली 1613।  
 गोखरू काना मै पहरचा, गवरू उभी टीवडली ।  
 छोटा मोटा मुरक्या पहर, ऊपर सोनल साकळडी 1614।  
 व्याव तिवारा गवरू पहरै, हीरा पन्ना कठडली ।  
 वघ गळे री कोट पहर कर, मूढचा ढाकी सोनडली 1615।  
 पग मै नेवर दै भणकारा, काम करै जद खेतडली ।  
 काणे घूघट गोरी निरखै, सायबजी री टागटली 1616।  
 पालणिये मै टावर सूत्या, सेनी समझे बातडली ।  
 हाथ पगा मै घूघर बाज, जद मारै है लातडली 1617।  
 कमर तागडी वाघ्या दिस, घर-घर टावर टीगडली ।  
 छम-छम करती पायल बाजे, ठिब्बा खाता टागरडी 1618।  
 छाळी गळ घूघरिया बाजे, टोकर बाजे गावडली ।  
 कोडल्या री माळा पहरचा, भसड चाली रोहिडली 1619।  
 गणी पग मै द भणकारा, मेळा ठेळा साढडली ।  
 घोडी गळ मै दिख कठली, लटकै चादी सोनडली 1620।  
 चादी जोड पगा मै पहरी, हरख कोडे वीदणली ।  
 तीज तिवारा मेळा ठेळा, पहर दिखावै सायडली 1621।

- चोटी मू अेडी तक सजगी, दिख गवरजा गोरडली ।  
फूला हळकी गजवण दौडें, हस हस करती वातडली 1622।
- आगण बीचा बेंठी दीस, घूघट काढ्या बीदणली ।  
गैणा गाभा मोह घणौ है, दिन खोलै नी रातडली 1623।
- बिन गणा रै रूप अधूरी, घोरा घरती बहवडली ।  
पहरचा ओढ्या मेळ जावै, हस हस करती वातडली 1624।
- घर घर गीत गण रा गावै, हेला देती गोरडली ।  
सायव बैठघौ बात समझल, पूग सोनी हाटडली 1625।
- हाथ पगा म गणी झणकै, वैंठी गजवण गाडडली ।  
मेळ गेला मायव दीस्या, मधरी गाव गीतडली 1626।
- बिन गणा र व्याव हुध नी, घग घरा म रीतडली ।  
सोन चादी टूमा चढता, पक्की होजा बातडली 1627।
- भूख तीस नै भूली बिसरी, वठी सोनी हाटडली ।  
गणौ घडती देख कामणी, मूडै दीस हासडली 1628।
- जद सासूजो गणौ सपै, वाछा खिलजा बीदणलो ।  
डोकर माच सूती दीस, पगल्या चाप गारडली 1629।
- गीत ढाळ सू मीठा लागै, गणी मीठी नाचडली ।  
बिन गणै रै नाच अधूरी, नी ऊठै है टागडली 1630।
- आघी राता ढोली आव, गणी घाल्या जेवडली ।  
रूठी मरवण राजी होजा, परख्या मोनल हारडली 1631।
- पाडोसण रा देख गणियो, करै ईसकी गोरडली ।  
आकड वाकड मिटै जीव मँ, गैणौ पररया हाथडली 1632।
- घूघरिया घमकावै फामण, भवरल आगै गोरडली  
घेर घाघरी देनी देती, नाचै गजवण घाकडली 1633।

- जणै गैणियो गजवण देखै, ठडी होजा आखडली ।  
मनडो तनडो दिखै सूपती, मूपै जीवा पूजडली ।634।
- गैणी गाठो मान दिरावै, राखै घर री लाजडली ।  
घन घान नै दिखै आम्ता, भिनख लुगाई गावडली ।635।
- घाया री सिणगार गैणियो, भूखी पावै रोटडली ।  
गणौ म्हारै जीव जडो है, विन गणै नी चनडली ।636।
- जणै गैणियो बिकती दोमै, घण आम् है आखडली ।  
गुम गुम वैठी दिखै आगणै, मूह उतारवा गोरटली ।637।
- गैणी हिवटै दूर करै नी, पेच डागर गतडनी ।  
विन गणै रै जीणो दोरो, कामण मूडै वातडली ।638।
- चोर डाकुवा वाचण सारू, गैणी वूरै घरतडली ।  
मग्ती-करती ठोड बतावै, डोकर कहती वातडनी ।639।
- गण री है साध मौकळी, झट दिरावै रोखडली ।  
अटक्या लटक्या काम हूवै है, आ है जग री रीतडली ।640।
- जै कामण री गैणो गुमजा, छूटै पाणो रोटडली ।  
आम्या आम् घारा चालै, जीव पडै नी चनडली ।641।
- साचो सायो गणौ म्हारो, कामण समझै वातडली ।  
जद आपतडी आन पडै है, दिख राखती लाजटली ।642।
- विन गण भरवण नी राजी जेलौ जाण वातडली ।  
मोका ठोका देती दोसै, ऊमी कामण तानडली ।643।
- मरणै परण गणौ राखै, गाव घरा री लाजडली ।  
बो'री रिपिया भटपट देवै, गैणो परम्या हाथडली ।645।
- चौमामै मै घोरा घरती, गणो फूला पाखडनी ।  
हरियाळी री चूदड ओडघा, मनडो मोव घरतडली ।646।

## गाभा

- रेसम कसणा कसी काचळी, माथे ओढी चूदडली ।  
असी-कळ्या री पहर घाघरी, घूमर घाले गोरडली 1647।
- सोनल-चादल जडी कनारा, बीचा फूला पाखडली ।  
सासरिये न लाटल चाली, घूघट काडधा लूगडली 1648।
- पवरी ओदघा वंठी दीसे, आगण बीचा वीदणली ।  
भिलमिल झिलमिल दिखे चिलकता तारा ऊपर ओढणली 1649।
- रग रगीला गाभा पहरघा, कवरी कवरी छीटडली ।  
हरख कोडे मेळे चाली, काजळ घाल्या आखडली 1650।
- हाट हाट पर विकती दीसे, आटी डोरा कागसडी ।  
व्याव तिवारा पहरण सारू, लेती दीस कामणली 1651।
- नूवा गाभा अतर लगायो, मेळे टुरगी गोरडली ।  
हीडा हीडे आज भाजे, खिलका करती साथडली 1652।
- सायवजी री नाम लेवता, कामण लागे लाजडली ।  
हाथा ऊपर नाम खुदावे, मेळा ठळा वहवडली 1653।
- टुब्या काचळी रिपिया घाल्या, पल्ल वाधी राखडली ।  
चौज-बुसत लेवण रे खातिर, टुरी चौवटे गोरडली 1654।
- काच घालिया कोट पहरले, भीणी ओढी ओढणली ।  
आस पास चिलका मारै, जद वहवे है कामणली 1655।
- वडी पहरया ऊभो दीसे, करसो बीचा गावडली ।  
व्याव टाकल वागी पहर, वेटी घोरा घरतडली 1656।

काळा डोरा वाध्या सूत्या, पीग टावर गावडली ।  
 मावड वठी हीडा देव, गीगी लेव नीदडली ।657।  
 कामण गोदचा दिखे गीगली, पहरचा भुगली टोपडली ।  
 पूत तणा ही मान घणी है, घर-घर गावा बहवडली ।658।  
 मोत्या लाला जडी इढाणी, माथे राखी गोरडली ।  
 पाणी घडिया लाती दीस, घर-घर कामण गावडली ।659।  
 व्याव अंढ गाव डावडव्या, पहर घाघर कुडतडली ।  
 माथ ऊपर केस गूथिया, टिरती दीस चोटडली ।660।  
 नुई अगारखी पहरचा ऊभौ, माथे वाधी पागडली ।  
 गाव आतरा मिलवा चाट्यो, हाथा लीया डागडली ।661।  
 बुढा-बडेरौ ऊची धोती, गवरु नीची अडडली ।  
 बुढ्या-बडेरचा घावळ पहर, लेंगी पहर वीदणली ।662।  
 अतर फवलिया काना टाग्या, काधे लीनी पोटडली ।  
 सासर न चाल्या भवरजो, चड चू वोल मोजडली ।663।  
 न्हाणो घोणो ताल तळावा, गाभा सूक झाडकडी ।  
 पाळा माथे ऊचो ऊभौ, मारं लाग घोटडली ।664।  
 कोट जेव मै घाल रमाली, वण ठण ऊभौ टीवडली ।  
 राठोडो फटे न वाध्या, बटडा देव मूछडली ।665।  
 काध माथे गमछो धरिया, सायव ऊभा टीगडली ।  
 साटण गाभा पहर कामणी, मेळ टूरणी सायडली ।666।  
 सिरख पथरना वणवा खातिर, मल्लमल लोनी हाटडली ।  
 सीयाळें मै आट्या सूत्या, घर घर साथी साथटनी ।667।  
 पिणहारी पाणी न चाली, धरिया माथे वेवडली ।  
 नाव कोराय सायवजी रौ, पहर रैसमी कुडतडली ।668।

## वियोग

हू विसरावू जीव न विसरै मिणघर धारी यादडली ।  
लाख जननडा कर-कर हारी, जीव पडे नी चनडली ।669।

गाला माथ आसू ढळवया, वाजळ वहग्यो आसडली ।  
रोता रोता नण मूजग्या, सूनी दीस्या सैजडली ।670।

वीज पळा पळ<sup>1</sup> दिघ सीवती, वरस वादळ धावडली ।  
त्रिन डोल रै मरवण रोवै आसू चाल धारडली ।671।

जोवन झाला साती दोस चोळी टूटी डोरडली ।  
पळ पळ कर विलाप<sup>2</sup> कामणी, अकल सूती सजडली ।672।

लोक<sup>3</sup> वणोडी दिख गाव मै, बिना भवर र गोरडली ।  
आसूडा न पीती पीती, भूली पाणी रोटडली ।673।

पीव दिसावर जाय वस्या है, झुर झुर मरगो कामणली ।  
जोध<sup>4</sup> जवानी रळ रेत म, हाजै पडगो सोनडली ।674।

घोरा माथ मेही वरसै, विरहण वरसै आसडली ।  
सुवक्या<sup>5</sup> खा-खा दिखै रोवती, बठी कामण भूपडली ।675।

रात बिराता आख खुल्या सू, बट्ट पड नी आघडली ।  
घटी घमडवा देती-देती, दिन ऊगावै गोरडली ।676।

1 बिजली का चमकना 2 डोरी 3 रुदन 4 सूख करलीक  
की तरह हा गई है 5 भरपूर 6 हिचकी के साथ रोने की क्रिया ।

रात हाथ छाती पर आया, कामण खुलजा आखडली ।  
वीती वाता मनई उलभै, रोवै आखी रातडली 1677।

आसू नाखै डुसका<sup>1</sup> खावै, वैठी मूमल टीवडली ।  
गाभलिया काटा मू फाटचा, लीरचा लटकै चूदडली 1678।

मूमल ऊभी वाटा जोवै, भवर दिखै नी आखडली ।  
मेटी चढ-चढ भाका घालै, कर-कर ऊची अेडडली 1679।

मारू गया नी बावडचा<sup>2</sup> है, जुग वीत्या दिन रातडली ।  
विण जनमा री वर<sup>3</sup> काटियो, कहता जाता वातडनी 1680।

रिघरोही र वीचा ऊभी, छोडी छिटकी गोरडनी ।  
रख वाठवा वीचा भटक, ठोकर खाती मूमलडी 1681।

घळना-वळता<sup>4</sup> आसू पीन, विरहण वैठी घरतडली ।  
वाळजिये मै ठाना पन्म्या, विन नोले रै मरवणली 1682।

गुण्ण अधारी काळी राता, गिणै तारिया मूमनडी ।  
लोट-पोट मार्चै पर गुडकै, सै पसवाटा<sup>5</sup> ईसटली<sup>6</sup> 1683।

मुघ-नुघ भूली मूमन वैठी, मन सू करती वातडली ।  
बागण वीचा अकल तैठी, धरिया हाटा आगळडी 1684।

प्रेम रोगडी घुळघा जीव मै, ज्यू घुळ जावै सावरडी ।  
रात दिना न गिणता-गिणता घिसी हाथ री रेगडली 1685।

केस विसेरधा वण बेरागण, छोडी काजळ टोकडली ।  
विन मिणगारा दिखै अडाळी, छैन भवर री मूमनडी 1686।

विन मारूजी मूमन भटक, यली<sup>7</sup> देस रा घरतडली ।  
दु सडौ म्हारै जोवा लाग्यो, कामण मूड वातडली 1687।

1 विषक तिमक कर रोना । 2 वापस आना 3 हुमनी 4 गम-गम  
5 करवट 6 साट की इम 7 महस्यल



सैजा री सिणगार न आयो, माभल बीतो रातडली ।  
 फूलवनी री जोवन भटवै, उडी आख सू नीदडली । 688।  
 जिण दिस वानी वसै भवरजी, कामण लेव पूनडली ।  
 आस्या मोच्या दिखै मुळकती, रमी<sup>1</sup> पीव री यादडली । 689।  
 प्रीतडली रा गीत सुण्या सू, जीवा लागै आगडली ।  
 बळ-बळ काया राख हुवै है, घुट-घुट मरगी गोरडली । 690।  
 भर सियाळै राता लाबी, इमरत न्हास चानणली ।  
 जोवन फाटै है गोरी री, विन सायव जी रातडली । 691।  
 उमड्या आसू दिखै थामती,<sup>2</sup> सूनी दीसै आखडली ।  
 पीव याद आसूडा बह्या, किण विद जीसी गोरडली । 692।  
 जीव हिळोळा<sup>3</sup> दिखै खावती, सुणिया मोरा वालडली ।  
 सावणिय री तीज सायत्रा, घण जोव है वाटडली । 693।  
 घणी रपाळू<sup>4</sup> याद आवता, दिखै साच मै कामणली ।  
 रूपल सोनल गूगी वणगी, छाड्या पाणी राटडली । 694।  
 रखडी रो उज्जास<sup>5</sup> सायत्री वसियो दूजी गावडली ।  
 छैल भवर विन चन पडै नी, घरा गाव म गोरडली । 695।  
 मदछकिय<sup>6</sup> र विना सदेस, दिन जीत नी रातडली ।  
 ठडी सासा दिखै छोडती, अकल वैठी कामणली । 696।  
 वाळ पणै री प्रीतडली म, घुळती दीस मरवणली ।  
 विन ढोल र जीणौ दोरी, जीवा वसगी वातडली । 697।  
 सूजी आट्या बोझल पलका गूगी वणगी मूमलडी ।  
 हेताळ<sup>7</sup> विन हियौ नाखद्यौ, कामण बठी भूपडली । 698।

1 लीन हाना 2 रोकता 3 आन द की लहर 4 सुदर पति  
 5 उजाला 6 मद स परिपूण पात्र भरा हुआ 7 पति

सावण वादळ रिम विम बरसै, सुगधा हेला माटडली ।

हिवडें खिडक्या दै झपटारा, झर-झर रोवै गोरडनी ।699।

सावण महिणें विरहण देखै, चढ-चढ ऊपर छानडली ।

आभी गळें लागती दीसै, वाया भरती घरतडली । 700।

भर जोवनिय सावण आयी, भवर ऊडिक कामणली ।

ठडो वायरा मधरी चालै, जीवा लाग आगडली ।701।

भोता माथै काग वळ्खै, भाला देवै गोरडली ।

काग उडाती सुगन मनावै, राजन आसी गावडनी ।702।

कागनिय सू वाता करती, दिख कामणी भूपडली ।

आटीली भरतार मिला दै, मोत्या जड सू पाखडली ।703।

फनवनी जी पाळा ऊभा, आम्ब्या निरखै डाडडली ।

आलीजी घर गावा आसी, साथै लीया हारडली ।704।

हिचकी मूडे वसी कामणी, वर मस्करी साथडलो ।

कुण न चितार दूर देस म, हसती पूछै उनडली ।705।

कानूडी लेवण नै आसी, चढिया ऊपर सादडली ।

मुकळान री आस लगाया, काटें दिन भर रातडली ।706।

पहलो सावण पीहर वठी, जीवा आकड बाकडली ।

गाव घरा री रीतडली है, कामण जाणें वातडली ।707।

गजवण पात्या दे-दे हारी, सण<sup>2</sup> सुणी नी वातडली ।

परदेसा मँ मौज करै है, सुवै सोक री गोदडली ।708।

केसरिया बालम घर आवी, सावणिय री तीजडली ।

त्रिना सायवै भटका खावै विरहण धोरा घरतडली ।709।

1 वरसात के त्रिती मे घरती और आकाश दोनो ही सुंदर लगते हैं ।

ये दोनो विरहण की ऐसे लगते हैं मानो पुरुष और स्त्री दोनो

बाप भर कर मिल रहे हो । 2 पति

झिर मिर-भिर-मिर मेही वरसै, ठडो चालै पूनडली ।  
 पीव याद जद फोडा घालै, डुसका रोवै गोरडली । 1710।  
 बाध बाछडा मार काछडा, चढगी ऊची खेजडली ।  
 ऊची चढ पिवजो नै देखै, सूनी दोस डाडडली । 1711।  
 पगल्या पायल कणा सुणूता, याद वर दिन रातडली ।  
 दूर दिसावर<sup>1</sup> ढोलो बठचौ, जीव बसी है गोरडली । 1712।  
 घन जाया सू पूठी आजा, जोवन जाया डोकरडी ।  
 ढोला म्हारी बात सुणो यै, मत छाडी नी भरवणनी । 1713।  
 काम काज म दिनचौ काट, नीद न आव रातडली ।  
 भूली बिसरी आख नागजा<sup>2</sup>, सुपनी देख गोरडली । 1714।  
 आळ जजाळ<sup>3</sup> वनजो<sup>4</sup> आव, मीठी वरल बातडली ।  
 मनड री मनवारा<sup>5</sup> करिया, छेत्रो पोढ सजचनी । 1715।  
 सुपनी टूटचा कामण देख, सूनी सूनी सैजडली ।  
 मीठा मारु याद आवता, डुसका रोव मूमलडी । 1716।  
 दिन मै बठचा चकवी चकवी, दिख लडाता चाचडली ।  
 रातडली मै हुय बिछोवी, रोत्र<sup>6</sup> बठचा खजडली । 1717।  
 चकवी वनड थू भागण है, कत सुण है बातडनी ।  
 चुडलै रौ सिणगार दिसावर, अकल रोवू साथडली । 1718।  
 गाय भसडी धीण रळगो, ग्यावण दोस भेडडली ।  
 कुरजडली रातू कुरळाव<sup>7</sup> कामण समयै बातडली । 1719।  
 वावल वेटी घन रा लोभी, गाभा लोभण भावडली ।  
 सैजा लोभण कामण विलखै, लाडी जाया चाकरडी । 1720।

1 प्रदेश 2 नीद आना 3 स्वप्न 4 पति 5 मनवार 6 चकवी  
 चकवी रात्रि म कभी भी साथनही रहते हैं । रात भर दोनो इग दु ख  
 के कारण रोते रहते है । 7 दन् से व्याकुल होकर ध्वनि करना

## जूझार

इण माटी रा पूत निराळा, जलम काटा भूरटडी ।  
 ठौड ठौड पर राज कियौ है, किला बणाया टेकडली 1721।  
 रेकारौ<sup>1</sup> है गाळ बरोवर, घीव पड्यौ ज्यू आगडली<sup>2</sup> ।  
 रासी आर्या उठै पलीता, भोवा रळगी मूछडली 1722।  
 घोडलिया असवारा चडिया, ऊधी कान बनोतडली ।  
 ऊची डूगरघा<sup>3</sup> किला जीत, भाली लीया हाथडली 1723।  
 जुद्ध घमसाणा लडे सूरमा, दिन देखै नी रातडली ।  
 सूभू बूच ताकत रँ ताणा, वीरा लीनी जीतडली 1724।  
 ऊट पलाणा कसिया ऊभा, कमर बाघली ढालडली ।  
 वार चढोडा लडे सूरमा, दुसमी छोडे काकडली<sup>4</sup> 1725।  
 डर डाकर सरा नी जाणी, वजरा राखी छातडली ।  
 राज काज हीम्मता रा भाई, हिवड राखी बासडली 1726।  
 सूरा खाण्डौ अळन पळक, ज्यू आभ म वीजडली ।  
 ललकारा सू धरती धूर्जे, दुसमी भीच आखडनी 1727।  
 ठौड ठौड पर घाव दिख है, सूरा मूड हासडली ।  
 राणी ऊभी लेप लगाव, घस घस नीमा पत्तडली 1728।  
 पग पग घोडा मरघा पडचा है ऊटा टूटी टागडली ।  
 जूझारा<sup>5</sup> री खडग<sup>6</sup> बालिया बिछगी ल्हासा धरतडली 1729।

1 तूतडाका 2 आग 3 पहाडी 4 राज्य की अंतिम सीमा  
 5 परोपकार के लिए युद्ध करके वीरगति पाने वाला, जो बाद में पूजा जाता है। 6 तलवार

कटता माथा दिखै मोकळा, रण मैदाना घेतडली ।  
 किरची-किरची<sup>1</sup> डील<sup>2</sup> दिखेरघा, खिडी पडी है हाटडली<sup>3</sup> । 1730।  
 रणभरी काना म पडता, बटडा देवै मूछडली ।  
 नाका सू फूफारा चालै, राती दीस आसडती । 1731।  
 हरावल<sup>4</sup> म सूर ऊभा है, लडसी सामी छातडली ।  
 वव बोल्या मू खिड भोडका<sup>5</sup>, खाडै तीरी धारडली । 1732।  
 रण वाकटला दिखै सामनै, दुसमी धूज टागडली ।  
 वायर वायर डरता भाजै, लुकता दीस भूपडली । 1733।  
 बारु डोल<sup>6</sup> जद सुण्यी सूरम, हाथा थामी बीजडली ।  
 भुजा फडूकै मूछा तणगी, हिण हिणाव घोडडली । 1734।  
 रण मैदाना बीचा ऊभा, लड सूरमी प्राकडली ।  
 तलवारा सू दुसमी सूत, सूनी करदै धरतडली । 1735।  
 दुसमिडी जण दिख सामन, दाता पीसै घट्टडली ।  
 जुद्ध खेतर<sup>7</sup> री खेह उडघा सू, सूरज डबजा<sup>8</sup> बादलडी । 1736।  
 वव बोलता टुरघा मूरमा, छो<sup>9</sup> पथरना माचडली ।  
 पुरस्यो थाल आगण छाडची, सजा छाडी गोरडली । 1737।  
 जिणरी लूण खायी सूरम, सूपी जीवा पूजडली ।  
 मरणी जीणी हाथ सावरै, बीरा मड वातडली । 1738।  
 बीरा मा'रा दिख न चिगदा तीर पायल छातडली ।  
 मूह माटणी सूर न जाण, हसती ललै मातडली । 1739।  
 खूना सू गाभलिया रगिया, राती दीस हाथडली ।  
 विन माथै र लड जुझारू, रण मदाना धरतडली । 1740।

1 छोटे-छोटे टुकडे 2 शरीर 3 हड्डी 4 सबसे आगे 5 सिर  
 6 युद्ध प्रारम्भ होने से पूर्व बजने वाला डोल 7 मदान 8 छिपना

आण-वाण राखण रै खातिर, थू समझी नी मीतडली ।  
 रेतडली मै जलम्यौ बेटौ, राखै लाजा मावडली ।741।  
 जणै किलै रौ फाटक खुलजा, सूरु हाथा वीजडली ।  
 खा किडकडी पडै भाईडा, खिर भोडका धरतडली ।742।  
 वाळपणै मै सुणी वातडी, वसगी वीचा हीवडली ।  
 बैरघा सू जद छिडै लडाई, करती दीसै साचडली ।743।  
 किरकै साथ जीव जीवसी, वीरा वाता वाकडली ।  
 हियौ हाखणौ कायर जाणै, कण-कण गूज रेतडली ।744।  
 फेरा होता सुणी वातडी, दुसमी आयौ काकडली ।  
 गोरी घण न छोट जुझारु, लडती दीस घाकडली ।745।  
 वडा वडा जोडा नै मारघा, पगा पागडै जीतडली ।  
 उमरावा री भीड दिखै है, नीची करिया आखडली ।746।  
 साथिटा जद रळ मिळ चाल, गाव चूकलै रोकडली ।  
 घरा-घरा मै राज वाज है, धूसौ वाज गावडली ।747।  
 अजळ पाणी जठै लिखोडा, वीरा डेरा धरतडली ।  
 आस पडोसी मुख सू रहलै, किला धरपलै टेकडली ।748।  
 मरुधरा री काकड ऊभी, पातळ देवै सीरडली ।  
 सीस काटै पण भुक न भाई, वाता राखी हीवडली ।749।  
 घोरा धरती सदा सिखाई, धरम करम री वातडली ।  
 छल कपट सूरु नी जाणी, लडै लडाई साचडली ।750।  
 बिना सिपाया राज रहवै न, राजा जाणी वातडली ।  
 सिध देस सू आय सिपाई, वसग्या घोरा धरतडली ।751।

1 प्रचलित है कि थळी के सामंतो ने अपने छुट भाईयो के विद्रोह से  
 आतंकित होकर सिध के सिधौ सिपाहियो को अपन यहा आमंत्रित  
 किया । इनकी सहायता से स्थानीय विद्रोहों को बुचला गया । कालांतर  
 में राजाआ ने भी इस उद्देश्य से अपनी सेना में सम्मिलित कर लिया ।

काकी भतीज रळ मिळ राखी, वीकाण रो नीवडली ।  
 रातो घाटी आय धमकिया, झण्ढी रोप्यो टक्कली 1752।  
 वीकोजी रो घाका सुणता, दुममी धूज टागडली ।  
 घोड चढियो लड सूरमी, भाली तीया हाथडली 1753।  
 रायसिध रो राय बिना सू, मुगल करे नी वातडली ।  
 वीकाणो भारत पर छायो, वीरा हाथा जीतडली 1754।  
 करमचद जिसो दिख न दिखसी, वीकाण रो धरतडली ।  
 सूभ वूझ रो घणो घणो हा, धरमा राखी वातडली 1755।  
 करणसिध रो चाली कुवाडी, टूटी फटी नावडली ।  
 औरगजेव मना मे रहगी, वीरा लीनी जीतडली 1756।  
 करणो वटो भली जलमियो, धारलिया रो धरतडली ।  
 जय जगलधर वादसजा रो, पदवी लीनी धाकडली 1757।  
 पदमसिध सो वीर जलमियो, देस जागळ टीकडली ।  
 भारी खाण्डी जुद्ध म चाल, विछती दीस त्हासटळी 1758।  
 अनूपसिध है कला पाखी, रुद्र वीणा हाथडली ।  
 जुद्ध मैदाना खाण्टा चाले हसती रेल जीतडली 1759।  
 वीकाण म रतनसिध जो, राज कियो है धाकडली ।  
 जवारजी न घरा राख अर, वीरा राखी माघन्ला 1760।  
 गगी वावा धाकड तपिया, वीकाण रो धरतडली ।  
 छोटा मोटा याद कर है, हरख भरोडी वातडली 1761।  
 करणसिध रे हाथ वटूका, गाळी चाल साचडली ।  
 विदेसा मे धाकक जमाई, लाजा रावण भावडली 1762।

## अमरसिंघ अर दुर्गादास

- चुगलखोर जद मिळै सामने, भाषी काटै बीजडली ।  
अमरसिंघ री तज कटारी, घसी<sup>1</sup> सलावत छातडली 1763।
- अमरसिंघ सरगा मै पूग्या, नागानै म रातडली ।  
हाडी राणी वेस खोलिया, ले तलवारा हाथडली 1764।
- पळका मारै खिव बीजळी, हाडी खाडै धारडली ।  
दुसमी माथै पडै कडकती, विसरै लहासा रेतडली 1765।
- दुरगौ घाडै चढियो चालै दिरली धूजे घरतडली ।  
बडा बडा उमराव हारग्या, वीरा हाथा जीतडली 1766।
- दुरगा तुरियो- सरपट भाजे, दिन देग नी रातडली ।  
जोघाणे मै आय भाइटी, झडौ रोप्यी टेकडली 1767।
- चाड घाड दुरगी फिरलै, हाथा लीया बीजडली ।  
जीरगजेव खात्रे मरोटा<sup>2</sup>, खाली हाथा मूठडली 1768।
- घर रत्नवाळी<sup>4</sup> दुरगौ म्हारी, जसवत कहग्या बातडली ।  
आसकरण री पूत जहडौ<sup>5</sup>, करग्यी बाता साचडली 1769।
- दुरग जिसडी पूत जणी थू<sup>6</sup>, घर घर गावा वातडली ।  
अणहोंणी नै होणी<sup>7</sup> करद, बेटौ धोरा घरतडली 1769।
- मुगल वादसा मूड खायी, दुरगौ लीनी जीतडली ।  
वीर तणा<sup>8</sup> ही सदा रही है, मरूधरा<sup>9</sup> री लाजडली 1770।

1 घुतना 2 घोडा 3 ऐठना 4 देखभाल करन वाला 5 जैसा  
6 तू 7 न होने जसी बात कर दिखता दना 8 बल पर 9 रेगिस्तान



## खीवौ आभल\*

खीवसिध मरणा नी समझ, कडक दिखाव हाथडली ।  
रण वाकडली आभल निरख, ऊभी ऊची टीवडली ।771।

आभल आग्या मिली खीव सू, सूपी जीवा पूजडली ।  
कामण ऊभी हला देव मत छोड्या थ साथडली ।772।

खीव हाथ हाथ सू थामची, सागन मूड वातडली ।  
मरणी जीणी साथ कामणी, नुई घरपस्या गावडली ।773।

आभल खीव वाता सुणता, झाल जीवा आगडली ।  
फौजा साथ चडियो आन, भाली थामचा हाथडली ।774।

टिड्डी दल ज्यू फौज आव है, खीव देसी आखडली ।  
जूभाए री भुजा फडूकी, हावा थामी बीजडली ।775।

साव अकली खीवौ ऊभी, भाला फौजा साथडली ।  
गाजर मूळी दुसमी पाटघा, आधिर लीनी मौतडली ।776।

खीवसिध बबला री पक्की, मरता मूड हासडली ।  
गोदचा माय सूत्यी सूरमी आभल बठी आगडनी ।777।

कत खीव बिन मित्या सू रहगी, आभल आसू आखडली ।  
सरगा बीचा ढोली मिलसी जीव बसी है वातडली ।778।

आभल खीवा दानू सूत्या मीठी लेता नीदडली ।  
प्रीतडली रा गीत बस्या है, धारा धरती गावडली ।779।

\* खीवसिह और आभल म प्रेम हाने की बात झाले को पसंद नहीं आयी इस पर वह फौज लेकर खीवसिह स लडने आया । अत म खीवसिह मर जाता है आभल उसक साथ सती होती है ।

## डूंग जवारी\*

- होळी आया मद छकियो है, वैठयो ऊपर जाजमडी ।  
ठुकराणी री तानी सुणता, स्स री फाटी आखडली ।780।
- काकी जेळा पडयो सड है, मिनखा राखी लाजडली ।  
तलवार नै सूपी सूरमा, पहरो चूडचा हाथडली ।781।
- करणो लाटियो किसनो नाइ, बीडी थाम्यो हाथली ।  
डूंगजी जणे घरा आवसी, मीठी लेसा नीदडली ।782।
- अडगम वडगम गीता बीचा, सुणी डूंगजी बातडली ।  
भद जवारी लियो फिरगी, लूट मचाई घाकडली ।783।
- सेखाण म डूंग जवारी, लाजा राखी घरतडली ।  
आगर मै काट वैडक्या, ली तलवारा हाथडली ।784।
- काकी भतिजा नाहर बणग्या, खाली होगी हाटडली ।  
बीच बजारा सेर फिर है, सूनी दीसै डाडडली ।785।
- डूंग जवारी रक न रुकसी, दुसमी फाटी आखडली ।  
गौरा थारो लूट छावणी, आग्या घर री गावडली ।786।
- जागळ देस आय जवारी, सुख सू काटी रातडली ।  
भटका साती फिर फिरगी, बीकाण री वरतडली ।787।
- डूंग जवारी घणा दतारी, घर घर सुणल बातडली ।  
गरीब गुरवी सुख सू रहलै, जुलमी लुकजा भपडली ।788।

\* शेखावाटी म डूंगजी जवारी घाडवी हुए हं जि हाने अंग्रेजों का नसीराबाद स्थित छावनी को लूट कर तहलका मचा दिया था । इनकी वीरता के गीत आज भी गाये जाते हैं ।

## कोडमदै

- कोडमदै कोडा सू चाली, छोड घरा री गावडली ।  
सादुलसिंघ टाळ र साथ, हाथा धाम्या वीजडली 1789।
- अरडकसिंघ अरडाती आव, रोकी वीचा डाडडली ।  
सादुलसिंघ री भुजा फडूकी, खाड पळकी धारडली 1790।
- कोडमद भट पडदो खीच्यो, मिळो आख सू आपडली ।  
मार अडक न पूठो आवू, सादुळ व्हव वातडली 1791।
- वजरा छाती दिस वीर री, मूड वाकी मूछडली ।  
घोडं अेडी दिया जुभाए, उडती दीस व्हेहडली 1792।
- हूकारा सू धरती घूज, लड सूरमा धानडली ।  
अतटा पलटा खाता दीस, ऊपर पडिया धरतडली 1793।
- घोडा मरिया पट्या दिम है, बिखरी दीम त्हासडली ।  
दानू जावा लडता दीस, ऊभा ऊची टीबडली 1794।
- खाडै भपटा लाय पलीता, दिग फाटती चामडती ।  
सून तुतकिया दिस छूटता, लाल हुई है धरतडली 1795।
- ठीड ठीड पर घाव दिस है चाटै सूत्या रेतडली ।  
सादुन वीर दो टूक हायी, अरडक लीनी मोतडली 1796।
- अेक हाथ सासुन भेज्यो दूजो भेज्यो मावडली ।  
चिता सजाया कोडम वठी, सादुळ सूत्या गोदडली 1797।

\* कोडमद की गादी अरडकसिंह स तय धी परंतु सादुलसिंह स प्रम  
हाने पर गादी सादुल से हुई। अरडक ने सादुल से लडाई लडी।  
सादुल मारा गया। अरडक भी कुछ समय बाद मारा जाता है।  
कोडमद सादुल के साथ सती हा जाती है।

## क्यामखाती\*

- क्यामखा र जलम लेवता, हरख मनाव रेतडली ।  
दिली वादसा हेला देव, पलक विछाया आखडली 1798।
- नागाण म जीत क्यामगा, पूग्या दितली वाकडली ।  
दुसमी फौजा दिख भाजती, खाडे पळक्या धारटली 1799।
- ताज, मुहम्मद लडे मूरमा, दुसमी धूजे टागडली ।  
राणो मोहन डरती भाज्यो, छोड मरु री धरतडली 1800।
- फनेपुर मै राज थरपीयो, झडी लीया हायडली ।  
फत्तेखा री फत हर्ड है, धूसो वाजे गावडली 1801।
- फत्तेखा री फौजा साथ, जोधा दीस धाकडली ।  
त्रिन माथे र लडे जुभारू, बहुगुण ऊभो टीवडली 1802।
- नाहरखा जी नाहर वणग्या, दिख तोटता दातडली ।  
पवारा री हिरडे काड दी, लीनी हाया जीतडली 1803।
- दौलत खा धरमा रा पक्का, रहम वसघो है हीवडली ।  
जुद्ध मदाना दिख घाडतो, दुसमी धूजे टागडली 1804।
- सुंदर दास जी मुनी तापिया, सेखाण रा धरतडली ।  
दौलत खा जी भर हाजरी, बाघ्या तोन हायडली 1805।
- अलफ खा जडो वीर जलमियो, सेखाण री धरतडली ।  
डरती राणो अमर भागियो, मूरा चाल्या वीजडली 1806।

\* उपरोक्त वणन कवि जान द्वारा क्याम खा राम्सा में वणित काव्य पर आधारित है ।

## बाकडली

मरु देस में गवरू ऊभौ, चोडी ऊचो छातडली ।  
रु भरौडी सीनो दीस, भारी मूछा बाकडली ।807।

इसडी मूछा कठ न दखो, जिसडी जेसा गावडली ।  
गोळ चकरिया गाला माथे, दिख चेपती हाथडली ।808।

पट्टा लवणी गेल रचावे, छुरी कटारी धारडनी ।  
अलटा पलटा खाती दीस, रमता घाल धाकडली ।809।

कचडी रमता दिख भाइडा, चादलें री रातडली ।  
अेव दुज री टाग पकडती, पटक दिखावें रेतडली ।810।

गाव गाव मू गवरू आवे, कुसती होडा होडडली ।  
जीताडा में उछव माकळी, घमचक मचजा गावडली ।811।

रीत पात रूखालण सारू, गवरू ऊभौ टीवडली ।  
छोटा मोटा सुख सू रहवे, मीठी लेता नीदडली ।812।

वातडली रा घणा घणी है, हसता लेल मीतडली ।  
मूण्टे वाल्या फुर न भाई, घोरा धरती रीतडली ।813।

मोटें चाड लूण घोळियो, सौगन लेवें हाथडली ।  
मरुधरा रा वेटा पक्का, बाता राख लाजडली ।814।

जोग माय री सौगन खालें, वीरा बाता बाकडली ।  
जुद्ध मदाना साची करदें, वेटी मरुधर धरतडली ।815।

I एक बडे बरतन में नमक घोल कर सब हाथ डालते है और वसम लेत हैं कि अमुक काय करते समय पीछ नहीं हटेंगे ।

भिडमल इसडा दिख न दिखसी जिसडा घोरा धरतडली ।  
 जूझारा नै जलम दियो है, मरुधरा री वटडली 1816।  
 रण म पूत मर जामण री, दिख न आसू आखडली ।  
 काळजियौ पत्थरा री करती, किरकौ रागै मावटली 1817।  
 जीतण खातर थू जूझेला, मावड देव सीखडली ।  
 धरती मा री लाज वचावण, जीत्या रहसी बातडली 1818।  
 गाव लाजडी राखण सारु, मोह कियौ नी गोरडली ।  
 हसती हसती मौत देखलै, घर घर गावा वहवडली 1819।  
 हथलेव मै मरवण परखी, सेरा वेटा हाथडली ।  
 सिंघणी वेटो सेर जण है, घोरा धरती वीदणली 1820।  
 घोरनिया र माथे ऊभी हेला देवै मरणली ।  
 ज सेरणी दूध पीयी है, वें री वण सू लान्णडी 1821।  
 खग तणा ही जीव जीवसी, वीद ढूढल वाटली ।  
 वीरा साव मरणौ जीणी, वाता राखी जीवडली 1822।  
 वेटी जलम लेवती सुणल, आण वाण री बातडली ।  
 मावड सूती गीत सुणाव, दूधा राखी लाजडली 1823।  
 ढोल सू जद व्याव हुव है, अरखै परखै मरवणली ।  
 मूर कत तिन मरणौ चोखी, हिवड वसगी गोरडली 1824।  
 व्याव सूर सू पकरी होजा, वीर दिसावर चाकरटी ।  
 खाण्ड फेरा होता दीस, गाव घरा री रीतडली 1825।  
 वीर पेमजी लडती दीस, वीकाणै री धरतडली ।  
 गिरधर जी नागाण ऊभा, बीजळ लिया हाथडली 1826।

1 मरुधरा के वीर वर्षों तक दूर देश में युद्ध करते थे । जिस हथौड़े के साथ मगनी होती थी उस के साथ वीर की तलवार के साथ शादी कर दी जाती थी ।

## भेडा

इसरो विगरी भेडा चरती, पास राघे नेतडली ।  
अवाडियो मेडी न लीया, ऊभी ऊचो टीवडली ।827।

अवड चरती दिखे चालतो, पात वचे नी घासडली ।  
पगा मडोडो घरती दीस, मूनी दीम रोहिडली ।828।

ढळता सूरज अवड आवे, वठ ऊपर रेतडली ।  
भेडा सूती नीदा लेव, पोरी देव कुत्तडली ।829।

टीरे मावे ऊभी भेडा, ठडी खाव पूनडली ।  
दै हडवच्या, चूग उरणिया, वोवा चूस जीभडली ।830।

पळस भाग अवड बैठघो, दै फटकारो पृछडली ।  
ठोड ठोड पर वादो-वीचड, विलरो दीसे मीगणली ।831।

ऊन कतरिया भेडा मोडो, मा रा उपर चूसडली ।  
राती राती ऊन दिखे है, रगदै घर मं साघडली ।832।

भेडा मूडो रुक न रुकसी, दिन देखे नी रातडली ।  
मूडे चरती हेठ हगती वी नी छोड घटडली ।833।

धूळ बतूळा उड गिगन म, जेवड आवे गावडली ।  
भ भ वरती भेडा आव, वठ घर री वाखळडी ।834।

होणी लरडी हियो न्हाखद, नी ऊठ है टागडली ।  
वाध माथ लादचा लाव, पूग उतारै गावडली ।835।

मादी तातो भेडा दीस्या, छोडे घर री झूपडली ।  
आधी होया नाच झूद, अवड रळजा घटडली ।836।

मैल ऊनडी वाटा जमगी, कीचा बठचा घेटडली ।  
च्यारू पगडा लिया हाथ मै, गोता घोवै ऊनडली 1837।

तीसा मरती अेवड आवै, पाणी पीवण नाडडली ।  
होळ होळ पगल्या धरती, कीचा माडै छोटडली 1838।

रात अधारी आधी चाल, अेवड भटकै रोहिडली ।  
खेजडल री ओटी लीया, काटै आखी रातडली 1839।

भेडा लारै भेडा चाल, तळ देखै नी नाडडली ।  
अक दुजै री लारी झाल्यी, पडता टूटै टागडली 1840।

चिरमी जैडी आट्या चमकै, लाय पलीता आगडली ।  
आपसरी मै माथी जोडचा, बठ ऊपर टीवडली 1841।

दिन दोफारा त्याळी बठचौ, नीदा लेवै घुरकली ।  
आधी राता वर सिकारा, घाटी दावै भेडडली 1842।

भेडा दुसमी दिख हारियो, आव आवी रातडली ।  
मो'रा माथ लाद घेटडी, ल जा लार भाडकडी 1843।

हाथ चमकणी घेटी बाव्यी, मत्यी ऊचो टीवडली ।  
दळती रात नाहर आवता, झटकी लाग हाथडली 1844।

अवड बीचा पूग हारियो, दाता घीसै घेटडली ।  
कुडकी कडकै पगडौ फासै, मूड निसर चीखडली 1845।

जे अेवड मै रोग फलजा, मरती दीसै घेटडली ।  
काळजियो छूरी सू छूनै, घालै काना छतडली 1846।

वाजरलै रा सागर पोया, दूधा चूर रोटडली ।  
रिधरोहो र बीचा बठचौ, चूलै राधे खीरडली 1847।

खाली याळी देस साथिटी, भरदै दूधौ भेडडली ।  
गवरू ऊभौ दिख पीवतो, फेर मूछ पर हाथडली 1848।



ऊचै टीव माथ दीसै, दू'ती ऊमी भेडडली ।  
दूध धालवा दोणी करियो, तोड आव रो पत्तडली ।849।

अवड वीघा रहती-रहती, छोडी घर रो लाडलडी ।  
बदै-बदासा घर मै आव, पूठी पूग रोहिडली ।850।

अवड म दिन रात रहवती, भूल्यो घर रो रीतडली ।  
भेडा भेळी रहती रहती, सीर्यो चाला भेडडली ।851।

काधै माथ रली राखली, हाथा लीनी डागडली ।  
घर कूचा घर मजला करती, पूग दूजी गावडली ।852।

अलगोजो रोही म गूज, मीठी छोडै तानडली ।  
ऊच टीवै बठ बजाय, गवर धाम्या हाथडली ।853।

मीडलिया भेटघा सू भेटै, कर कर ऊची टागडली ।  
रेवारी जद दूर निक्कजा, अेव देखल मीतडली ।854।

अमर बकरा मड सामन, देख टढी आसडली ।  
माथा भेटघा धाकड मार, खूना चालै धारडली ।855।

अगला पगडा घरचा किवरिय, चरती दोस छाळकडी ।  
नैना नैना चर मिमलिया, बवळी बवळी पानडली ।856।

सिइया पडघा सू दूवण बठ, घर घर गावा गोरडली ।  
आघो परघो दूध निकाल, छोडै मिमला छाळकडी ।857।

भेडा बकरघा दूध मोकळी, बीजा मीठी खीरडली ।  
हाथ बटोरो मार सबडका, बठयो छावा सेजडली ।858।

तपै तावडो लूवा चाल, दुखणी आव आखडली ।  
छाळी दूधा फवो भिजोव, दिख चेपती मावडली ।859।

बकरघा दूधो घणो गुणो है, पीवै डोकर गावडली ।  
टाबरिया र सूड पचजा, दिख घापती वेटडली ।860।

## गाया-भैर्या

- वादळ देख मार छलागा, कूद-नाचें टोगडली ।  
 बीजळ खिवता देख गावडी, दीडी पूगें रोहिडली ।861।
- चौमासं मै गाया चरलें, जोड बीड म घासडली ।  
 घरा घरा सू रिपिया वाघ्या, गोरी लेव रोकडली ।862।
- डागर चरता रळ मिळ जाव, पूगें दूजी गावडली ।  
 दागा सू सासरिया सोध, सीगा वाघ जेवडली ।863।
- घूघरिया रो माळा पहरजा, नाड हलावें घनडली ।  
 वाखळ ऊभा रमता घालें, दोनू वाछी-वाछडली ।864।
- पगा नजणो गोडा गूणियो, दूधो दूव मावडनी ।  
 भरघा बटोरा पीता दीस, घर-घर टावर टिगरडली ।865।
- उतावळी वैडकडी भाजें, गोरी वाघ टागटली ।  
 गळ टोकरो मोटो वाघ्या, होळ हालें गावडली ।866।
- सिधण गाया जणें पावसं, दूधा भरदें चाडडली ।  
 हाथ वालटी दूवण वैठची, वोवा चाल धारडली ।867।
- मधरा मधरा टोकर वाज, सिझ्या पडें जद गावडली ।  
 खुरा ठोकरा खेह उड है, दीडी आवें घनडली ।868।
- हेला देता नेडी आवें, नाम लेवता गावडली ।  
 हाथ चाटतो ऊमी दीस, दे फटकारो पूछडली ।869।
- गाय माता दीस पूजता, घरा-घरा मै गावडली ।  
 सुरज-साड नें दिखें नीरता, पालो नीरो घासडली ।870।

ठाणा माथ ऊभी चरल, पाली सेवण घासडली ।  
 चाटलियो जीभा सू चाटे, भेसा ऊभो गावडली । 871।  
 खेता बडता मूडी मार, गोघी गाया वाछडली ।  
 राता माता फिर जिनावर, माख्या तिसळ चामडली । 872।  
 गाय-भस रें दूध मोकळो, करे विलोवण मावडली ।  
 छाछ-दही सू चाडा भरिया, घर-घर दीस गावडली । 873।  
 रोटा-रोटा घर उतर है, जाडे दूधा भसडली ।  
 दही विलोया घीव मोकळी मोळी-मोळी छाछडली । 874।  
 दो गोधलिया दिगै मामने, दडुक उछाळें रेतडली ।  
 मोटा-ताजा लडता दीस, भेंटघा मार घाकडली । 875।  
 भूगी दीया चरती दीस, जोड-बीड म गावडली ।  
 भूली भटकी खेता बडजा, पूग ठाकर ठाठडली । 876।  
 जण डागरा ठारी खाजा, इणकै-सिणक नावडली ।  
 राख लूणियो अग अग मसळें, गाभा दपट गोरडली । 877।  
 मादी ताती बासळ बठी, लाळा हासै टोगडली ।  
 खाणो पीणो छोड गावडी, भीच्या बैठी दातडली । 878।  
 गाय गाव मै जण टोगडी, घर-घर दीसे हरखडली ।  
 भर नाख्या सू जाणो पूरो, धनड चाट वाछडली । 879।  
 नागोरी बळघा रें ताणा, दिख बीजतो खेतडली ।  
 मोटा ताजा डीगा लावा लाम्बी लटक पूछडली । 880।  
 जूनी दवा हाथ सू देव, मादी होता गावडली ।  
 गुळ फिटकडी घोळघा बठघी, मूड नाव नाळकडी । 881।  
 गाव घरा मै दिखै मोकळा, गोघा गाया वाछडली ।  
 भेडा वकरघा चरती दीस ऊभी वीचा रोहिडली । 882।

## ऊट

- चीखल माथें चढघौ महदरी, पूगें मेडी भूमलडी ।  
 टळती राता भूमल सूपें, तोड काळजी कोरडली 1883।
- ऊट विना मरुधरा अडोळी, सूनी दीसं टीपटली ।  
 करलें बिन मरवण नी पूगें, ढोला थारी नरवडली 1884।
- काबुल सू जोघाण पूग्या, जसवत चढिया साढडली ।  
 अमरकोट हूमायू पूग्या, वेगम साथें टोडडली 1885।
- हमिदा तुरियो जीव छोटदचो, थळी देस री टीवडली ।  
 ऊटा ताणा अकवर जलम्यो, अमर कोट री धरतडली 1886।
- पागळ धारा चढता भाज, लाघ समदर रेतडली ।  
 जळ कोयळकी वेवट टुरियो, चालें दिन अर रातडली 1887।
- लूमा झूमा करै गोरवद, मेळें टुरगी टोडडली ।  
 मधरी मधरी दिखें चालती, गणा खणकें टागडली 1888।
- नखराळो जेसाणें करियो, पूग राता रातडली ।  
 वार चढोडो नडें सूरमी, हाथा लीया वीजडली 1889।
- घोरलिया रा जहाज कहिजें, भाजें दिन अर रातडली ।  
 भूख-तिरस नै भूत्या विसरचा, पूगें हूजी गावडली 1890।
- भरें सियाळ ऊट भूठ मं, मूड हाखें भागडली ।  
 माथें सू मद भरती दीस, गुटला काढें जीभडली 1891।
- मस्त हुयोडो ऊटी भाजें, गळिया बीचा गावडली ।  
 जे टावरियो हाथ आयजा, बाह पकडल दातडली 1892।

मेळ-ठेळ मदधर<sup>1</sup> ऊभी, पहरघा गणी टागडली ।  
 अळी भेळी हुयी मानखी, देखे ऊटा नाचडली 1893।  
 जगो ऊट बीकाण दीस, खीच भारी गाडडली ।  
 मोटो-ताजो डीला भारी, ऊची ऊची थूवडली<sup>2</sup> 1894।  
 गोमठियो है घाकड करहो, दिख फळोदी घरतडली ।  
 घणमोली गोणीज भूरी, रिपिया लेवे रोकडली 1895।  
 मेळ माथ ऊट-दोड है, गाव घरा रो गीतडली ।  
 सरपट भाज आगे आव, धोरलिया रो टोडडली 1896।  
 चिलम धुवे रा गोट उठ है, नाका सुग साढडली ।  
 नसा पता लेवे कुळनारू,<sup>3</sup> ऊभी वीचा गावडली 1897।  
 मोकौ देष्ट्या घात कर है, ऊभी वीचा रोहिडली ।  
 ईडर नीच दाव ऊटियो, मसळ दितावे मोतडली<sup>4</sup> 1898।  
 आगी पाछी फिरे दौडती जोरा पटक टागडली ।  
 मेहो घरा गाव म आसी, आगम देख साढडली 1899।  
 बिन मोरो र कुरियो<sup>5</sup> भाज, टोळ वीचा राहिडली ।  
 हेली देतो दिखे राइको, दौडी आव टोडडली 1900।  
 रेवारी ऊटा मै रहता, भूल्यो घर रो वातडली ।  
 बीच जगळ र गवरू ऊभी, दूधी पोवे साढडली 1901।  
 काळ पड्या सू मर डागरा, विखा<sup>6</sup> पटग्या टाडडली ।  
 सूखा चाव्या ठ्ठीया न, काळ्यो मारी लातडली 1902।  
 सरभ<sup>7</sup> सीव पर चर मोकळो, हरी भरो है वेकरडी ।  
 चोमास म ऊभी चरत, हरिया पत्ता पानडली 1903।

1 ऊट 2 थूई 3 ऊट साढ चिलम का धुआ सूष कर नगा कर लेते हैं 4 ऊट जगल म एकल सवार को देख कर उसे भूमि पर गिराकर अपने पट से मसलकर मार डालता है 5 ऊट का बच्चा 6 दुख 7 ऊट

ऊट-जटा नै बटै ढेरियो, बणती दीसै छाटडली ।  
सीयाळै मै बैठघा भाई, काम कर है घाकडली 1904।  
सूकी लकडघा भारी बाघ्यी, लादी लावै साढडली ।  
गळी गळी मै फिरै बेचती, भूख मिटावण आतडली 1905।  
लडणी भिडणी ऊट सवारी, करै मजूरी टोडडली ।  
पाणी लावै भार उखणलै, हळियौ खीचै खेतडली 1906।  
भार पडघा अरडावै ऊटौ, लार नाखै मीगणली ।  
कामडली फटकारघा चालै, होळ धरती टागडली 1907।  
रात बिराता भटकै ऊटौ, भूल्यौ गावा डाडडली ।  
ठोकर खाय पडै ओठारू, खाय घाल धरतडली 1908।  
बूढाप मै हाट टर दै, घाळी दीसै दातडली ।  
धीमा धीमा पगल्या धरती, खीच्या चालै गाडडली 1909।  
ओछै होटा चाची ऊटौ, ऊभौ दीसै टोबडली ।  
गाव घरा मै वात हुवै है घणी मारसी रोहिडली 1910।  
बत प्रिना घर काम हुवै नी, नी सभळै है खेतडली ।  
बिना ऊट र जीणी दोरी, बाळू घोरा धरतडली 1911।  
टोडारू वण रम टाबरिया, रळका देता हाथडली ।  
ऊटा म्हारी जीव जडी है, घर-घर गूजै बातडली 1912।  
ऊट खोथली भूडौ लाग, तेल चिलकता चामडली ।  
ऊचौ नीचौ पगडी पडता, रगटळ बणजा टोटडली 1913।  
टूटघी ऊटौ दिखै गाव मै, घण आसूडा आखडली ।  
मरणी-करणौ हाथ सावरै, चादघा पडगी चामडली 1914।  
सिध देस सू आयी ऊटौ रसग्या-बसग्यौ रेतडली ।  
पाबूजी रो किरपा होया, घर घर दीसै साढडली 1915।

## जीव-जिन्नावर

- सासर घर म भरधा दिर है, दूध मोकळी गावडली ।  
 विना जिनावर जोणो दोरी, वाळू घोरा घरतडली । 1916।
- भाख फाटता कूकड वोल भाडू दव वीदणली ।  
 दिनडो निक्ळघा डोकर वोल, भट-पट छोडो माचडली । 1917।
- ऊचो सिकरो खाय गुळाच्या, दै ऋपटारा पाखडली ।  
 भोळी कवूतर पजा फास, मास जीमलें चाचडली । 1918।
- कोचरडी रुखा म लुकजा, वागल चिपजा खेजडली ।  
 दिन म सूता नीदा लेव, उघम मचाव रातडली । 1919।
- कागडोड चिलखा सू-यारा, काळी लावी पाखडली ।  
 तीतर मोडी खेता वोल, कवरी-कवरी पाखडली । 1920।
- गोलें घोरा माथ विछगी, ममोलिया री चादरटी ।  
 काळो गूम्या रळ मिळ चाल, माड लीका रेतडली । 1921।
- तितली जिसडी रूप लियो है, सोनल दीस भीगडली ।  
 गळ कठली पळवा मार, भात भात री पाखडली । 1922।
- त्रिछू डकटी दोरी मार, वळता झळता टागडली ।  
 भाडा देता घर घर दीस, बठघा गावा भवडली । 1923।
- चिडी कागला दिखें मोकळा, बंठघा डाळा खेजडली ।  
 ऊचो ऊचो उड गगन मं, पख फलाया कुरजडली । 1924।
- सोनचिडी सुगना री राणो, उडती दोसै खेतडनी ।  
 काळ भूरें रगा रगाजी, दिख फुदकती रेतडली । 1925।
- सिन्ध्या पडघा सू उडता आव, पाख पखेरु गावडली ।  
 ऊच डाळा रुखा बठघा, रळ मिळ साथी साथडली । 1926।

ढकू-ढकू करे डेलडी, मोरा नाचें टागडली ।  
रुखा हेट रमता दीसै, दोनू साथी साथडली ।927।

सरवर कूवा दिखै आतरा, पाणी लावै साढडली ।  
ऊट पखाला भरिया लाव, गधिया ढाचा मटकडली ।928।

जण सासरा पीडा उठजा, भासू बहवें आखडली ।  
डाम लागिया पीड मिट है, दिखै भाजती टोडडली ।929।

हरचा आकटा वकरचा चरलै, भेडा चरलै पानडली ।  
कैर बाठका पागळ चरलै, सूनी दीसै रोहिडली ।930।

पैणो साप सास नै पीवै, जाती मारै पूछडली ।  
गाव घरा मँ हाकी फूट, चोड पिलाभी साथडली ।931।

आधी राता जरख फिरै है, कट-कट बाजै टागडली<sup>1</sup> ।  
डरता डरता टावर सोजा, आढी ढकलै मावडली ।932।

बोट विलावी बोट्या बोलै, थर थर घूजै टागडली ।  
भूत पलीत समझ भाईडों, भाज पूगजा भूपडली ।933।

लावी पाखा गोडावन री, उड गिगन मँ घाकडली ।  
देस विदेसा धाक जमाई, मरुघर घोरा धरतडली ।934।

तिरती आडा दिख तळावा, ज्यू पाणी मँ नावडली ।  
ऊडी भोला आय पखेरू, करै किळोळा घाकडली ।934।

मेह भडी लाग्या सू भाई, रिडकँ ऊभी भसडली ।  
नाडी बोचा तिरती तिरती, भिडक भाई पाडडली ।935।

हिरण वाखाट रमता घाल, साथै ऊभी मावडली ।  
नील गाय रोही म ऊभी, चरती दीसै घासडली ।936।

1 गधे जितनी जरख रात्रि म जगल से गाव म आती है । इसने परो की हड्डिया कट-कट की जोरदार आवाज करती हैं । गाववाला का विदवास है कि रात्रि मे डाकण इसकी सवारी करती है ।



## धरमा-करमा

दया धरम जीवा म वसिया, भगवन वसिया हीवडली ।  
भजन वाणी मिदर म गूजै, गावा गूज गीतडली । 1937।

गोळ थम्वा ऊचा वण्या है, मिदर वण्या है टेकडली ।  
मिनख लुगाईं टावर टोळी, दिख जोडता हाथडली । 1938।

जात पात आडो नी आव, मालिक वसिया हीवडली ।  
देवि देवता पीर पगम्बर, ध्याव सगळी गावडली । 1939।

साधू आया उछव छायाजा, ऊभा जोडै हाथडली ।  
भगवन म्हारै घरा पधारी, स्स र मूड वातडली । 1940।

भिर मिर भिर मिर कुत्तडी ब्याईं, टावर मूडै वातडली ।  
घर-घर आटा दिखै मागता, सीरो जोम कुत्तडली । 1941।

होळी दियाळी ईद माथ, घर घर दीस हरखडली ।  
गळबाथडली घाल मिळ है, अेक दुज री हाथडली । 1942।

रग रोगन सू रगी मूरती, करी थरपना टीवडली ।  
मा भवानी जीवडै वसगी, मरूघरा री घरतडली । 1943।

पीपाजी री वाणी सुणल, हियै वसा थू वातडली ।  
मिनख जमारा नाटककारी, मालिक दख आखडली । 1944।

दिन निकळया सू भजन करी थ, सुणो टाबरा वातडली ।  
बुढा-बडेरा देता दीस, गाव घरा मै सीखडली । 1945।

भजन सुण्या सू सुख पावैली, जीवा रहसो खनडली ।  
साधू-सता सदा सिखाईं, धरम करम री वातडली । 1946।

मसीत मिंदर दोनू धण्या है मरुधरा री टीवडली ।  
 पडत मौलवी सुख सू रहव, बठचा ठडी छावडली 1947।  
 इरला विरला आक दिखै है, घोळी फूला पाखडली ।  
 सिवजी आ म वासो लोनी, घ्याव धोकै सायडली 1948।  
 जीवण माता लाज राखदी, सेखाणै री घरतडली ।  
 औरगजेव री फौज हारी, जद खोली मा आखडली 1949।  
 दादी सती री मिंदर दीसै, सेखाणै री टीवडली ।  
 भाई साथै सती हुई है, रळ मिळ दोनू बँनडली 1950।  
 लालगिरीजी अलख जगाई, वीकाणै री घरतडली ।  
 राजाजी नै परचौ दीनी, नीदा बोचा रातडली 1951।  
 देवि-देवता छाया आया, केस बिखरै गोरडली ।  
 भाग हाखती ऊमै-भूमै, मूण्डे चिपजा दातडली 1952।  
 देवि-देवता ठाव-ठिकाणै, कर आरती सायडली ।  
 जद आफतडी आन पडै है, देव रुखाळ गावडली 1953।  
 दान पुन करणै री रीता, धोरलिया री घरतडली ।  
 कयादान बिन जीणो आधौ, समझ वाबल भावडली 1954।  
 खाटू स्यामजी आय विराज्या, बाळू घोरा टीवडली ।  
 अेकादस नै मेळो लागै, भगत दिखै है धाकडली 1955।  
 बिना गुरु र ज्ञान मिल नी, घर-घर गावा बातडली ।  
 पडित बँठचा वेद पढावै, सुणै गाव मै सायडली 1956।  
 घरम करम नै पल्लै राख, जाया जलम्या रेतडली ।  
 साच बोलणी हिंवडै बसग्यी, कूड दिखै नी आखडली 1957।

1 मरुदेश म ऐस आक दुसम होने हैं जिन पर चमेली के फूलो की तरह  
 विल्कुल सफेद फूल आते है। इसम शिव भगवान का वास होता है।  
 आक की जड को खोदने पर साप निकलता है ऐसी गांव के लोगों की  
 भायता है। सभी लोक इसकी पूजा करत है।

## रामसा पीर

रामदेवजी जलम लेवता, मुळकी घोरा घरतडली ।  
जद भगवन अवतार पधारघा, फूला वरसी पाखडली 1958।

सात दिना रा हुया रामसा, परचौ दीनी मावडली ।  
दूध उपणती हेट उतरचौ, जामण देखी आखडली 1959।

नीली घोडी उड गगन म, अजमल ऊमा छातडली ।  
दरजी टागा घर घर धूज, ऊमो जोड हाथडली 1960।

राम पीरजी दडो रम है, पूगी राखस झूपडली ।  
भैरव मारघो गाव वचायो, स्स रै मूड हासडली 1961।

सारथिय री मीत हुया सू, घर म रोव मावडली ।  
हिंदुवा सूरज हलौ देता, खाले साथी आखडली 1962।

लाखोजी री बाळध आयी, राम पीर री गावडली ।  
मिसरी न बा लूण व्ह्यो ती, लूण बणगी साकरडली 1963।

पाच पीरजी आय विराज्या, रूणच री टोयडली ।  
देख पावणा भगवन कहव, जीमो सता राटडली 1964।

सीपिया ती पड्या मक्क मै, किणविद जीमा रोटडली ।  
आप आप री सीप्या साथी, भगवन राखे जाजमडी 1965।

पाच पीर मन ही मन मुळके, जीवा जाणी वातडली ।  
सावरिय री परचौ देख्या, जोडी दोनू हाथडली 1966।

दूध कटोरी पीता दीस, भगवन ऊमा रोहिडली ।  
हरजी भाटो देख रामसा, टेकयो माथो घरतडली 1967।

रणछोड री रूप दख कर, जोगी जोडी हाथडली ।  
 पाणी री अरदास करी तौ, भरती दीसै नाडडली 1968।  
 मायी कटिया पडचा दलाजी, चोर लूटली रोकडली ।  
 भगवन जीवनदान दियो ती, सेठा खोली आखडली 1969।  
 वायता सेठ दिसावर जाय, भगवन देता सीखडली ।  
 जद पाणी मै डूगौ डूवै घणी तार द नावडली 1970।  
 विरमदेव अर राणी रोने, वाछी मरगी गावडली ।  
 गुम सुम भावज वणी दिखै है, छोडचा पाणी रोटडली 1971।  
 भाडी माथ दिखै सूकती, गाव गोर मै चामडली ।  
 चुटिय सू जद छुई रामसा, मिळी गाय सू वाछडली 1972।  
 नेतनदे सू नी टूरीजे, लूली दीस टागडली ।  
 भगवन साथै व्याव हुया सू, ठम-ठम चाल बीदणली 1973।  
 मिनी भरोडी घरी थाळ मै, कर मसकरी साथडली ।  
 घणी रूपेचै हाथ लाग्या, चढती दीसै छातडली 1974।  
 नेतलदे भगवन सू पूछ, काई जणसी बहवडली ।  
 पेट मायनै हेलौ सुणियो, थाळ वाजसी टीबडली 1975।  
 हडवू देख्या रामदेवजी, ओरण बीचा गावडली ।  
 गळमाथडली घाल मिळै है, दोनू भाई रोहिडली 1976।  
 रतन कटोरी चुटियो सूप्यी, भगवन कहता वातडली ।  
 भाई म्हारा घरा पघारी, हू पूगूला रातडली 1977।  
 हडवू कहवै सुणी साथिडा, बाबी वंठचा रोहिडली ।  
 रतन कटोरी साम घरिया, स्स री फाटी आखडली 1978।  
 गाव मानखी पूग समाधी, खोद न्हाख दी माटडली ।  
 रूपेच रा घणी दिख नी, धारलिया री घरतडली 1979।

## सुगना\*

रामे पीर रे व्याव माये, सुगना जोवे वाटडली ।  
सासरिय म वठी रोवे, डुसका खाती बनडली 1980।

जेळ मायने रतनी वठचौ, घूटे वधगी माढडरी ।  
सुगना घर मे वात सुणी ती, कळपी आखी रातडली 1981।

लीत रो असवार देखले, सुगना बीती वातडली ।  
घोडे चढिया भाली लीया वडग्या पूगळ कावडली 1982।

पूगळवासी थर-थर धूज, फाटी दीस आखडली ।  
भगवन चाने माफ पर है, सुगना वंठी गाडडली 1983।

साम वेटी मरगो पडचौ है, छाती कूटे मावडली ।  
विन वाळकिय जोणा दोरी, सुगना जाणे वातडली 1984।

व्याव रचाय'र भगवन आया, घरा बघाव मावडली ।  
सुगना घर म वठी रोव, पकड काळजी हाथडली 1985।

भगवन आख्या ओजे खोज, कित गइ म्हारी बनडली ।  
केस विखेरचा सूनी आग्या, वैन करे है वातडली 1986।

जामणजाई वात बताओ, सोगन थाने वैनडली ।  
वाकी फाटचौ बोल निसरग्या, कुवर देखली मोतडली 1987।

भगवन हेला दिया कुवर न, फर माये हाथडली ।  
हसती हसती कुवर उठ है, चढजा मामे गोदडली 1988।

- 
- \* रामदेवजी की गादी पर उनकी बहिन सुगना को सुसरालवाले इसलिए नहीं भेज रहे थे कि रामदेवजी नीची जाति के लोगों के साथ उठते बठते थे । पूगल के परिहारों पर आक्रमण कर के बहिन को घर लाते हैं । बहिन का पुत्र मरने पर पुन जिंदा करते हैं ।

हरजी भाटी गाता दीस, बाबा थारी गीतडली ।  
 घर घर डाली दियौ सनेसौ, भगवन आया साथडली । 989 ।  
 दली सेठ अर रतनी समझ्या, बाबा थारी वातडली ।  
 अजमल घर अवतार पधारचा, घर-घर छाई हरखडली । 990 ।  
 बाबा थारी जय जय गूजै, रुणैच री टीवडली ।  
 निरताळी री वजती टाल्या, मधरी छोडै तानडली । 991 ।  
 जात पात स्म भेली दीसै, बाबा थारी घरतडली ।  
 भजन गावता भेल वैठ, ह्म-हस करता वातडली । 992 ।  
 देवळ माथै घजा फिराव, पिचरग नेजा छातडली ।  
 पाळा आता भगत देखलै ठडी करता आखडली । 993 ।  
 हिंदू मुसलिम दोनू मान, बाबा थारी वातडली ।  
 भाईचारी बस्या जीव मै, रुणैच री घरतडली । 994 ।  
 घर घर टावर दिखै गळै मै, बाबा थारी तातडली ।  
 मावड वैठी म नत मागै, हसती दीसै वेडडली । 995 ।  
 रणछोड रा दीसै पगलिया, चौकी आळा गावडली ।  
 घरा घरा म थान वण्या है, ठडी छाया खजडली । 996 ।  
 बावडी पर बठयौ मानखौ, भजन करै दिन रातडली ।  
 परची पाता आस्या खोलै, कोड भडै है चामडली । 997 ।  
 मारवाड गुजराता पूगी, धरम करम री वातडली ।  
 उलझ्या लटक्या काम हुवै है, म नत माग्या साथडली । 998 ।  
 मनडो भटका खाती दीस, जीव पड नी चैनडली ।  
 रुणचै मै पूग भाइडो, ठडक पाव होवडली । 999 ।  
 भगत खडचौ अरदास करै है जोडचा दोनू हाथडली ।  
 बाबा थारी सरण आयग्यौ राखी म्हारी साजडनी । 1000 ।

## पीर-ओलिया

सूफी बाबो कर इयादत, नागाण री धरतडली ।  
च्यारुमेरा हसी घुसी है, कुफर चुरावै आखडली ॥1001॥

भूत पलीता आग लागजा, बाबा थारी काकटली ।  
डरता डरता पूठा भाज, छोड मिनख री हाथडली ॥1002॥

मोठ-गाजरी वण्णी खीचडौ, साथ मोळी छाछडली ।  
बाबो कहव फौज जिमाओ, गाभो ढकदौ हाडली ॥1003॥

वैठचा फोजी दिख जोमता, नी खूट है खीचडली ।  
चमतकार पीरा री देख्या, टेकी फोजा गोडडली ॥1004॥

पोटली म कीडो आयगी, बाव देखी आखडती ।  
पूठा छोटण टुरना वापजी, जीव घरा न गावडली ॥1005॥

उरस हुया सू हेली होव, सुणली भाया बातडली ।  
मास खावणी नी पोसाव, दरगा बावै धरतडली<sup>1</sup> ॥1006॥

बावै जीवा रहम मोकळी, नी मारण दे गावडली ।  
पाणी लीया खून घीयद, बावै सीगा पाटडली<sup>2</sup> ॥1007॥

सूफी बाबो सजदौ कीनी, जुग बोत्या दिन रातडली ।  
माथ ऊपर इण्डा राखदै, आळी समझ्या चिडकटली ॥1008॥

बाबै री जद महर<sup>3</sup> हुव ती बरस रहमत<sup>4</sup> गावडली ।  
टावर टोळी रमता दीस, हरख काड<sup>5</sup> रेतडली ॥1009॥

---

1 नागीर म सूफी बाबु के उस के अवसर पर आवाज होती है कि मास खाकर दरगाह पर न आवें 2 पट्टी 3 दया 4 कृपा 5 खुशो-खुशी

बाबर हेल र मार्ये, भाजी आवै घेनडली ।  
 सूफी बाबो लाड लडावै, बाछी चाटे हाथडली ॥1010॥  
 बाबो करता दिखै इमामत, खाजाजी री घरतडली ।  
 अरस आजम भुकती दीस, रहमत बरसें घाकडली ॥101१॥  
 सूफी बाबो वसियत करग्या, दरुद दिराया रोटडली ।  
 आस-पास मास दिखै नी, हिरदै राट्या वातडली ॥1012॥  
 बाबो कहव सुणलो भाई सत्र घडी है सायटली ।  
 बिना सवूरी जीणी आघी, नी पावेनी चैनडली ॥1012॥  
 भूख पेट अक ही दु ख है, वाकी सत्र है हरखडली ।  
 पेट भरघा सू अक इ सुख है, दुखडा गिणलै आगळटी ॥1013॥  
 वहाऊदीन इस्तान लेवा, भेज्यो सानो चादडली ।  
 ताळ तलावा दियो फँकाय, भरी रेत स गाडडली ॥1014॥  
 सेख आगणै गाटी पूगी, स्से री देख आखडली ।  
 चम चम करती सोनी चमकै, मरुधरा री रेतटली ॥1014॥  
 करामात पीरा री देरया, सेख टक दी गोडडली ।  
 मन ही मन बाबै नै घ्यावै, कर-कर ऊची हाथडली ॥1015॥  
 अहमदअली जी बैठघा दिखै, करै इवादत घाकटली ।  
 अल्ला-अल्ला करता-करता, मूद्या वठघा आखडली ॥1016॥  
 मस्त मोलाजी ला लगाई जाळा ठडी छावटली ।  
 इसा पीर विरला ही दिखसी घोरलिया री घरतडली ॥1017॥  
 साभ पडघा सू आय विराज, फळम आग डोकरडी ।  
 भाल भलीदा स्स ठुकराया, जीमै रूखी रोटडली ॥1018॥  
 बाबै रं दरवार पूगवर, करै इवादत सायडली ।  
 जिका काम बरसा नी होया, होजा हाथो हायडली ॥1019॥



हिंददेस रा धणी खडचा है, मरुधरा री कावडली ।  
 खाजाजी री रहमत वरसै, वाळू घोरा धरतडली ।।1020।  
 नरहड गावा दिखै आवती, लिया भूतणी साथडली ।  
 रहम करम वाव री वरसघा, आछी होजा गोरडली ।।1021।  
 पीरा आळी जाळ पूगिया, मनत पूरी साथडली ।  
 भूत पलीत दीस भाजता, गाव साचोर धरतडली ।।1022।  
 रिडमलसर गावा री धरती सोनल रूपल रेतडली ।  
 मिरजावली जावै री महर, वरसै है दिन रातडली ।।1023।  
 सेख हुस्सन करै इवादत, पीलू रूखा छावडली ।  
 सेखाण री धरती वैठचा, तसवी फेर धाकडली ।।1024।।  
 मोहम्मद खा देवै हाजरी ऊभा जाड हाथडली ।  
 जणै सेखजी महर हुई तो, राज थरपलै धरतडली ।।1025।  
 तारकीन वाव री चिल्ला, दिखै भूभुनु टोवडली ।  
 खानू पीर री दरगा दीसै, गिगना ऊची टेकडली ।।1026।  
 तना पीरजी धाकड तपिया, जो जाणै री धरतडली ।  
 हिंदू मुसलिम दोनू आवै, दरगा वाव गावडली ।।1027।  
 खाटू गावा हुव इवादत, दरवेसा री टोवडली ।  
 सेमाली रै ऊच टोलै, दरगा दीसै धाकडली ।।1028।  
 नागाणी खाटू अर नरहड, दरवेसा री धरतडली ।  
 पीर पैगम्बर बसवा दिख है, कण-कण घोरा रेतडली ।।1029।  
 हिंदू मुसलिम हिरद बसगी दरवेसा री वातडली ।  
 जण बापजी गावा आव, पगल्या लागै साथडली ।।1030।  
 साचै मन सू वावी घ्यावै, मनत पूरी साथडली ।  
 गाजा बाजा चादर लीया, पूग दरगा धरतडली ।।1031।

## गोगाजी

- बाछल जामण पूतजलमियो, ददरेवा<sup>1</sup> में हरखडली ।  
 शेबर<sup>2</sup> ऊभा हरख मनावे, थाळ बाजिया छातडली ॥1032॥
- पालणिये में सूतयो गोगो, साथे बठी सापणली ।  
 दादोजी जद मारण ढूके, भगवन रोके हाथडली ॥1033॥
- गोगी पावू चोपड रमता, दिखे फेंकता कोडडली ।  
 हारचो पावू दिखे सूपती, भाई घर रो वेटडली ॥1034॥
- बूडोजी राजी नी होवे, व्याव रचावण घीवडली<sup>3</sup> ।  
 गोगोजी न रीस आयगी, भेजी पन्ना सापणली ॥1045॥
- कोलूमड वागा में कामण, तोडे फूला पाखडली ।  
 केलमदे न सपणी डसले<sup>4</sup>, घ्याव गोगो सायडली ॥1036॥
- गोगोजी रो व्याव मड है, गोरख सुणले वातडली ।  
 उडण खटोल उडे गुरुजी, आय विराजे टीवडली ॥1037॥
- केलमदे गोगोजी व्यावा, हरख<sup>5</sup> छायग्यो गावडली ।  
 जोडा<sup>6</sup> भाया बात सुणीतो, भीचो मूडे दातडली ॥1038॥
- अरजन सरजन लडता दीसे, हाथा थाम्या बीजडली ।  
 गोगोजी घोड पर चढिया, लडे सूरमा घाकडली ॥1039॥
- भगवन सण्डो दिगे चालती, फोजा टेकी गोडडली ।  
 अरजन सरजन दिखे हारता, तुरका घूजो टागडली<sup>7</sup> ॥1040॥

1 गोगोजी के रहने का स्थान इसे आजकल चूरु कहते हैं । इसे गीग मढ़ी भी कहा जाता था । 2 गागाजी का पिता 3 बेटी 4 काटना 5 सुगी 6 जाति विनियम का नाम 7 अरजन सरजन की सहायताय आने वाले मुसलमान जाति विनाय के लोग ।

गोगोजी सरगा सू आवै सुरियल मिलवा रातडली ।  
सिणगारा सू सजी गवरजा, ऊभी दीस छातडली ॥१०४१॥

बिना घणो र घण सिणगारा, सासू देव तानडली ।  
जामण थारी जायौ आवै, मिलगा म्हा सू रातडली ॥१०४२॥

रात पड्या गोगोजो आव, जामण देख आवडली ।  
मावड ताना दिया पूत नै, गोग छोडी सजडली ॥१०४३॥

पगा सिराण पण्डत मोलवी बठ्या गोग मेडकली<sup>१</sup> ।  
भाईचारी दिमै न दिखसी जिसडो गोग गावडली ॥१०४४॥

झण्डे माथ साप मडघो है, लाम्बी चोडी घाकडली ।  
बाळू धरती फिरै पताका, मिदरा गोग छातडली ॥१०४५॥

हिन्दु मुसलिम दोन आव, गोगामेडो धरतडली ।  
दरगा मिदरा पूग साधिडा दिख जोडता हाथवली ॥१०४६॥

डरू हाथा घाकड वाज हियो हाखदयो सापणली ।  
अरू काटा लिटता दीस, गीच मिनख री टागडली ॥१०४७॥

जाहर पीर है नाम गोगी दूर दिसावर वातडली ।  
छोटा मोटा रस ध्याव है, हिन्देस री धरतडली ॥१०४८॥

गोगामेडो मेळै माथ दिख मानखी घाकडली ।  
पेट हाथ सू दिख खिसकता, सूत्या ऊपर रेतडली ॥१०४९॥

ठोड ठोड पर दिख मूरत्या, भाटा माथ सापणली ।  
गाव गाव म थान दिखै है, वेजडलै री छावडली ॥१०५०॥

साप डसोडा जद आव है, वाज भाभर ढोलकडी ।  
भगत नाचता दिखै गाव म, जहर उतारै हाथडली ॥१०५१॥

१ हिन्दू मुस्लिम दोनो ही गोगाजी की समाधि पर सिर और पाव की तरफ साप साप बठत हैं । दोना घनों का यह सगम मरुधरा की धरती पर दिखाई देता है ।

## पाबूजी\*

- पाबूजी अवतार लियो जद, हरख छायाग्यी घरतडली ।  
मारवाड राठौडा भाई, धरमा राखी साखडली ॥1053॥
- घाघल अपसरा व्याव राच्यी, मनरी करता बानडली ।  
पाबू जिसडो पूत जलमियो, मरूधरा री घरतडली ॥1054॥
- लक्ष्मण रा अवतार पाबूजी, मारवाड में वातडली ।  
सिंघणी सूती दूधो पावे, घाघल देखी आखडली ॥1055॥
- घाघल मौत हुया सू भाई, वाप दिखे नी मावडली ।  
साव अक्ली पाबू रहग्यी, घाय सभाळें साथडली ॥1056॥
- जौंदराव जद घोडी मागें, नटजा देवल साथडली ।  
घोडो म्हार जीव जडो है, घर री राख लाजडली ॥1057॥
- पाबू घोडी ऊभा मागें, देवल सूरें रासडली ।  
केसर काळवो हिण हिणाव, ऊची कान बनोतडली ॥1058॥
- सोची न जद ठाह पड्यो तो, भीची भूड दातडली ।  
डरती-डरती चुपक बठ्यो, मोकी देखे आखडली ॥1059॥
- डोडवाणा पूग पाबूजी, लीनी हाथा जीतडली ।  
डोडें न या बाघ नासदयो, मिजाज तोडयो भावजडो ॥1060॥
- अन्न घाघल मौत देखली, पाबू मारधा बीजडली ।  
भील भाइडा बर चुवह्यो, जालाण री घरतडली ॥1061॥

- पाबूजी की माता सिंघनी का रूप बना कर दूध पिला रही थी घाघल न दुध के देग लिया । इस के पन्वान पाबूजी की मां ममार को छोड कर इन्द्रगोकु का चली गई कयाकि अंधरा ने गादी के समय दात रखी थी कि उमके काय छुप कर भा बोर्ड न देग । पाबूजी को लक्ष्मण का

राव देवढी दुख देव है, पावू सोनल बनडली ।  
 चाबक रा फटकारा लाग्या, लीला जमगी चामडली ॥1062॥  
 वार चढोडी पावू दीसै, घूळ वातूळा आघडली ।  
 राव देवढी डरती घूज, हिलती दीस टागडली ॥1063॥  
 ऊमा पावू माफ कर है, दिखै छोडता कावडली ।  
 जाता-जाता गणी सूप्यो, पहरी सोनल बनडली ॥1064॥  
 दोद सूमरै साढ टोळो, हरमल देख आखडली ।  
 पावू धेर देव दायजै, सूप गाग हाथडली ॥1065॥  
 ऊट जिनावर लायो पावू, मारवाड री घरतलडो ।  
 राइका आज मगल काम पर, जमी दिरावै गावडली ॥1066॥  
 देवल माथ विखी पडघो जद, ऊमी जोव वाटडली ।  
 पावू नै अरदास कर है, भगवन राखी लाजडली ॥1067॥  
 देवल चारणी जद पुकारै, घोडी तोड जेवडली ।  
 पावूजी सनी म समझ, हाया थामी बीजडली ॥1068॥  
 आसै पासै बात हुवे है खीची घरी गावडली ।  
 सेजा माथ सोढी छोडी, जीणा कसली घोडडली ॥1069॥  
 खीची भाग्यी गाय छोडती, पावू लीनी जीतडली ।  
 घाव त्याया पटथा पावूजी, छेकड लीनी मौतडली ॥1070॥  
 ऊच नीच जाता नी दीसै, पावू थारो घरतडली ।  
 नीची जाता ऊची होगो, भगवन थाम्या हाथडली ॥1071॥  
 घर-घर गावा जमो देवता, वाजै माटा धाकडली ।  
 भोपा थोरी दिखै वाचता, पड पावूजी गावडली ॥1072॥

---

अवतार मानते हैं । देवल चारणी की गायें छुडात समय जीदराव  
 खीची से युद्ध करते हुवे अधिक घाव लगने से वीरगति की प्राप्त हुए ।  
 सिध प्रदेश से सबप्रथम ऊट को पावूजी लाय तथा अपनी भतीजी के  
 दहेज म दिया था ।

## तेजोजी

- गूजरो री मोसो<sup>1</sup> सुणचा सू, समभी तेजल वातडली ।  
 किण गावा में व्याव हुयो है, साच<sup>2</sup> वताओ मावडली ॥1073॥
- रतन वेटी बीदण थारी, कहती दीम भावजडी ।  
 धार बरस सासर वैठी, पहला लावी वैनडली<sup>3</sup> ॥1074॥
- जामण जायी राधा लेवण, रुण-भुण जोडी गाडडली ।  
 रात दिना नै भूल्यो तेजल, पम्प्यो बनड गावडली ॥1075॥
- घरा आगणै घीवड ऊभी, मावड मूड हासडली ।  
 भाई तणा वैन घर आयी, गाव घरा म हरखडली ॥1076॥
- घिन सुगना तेजोजी टुरम्पा, काठी कमिया घोडडली ।  
 गेल<sup>4</sup> बोचा आग लागगी, तेजल देखी आखडली ॥1077॥
- वळतो<sup>5</sup> बासग नाग देखियो, झट पट खीची पूछडली ।  
 काळी<sup>6</sup> मूड दिख बोलती, जुलम कियो थू घरतडली ॥1078॥
- घिना नागण रं जिणो दोरो, नी आवेली नीदडली ।  
 डसणो म्हारो घरम वरम है, सुणलै तेजल वातडली ॥1079॥
- सासरिय सू पूठो<sup>7</sup> आनी, एक सू धारी बाबडली ।  
 चाद सूरज री सौगन म्पाय, तेजल टुरम्पो गावडली ॥1080॥
- भोडल बागा रासो लोनी, बठपा ठडी छावडली ।  
 सास पडपा पनपट पर पूछ, रतना जो री मूपडली ॥1081॥

1, ताना 2 सच-मच 3 भाभी ने कहा बारह वर्षों में बहिन सगुराल में बटी है पहले देखा लाभा फिर स्त्री को लेने जाना 4 रास्ता 5 चलना हुआ 6 बाला माप 7 बापस

सासरै मैं पूग तेजोजी, बैठघा ऊपर जाजमडी ।  
साळी जी र साथै बठघा, हस-हस करता घातडली ॥1082॥  
सासूजी रै मन नी भाई, तेजल आणौ गावडली ।  
नाक चढाया दिसै धूमती, तीखी करती घातडली ॥1083॥  
रतन डूजी वहवड दीसै, भोडल नी है मावडली ।  
घाळ माय नै बाबळ पुरस्या, तेजल खीची हाथडली ॥1084॥  
हीरा गूजरी हाथ जोडया, कहती दीस बातडली ।  
रोता-रोता मूडै बोली, मीणा टोरी गावडली ॥1085॥  
मीणा रै माझी नै मारघा स्स री फाटी आखडली ।  
हाथ जोडता मीणा ऊभ्या, माग धुनियो गावडली ॥1086॥  
हीरा मन नी वाता भाई, ऊभी देव तानडरी ।  
तेजोजी काणघा न लावण हाथा थामी बीजडली ॥1087॥  
काणघी केरटा लाय तेजल, सूर्प हीरा हाथडली ।  
ठोड ठोड पर घाब दिस है लथ पथ खूना चामडली ॥1088॥  
बाबी बासग नाग पूगसा, तेजल मूड बोलडली<sup>1</sup> ।  
कोल करोडा पूरा करसा, घरमा रहसी सातडली ॥1089॥  
बासग नाग डम तजाजी, मूडा खोल्या जीभडली ।  
घर घर थारी पूजा होसी, नाग राज कह बातडली ॥1090॥  
सरगा जाना भगवन कहग्या, सुण नाईका बातडली ।  
मा-घाप न पगा लागणी, फेरी टाबर हाथडली ॥1091॥  
तेजोजी भगता नै दग्या, धरम करम री सीखडली ।  
घर घर मैं तेजोजी गाव, खेत बौवता गावडली ॥1092॥

1 तेजोजी की मृत्यु के समय उठोने साप को दिय वचन के अनुसार उस की बाबी क पास से चलने का कहा । साप को डसने हेतु अपनी जीभ निकाल कर दी ताकि शुद्ध स्थान पर डस सक ब्याकि सारा गरीर घावा से भरा था ।

## जाम्भोजी

- स्मसान सेवी डरती सुणलै, जाम्भोजी रो बातडली ।  
 वाळक मूड जान सुणया सू, ऊमो जोडै हाथडली ॥1093॥
- जम्भोजी बकरया नै कहवै, पाणी पीवो नाडडली ।  
 बकरा सगळा बैठ्या दोसै, दूद देखी आखडली ॥1094॥
- मेहतिय रो राज मागती, दूद जोडी हाथडली ।  
 लकडी रो तलवार देवता, भगवन सूपी जीतडली ॥1095॥
- काळ पड्या सू मरै मानखी, भगवन राख लाजडली ।  
 घरा गाव मै हगल दिख है, चरलै डागर घासडली ॥1096॥
- हासिम-वासिम कद पड्या है, सता सुणली बातडली ।  
 बादस्या नै भेज्यो सदेसी, चेला आग्या गावडली ॥1097॥
- रुख खेजडो हिवडै बसियो, माया कटिया धाकडली ।  
 जोघाणै रो राजा हारघो, नाम गाव है खेजडली ॥1098॥
- पीपासर म जलम लेवता, भगवन कहवै बातडली ।  
 रुख जिनावर घरम वचाणो, दी बिसनोई सीखडली ॥1099॥
- घरम-करम रो नीव राखदी, गाव मुकामा धरतडली ।  
 पार तपस्या रग दिखावै, घर घर पूगो बातडली ॥1101॥
- सुरासान अर लका पूग कर, हवन करै है धावडली ।  
 सम्भरायल जाम्भोजी बैठ्या, भजन करै दिन रातडली ॥1102॥

● बचपन मे जाम्भोजी बहुत कम बोलते एव भोजन करते थे । स्मसान सेवी तानिक को इसाज के लिए बुलाया गया । उसने मां बाप को कहा यह सिड पुट्ट है । अत इहें अषिक न छेड़े ।



## जसनाथजी

- बबलू गाव कतरियासर है, सिद्धा घरमा घरतडली ।  
 रामू सारण सीख सुणै है, घरम छतीसा आकडली ॥102॥
- नारेल सूप लूणकरणजी घडसो खोटी रोकडली ।  
 हर-हर खोटा कहता दीस, भगवन बठचा टीवडली<sup>1</sup> ॥103॥
- रोजी पूगयी सती बुलावण, चूडी खेडा गावडली ।  
 कतरियासर भगवन न दीस, रोजी फाटी आखडली ॥104॥
- देवपाल जसनाथ जगावै, मत्र पढ है घाकडली ।  
 भगवन प्रकट होता दीसै, सती कर है वातडली ॥105॥
- दोसमाध्या खोदण खातिर, भगवन दोनी सीखडली ।  
 सगळा नै वा काम सूपिया, बठचा ऊपर घरतडली ॥106॥
- पाच महत अर कुल गुरुजी, बठ ऊपर जाजमडी ।  
 अगनि जागरण होती दीस, भजना गूज गीतडली ॥107॥
- चोथी पद ५ गावी भाई, काना सुणल वातडली ।  
 जय हा जय ही करता नाच, खीरा उछळ टागडली ॥108॥
- मूड म खीरा न लेव, होट बळै नी जीभडली ।  
 खीरा ठडा होता दीसै, रस री देख आखडली ॥109॥
- भेळा खीरा की नी बाल, खिडिया बाळ चामडली ।  
 आस पास चुगता चुगता फेंक, पूठा आगडली ॥110॥

1 बीकानेर के राजकुमार लूणकरण ने नारियल एव घडसी ने आधे खोटे और आधे खरे सिक्के भेंट किये । उसी समय कह दिया हर हर आधे छाटे आधे खरे जसनाथजी की आशिष से छाटे होते हुए भी लूणकरणजी को बीकानेर का राज्य मिला ।

## जैने

- आदिनाथ रा भगत दिखै है, जैन धरम री बातडली ।  
मूण्डे आगे पाटी बाघे, होट दिखै नी दातडली ॥1111॥
- भरी जवानो साधू वणजा, मोह करै नी मावडली ।  
पूठा मुड घर गाव न देखै, करै तपस्या धाकडली ॥1112॥
- गावा बीचा साधू दीसै, भगता मूडे हासडली ।  
भगवन म्हारै घरा पघारी, जोडचा ऊभा हाथडली ॥1113॥
- घाळा घख गाभा नै पहरै, चमक मूडौ धाकडली ।  
जिणरै घर पर किरपा होजा, वाछा खिलजा साथडली ॥1114॥
- पगा उभाणा दिखै जावता, पूगे दूजो गावडली ।  
जीव वचावण खातिर भाई, भूल्या पीडा काटडली ॥1115॥
- सूरज रहता जोमण जोमै, धरम करम री बातडली ।  
छाण छाण कर पाणी पीवै, जोमै रूखी रोटडली ॥1116॥
- जीव जिनावर घकी न देवै, मरै न कीडी रेतडली<sup>1</sup> ।  
बहिंसा री ओ रूप साघिडा दिख न दूजो घरतडली ॥1117॥
- भगवन हेली होती मुणलै, करै सपारो<sup>2</sup> डोकरडी ।  
सरग माय न जाय बिराजै, बात वसी है जीवडली ॥1118॥
- जैन धरम रा साधू जिसडा, बिरला दिखसी घरतडली ।  
आती जाती सासा बीचा<sup>3</sup>, देग भगवन आखटनी ॥1119॥

1 छोटे से छोटे जीव का भी बचावर पन्थ है। 2 मृत्यु तक न माते है और न पीत है। 3 स्वाम प्रेशा ध्यान के माध्यम न धीरे धीरे अभ्यास करते हुए भगवान के दंगन करत है।

## मीरा\*

कुडकी गावा जलमी भोरा, मेडतिय री घरतडली ।  
प्रेम-गोपिका आय बिराजी मरुधरा री टीवडली ॥120॥

ऊच टील गाय आयजा, दूघा चाले धारडली ।  
चारभुजा री मूरत निकळी, खोदचा घरनी माठडली ॥121॥

विसरो प्यालो मीरा पी'गी, हस-हस करतो वातडली ।  
भगवन री किरपा र ताणा, साप वण है हारडली ॥122॥

मीरा बाई भजन गावती, टुरगी धारा घरतडली ।  
मेडतिय म आय बिराजी, छोट सासरो सायडली ॥

हाथ तदूरो दिख वाजती, मूड मधरी गोतडली ।  
भजन वाणी सू गाव गूज्या, हरख छायाग्या टीवडली

जण मेडतो मीरा छाड, दिख उदासी गावड  
मिनख लुगाई टावर टाळी, आसू चाल धार

पुसकर बीचा टुरी साथणी, सावरिय री गा  
ठोड ठोड पर भगत खड्या है, फूल विछाया डा

च्यार-पण्डत अरदास कर है, जाड्या दोनू  
मीरा बाई धरा पधारी, नी ती लेस्या

सावरिय रे आग रावे, मत छाडी ये  
तेज चादणी जोरा चमक्यो, सरगा

---

\* प्रेम गोपिका के पति न रासलीला मे  
ने आत्महत्या करली । श्री कृष्ण ने आणी  
में तरे हृदय म निवास करुगा । मीरा  
अत म श्री कृष्ण म लीन हा जाती है ।

## करणी माता

- हिंगलाज मा री मिंदर दीसै, दूर दिसावर धरतडली ।  
मुसलिम भाई कहता दीमै, हज नानी री बातडली ॥129॥
- आवड माता आय पिराज्या, थळी देस री टेकडली ।  
तेमड टीलै बसी भवाना, घरमा राखी नीवडली ॥130॥
- करणी पिन किरणा नी निसरै, देस जागळू धरतडली ।  
विन माताजी राज रहवै न, बीक जाणी बातडली ॥131॥
- जोगमाय री रूप देख कर, तुरका धूजी टागळी ।  
सेखी भाटी पूगळ लाई वेटी व्यावा रातडली<sup>1</sup> ॥132॥
- जसाणै री राव जैतसी, ऊभौ जोय वाटडली ।  
अदीठ आछा होती दीसै, करणी फेरचा हाथडली ॥133॥
- लडणी भिडणी छोडी रावळ, हेत बसावौ हीवडली ।  
जैसाण बीकणै काकड, रेखा खीची मावडली ॥134॥
- पेटौ डूध्यौ बीच तलावा, कोलायत री भोलडली  
करणी माता हेली देता, साखण खोली आखडली ॥135॥
- काळू सूजो डावू मारना, लाई मा घर गावन्ली ।  
दसरथ भगता हुई थरपना, देसनोक री धरतडली ॥136॥
- गगासिध जी जुद्ध मंदाना, घ्याव मावड जीवडली ।  
करणी माता दरसन दता, लेली हाथा जीतडली ॥137॥

1 पूगळ की रानी ने करणी मा से अपन पति को सिध के नबाव की जेल से छुडाने की प्रार्थना की । मा के कहने से वह अपनी पुत्री की गादी बीकोजी से करती है । माँ भाटी को स्वतंत्र करा कर ब्यादान हेतु पूगळ लाती है इस तरह राठीड और भाटियों में सपथ स्थापित होन है ।

## मीरां\*

- कुडकी गावा जलमी मोरा, मेडतियै री धरतडली ।  
 प्रेम गोपिका आय विराजी मरुधरा री टीवडली ॥120॥  
 ऊच टील गाय आयजा, दूधा चालै धारडली ।  
 चारभुजा री मूरत निकळी, खोदना धरती माटडली ॥121॥  
 विसरी प्याली मीरा पी'गी, हस-हस करती वातडली ।  
 भगवन री किरपा र ताणा, साप वण है हारडली ॥122॥  
 मीरा बाई भजन गावती, टुरगी घोरा धरतडली ।  
 मेडतियै मै आय विराजी, छोड सासरी साथडली ॥123॥  
 हाथ तदूरी दिखै वाजती, मूड मधरी गीतडली ।  
 भजन वाणी सू गाव गूज्या, हरख छापग्या टीवडली ॥124॥  
 जण मेडती मीरा छोड, दिख उदासी गावडली ।  
 मिनख लुगाई टावर टाळी, आसू चाल धारडली ॥125॥  
 पुसकर बीचा टुरी साथणी, सावरिय री गावडली ।  
 ठोड-ठोड पर भगत खडवा है, फूल विछाया डाडडली ॥126॥  
 च्यार पण्डत अरदास कर है, जाड्या दोनू हाथडली ।  
 मीरा बाई घरा पधारौ नी ती लेस्या मीतडली ॥127॥  
 सावरिय रै आग रावै, मत छोडी थे हाथडली ।  
 तेज चादणौ जोरा चमक्यौ, सरगा पूगी साथडली ॥128॥

\* प्रेम गोपिका के पति ने रासलीला मे जाने से मना करने पर गोपिका ने आत्महत्या करली । श्री कृष्ण ने आशीर्वाद दिया कि अगले जन्म मे मैं तरे हृदय मे निवास करूंगा । मीरा बाई वही प्रेम गोपिका है । जो अत मे श्री कृष्ण मे लीन हा जाती है ।

## करणी माता

- हिमालाज मा रौ मिदर दोसै, दूर दिसावर धरतडली ।  
 मुसलिम भाई कहता दीसै, हज नानी रौ वातडली ॥129॥
- आवड माता आय विराज्या, थळी देस री टेकडली ।  
 तेमड टीलें बसो भवानी, घरमा राखी नीवडली ॥130॥
- करणी विन किरणा नी निसरै, देस जागळू घरतडली ।  
 विन माताजी राज रहवै न, वीक जाणी वातडली ॥131॥
- जोगमाय रौ रूप देख कर, तुरका धूजी टागडली ।  
 सेखी भाटी पूगळ लाई त्रेटी यावा रातडली ॥132॥
- जसाण रौ राव जैतसी, ऊमी जोरै वाटडली ।  
 अदोठ आछी होती दीस, करणी फेरया हाथडली ॥133॥
- लडणी भिडणी छोडी रावळ, हेत बसावी हीवडली ।  
 जसाण वीकण वाकट, रेखा खीची मावडनी ॥134॥
- त्रेटी डूब्यी बीच तलावा, कोलायत री भीलडली ।  
 करणी माता हली देता, लाखण खोली आखडली ॥135॥
- वाळू सूजी डाकू मारया, लाई मा घर गावडली ।  
 दसरथ भगता हुई थरपना, देसनोक री घरतडली ॥136॥
- गगासिध जी जुद्ध मदाना, घ्यावै मावड जीवडली ।  
 करणी माता दरसन देता, सेली हाया जीतडली ॥137॥

1 पूगळ की रानी न करणा मा म अपने पति का सिध के नबाव की जेल से छुडान की प्रायना की । मा क कहने से वह अपनी पत्नी की गान्गी बोक्रीजी स करनी है । मा भाटी को स्वतंत्र करा कर ब्यापान हेतु पूगळ रानी है इस तरह राठीड और भाटियों में सत्रथ म्यापिन होन है ।

## रहणो-सहणो

सोने जिसडा घोरा चमके, मखमल जयी रेतडली ।  
बुढा बडरा रळ-मिळ बठे, भली विचार वातडली ॥138॥

भाई चारी वस्यो मना में, थळी देस रो घरतडली ।  
अके दुजे रे दुख दरदा में, भाज आधी रातडली ॥139॥

घर-घर दीसे हेत मोकळी, हिळ मिळ रहवे सायडली ।  
जात-पात न भूली विसरी, बठी गाव गीतडली ॥140॥

गावा रीता घणी सातरी, चाल अकेल डोरडली ।  
घरा गाव ने बाध्या चाले, हस हस करता वातडली ॥141॥

आब हवा रे तणा दिखे है, गवस् ऊभो टीबडली ।  
वाजरिय रा सौगर जीमें, चूरचा घोव साकरडली ॥142॥

खाणी पीणी रहणी सहणी, अकेल सुणल बोलडली ।  
काका वावा कहता दीस, घर-घर टावर टिगरडली ॥143॥

बडे-वडेरा मान घणी है निजरा नीची आखडली ।  
मूण्डे बोलें पगा लागणी, गाव घरा रो रीतडली ॥144॥

साफ-सुधरी धोळी ऊजळी, दूधा हायी रेतडली ।  
पीळी लहरी ओडचा ऊभी, घोरलिया रो टीबडली ॥145॥

तीजतिवारा मेळा ठेळा, राग रग अर गीतडली ।  
घोरलिया रो जीव जीवसी, हरम कोड गावडली ॥146॥

दिन उग्या सू कर कामन, नी थाक है गोरडली ।  
हसती मूडी चम चम चमक घरा घरा में सायडली ॥147॥

जण बायरो<sup>1</sup> मधरो चाल, गेळ छायाजा आखडली ।  
 जिवड म ठडकडी पावै, सूत्यो लेव नीदडली ॥128॥  
 छोटै-वड री काण<sup>2</sup> राखी, सुणल टावर बातडली ।  
 घरा घरा म सोखा देवै, दादो दादी मावडली ॥149॥  
 कडी खीच री जीमण जीम, घीव सवडकै हायडली ।  
 पाणी पीया कर खखारा, हाथ फेरतो मूछडली ॥150॥  
 मोठ आगळिया दिया फिरोळा, वाजर चुगने रावडली<sup>3</sup> ।  
 खद वदखद वद सिज खीचडो, तातो उछळै छाटडली<sup>4</sup> ॥151॥  
 भाभरकै<sup>5</sup> उठ आटो पीस, घर-घर गावा गोरडली ।  
 घटी घमडका देतो फीर, भरती दीसै वाटडली ॥152॥  
 पोढी ढाळ्या दही विलीवै, ऊधी करिया गोडडली ।  
 ऊधो सूधो फिर झरणी, चूटी उतरै धाकडली ॥153॥  
 बीज मतीरा छडती दीसै, मूसळ लीया भावजडी ।  
 गाभ दूधो छाण वामणी, चूल राधे खीरडली ॥154॥  
 वडा-वडेरा वैठ्या दीमै, मूण्डी ढाकै बीदणली ।  
 हाथ पगरखी धाम्या चालै, होळ-होळ वहवडली ॥155॥  
 वूम्या लीया साग वणात्र, चूल वैठी साथडली ।  
 घोवा रै छमकार भूज, कुडठो लीया गोरडली ॥156॥  
 रातडली मै वैठ्या छोरघा, मधरी गात्रे गीतडली ।  
 फाकी भावज आन मिल्पा सू, गीत सुणीज धाकडली ॥157॥  
 कुचमादी टात्रिया दीस्या, घुटक्या देव मावडली ।  
 सळिया सिचला टावर वठ, रडकै बोनी आपडली ॥158॥

1 ह्वा का शोंका 2 इज्जन 3 रावडी-वजरा म बहुत छाटा सपे-  
 परपर 4 मनात्र म इतनी ताकत हाता या कि दूर तक गम छीटे  
 उछलत ये 5 ब्रह्म मूह्य ।



साथीडा रै साथ जाव, न्हावण घोवण नाडडली ।  
 गठा मारचा पाणी उछळै, कूद भाल्या नाकडली ॥159॥  
 चम-चम वरता मूडा चमकै, राती दीसै चामडली ।  
 दूध धीव री नदिया बहव, बँठचा सबड रावडली ॥160॥  
 झूपडली जतना सू वणगी, लेसो देवै गोरडली ।  
 धोळी राती पोती मारचा, चमक-दमक भीतडली ॥161॥  
 मरणै परण ऊक चूक मै, पच बठजा जाजमडो ।  
 पचा बीचा पडचो फेसलो, ऊभो जोडै हाथडली ॥162॥  
 पच फेसलो साची निवळ, स्स र मूडै हासडली ।  
 दूधो पाणी न्यारो-न्यारो, गावा वात्या धाकडली ॥163॥  
 टावरिया री टाळया दीसै, हाका हाकी टीबडली ।  
 फाटचा कुडता पगा उभाणा, रमता दीस गावडली ॥164॥  
 गाव ठाकरा री ठकराई वठ ऊपर जाजमडो ।  
 छोटा माटा मान देवता, ऊभा जोडै हाथडली ॥165॥  
 राजा राणी वाता चाल, धूणी माथ गावडली ।  
 सगळा बँठया द हुकारा मघरी लाग रातडली ॥166॥  
 आठू पोर लूट लावडा, करै हथाया चौथडली ।  
 अेक-दुजै री मूण्डो देह्या, भटक समभै वातडली ॥167॥  
 अैडी वेंडी आबी-खाबी, हुवै हथाया धाकडली ।  
 अेरी-गरी नथ्यू खैरो, करती दीस वातडली ॥168॥  
 होकी पीता बीच हथाया, दिखै फोरती हाथडली ।  
 ब्याव सगाई औसर मौसर, वात्या चाल चौथडली ॥169॥  
 विन हथाया जोव नी लागे, मिनख लूगाया गावडली ।  
 चौथडली पर वात करचा सू, पच जाव है रोटडली ॥170॥

अमल ऊगता उपज हयाया, वठया दीसै चौथडली ।  
 ऊच नीच नै भूल्यो विसरचौ, जी रो करलै वातडली ॥171॥  
 लकडघा भारो माथ धरियो, पगा बाघली बूहिडली<sup>1</sup> ।  
 तप तावडो लूवा चाल, भाज्यो<sup>2</sup> आवै गावडली ॥172॥  
 खीप जटडो<sup>3</sup> हाथ डेरियो, वटतौ दीसै जेवडली<sup>4</sup> ।  
 पाली नीरो लावण सारू, वणतौ दीसै छाटडली<sup>5</sup> ॥173॥  
 घरा घरा स ऊन लेवती, चरखी कातै डोकडली ।  
 भरो दुफारी पूणी लीया, वेजौ वणदै गोरडली ॥174॥  
 लकडघा भारो दिखै बाघती, लिया खीप रो जेवडली ।  
 लादो लीया फिरै सहर म, मो'रो खीन्था साडडनी ॥175॥  
 तूवा गीजा साथ वाजरी, आटो पीस भावजड़ी ।  
 हाथ थपला देती सेक, जाडी-जाडी रोटडली ॥176॥  
 लकडी छाणो घुमता दीमै, उळती दीसै थेपडली ।  
 फूक भूगळी जोरा मार, जगती दीस आगडली ॥177॥  
 बुग-बडेरा घाक मारिया, सोपी पटजा गावडली ।  
 मिनख लुगाई डरता भाज, वडता दीमै भूपडली ॥178॥  
 वर लाग्या वैरिया भाई, इण मू पहन टाटडली ।  
 गाव घरा मै साग बणाव, जोम वैठचा रोटडली ॥179॥  
 पाचा वर अटावण दूक, लूण घाळदघी हाडडली ।  
 साटो-सारी वणियो धचार, जोम घर मै गोरडली ॥180॥  
 ठोड-ठोड पर पोता दीस, होकी वीडो चोलमडो ।  
 गोट धुर रा उठता दीस, घर-घर गावा झूपडली ॥181॥

1 बूई 2 दोरता हुआ 3 बरवा व ऊंट के बाल 4 रम्भा 5 बररो  
 के बालों में बना हुआ एक प्रकार का बड़ा पत्ता ।

जद टावरिया भूखा दीस, जामण<sup>1</sup> लेव गोदडली ।  
 बुरगाटी ओढाणिय मारघा, हाचल<sup>2</sup> देवै मावडली ॥182॥  
 घाघरिय रा कोछा मारघा, बरी इडणी लूगडली<sup>3</sup> ।  
 माथ ऊपर धरघो खारियो, छाणा चुगलै डोकरडी ॥183॥  
 ईस तिडवगी मूज टूटगी, तागा होगी दावणली<sup>4</sup> ।  
 माचा भोळा हुया पडघा है, घर घर दीसै गावडली ॥184॥  
 आटा बाटा मैल जमी है, केसा पडगो जूवडली ।  
 कोलायत री भेट<sup>5</sup> लेवती, माथी धोवै गोरडली ॥185॥  
 दोईती नानाणे आयी, वठ नानी गोदडली ।  
 राती माती<sup>6</sup> हाती दीम, जीम्या घीव साकरल्ली ॥186॥  
 श्रीटीय री बात वटवती, नानी वठी माचडली ।  
 टावर सुणता सुणता मोज्या, मीठी लेता नीदडली ॥187॥  
 सी षोट्टू सू सहर वमै है, गिगना छाया वादळडी ।  
 घडी घडी म किला वणावै, मिटजा चाल्या पूनडली ॥188॥  
 खवासजी केसा नै काट वठघा छोया सेजडनी ।  
 माथे वीचा सडक वणावै, लावी राखै चोटडनी<sup>7</sup> ॥189॥  
 राखी रै तिवारा माथ, हरख छायजा गावडली ।  
 भाई हाथा राखी वाध हसती हसती वनडली ॥190॥  
 रुख राइडी ऊभी दीसै, सोनल फूला पाखडली ।  
 आता जाता स्म देख है, ठडी करता आखडली ॥191॥  
 तिला मायसू तेल निकालै, तेलण बेचै हाटडली ।  
 गाव घरा मै घाणी चालै, खळ खावै है भसडली ॥192॥

1 मा 2 स्तन 3 जोडणी 4 दावण 5 मुलतानी माटी 6 मोटा  
 ताजा 7 नाई बाल काटने पश्चात सिर के बीचो बीच उम्तरे स  
 सडकनुमा स्थान बना देता है तथा लंबी चोटी रखता है ।

बावळिया सू गूद निकळें, करलें भेळो हाडडली ।  
 कुमट गूद है स्स सू मूगो, विकें फळादी गावडली ॥1931  
 आक वडा र बीचा जलम्पो, वेटी वेगम टीवडली ।  
 अकवर मूण्डें नाम निसरिया, घोरा गूजी घरतडली ॥1941  
 जालाणो जाळा सू भरियो, पग-पग दीस छावडली ।  
 आता जाता नोचें वंठें, ठडो लेव पूनडली ॥1951  
 हरी भरी जाळा र माथें, पीलू दीस धाकडली ।  
 बुढा वडेरा टावर टोळी, तोडें भरलें जेपडली ॥1961  
 पाका पील पड्या डागळें, सूक्या वणजा कोकडली<sup>2</sup> ।  
 भूखा धाया सगळा चूस, जालाण री घरतडली ॥1971  
 गूदया माथ घणा गूदिया, खाया चिप-चिप दातडली ।  
 ऊवळी म दीस वूटतो, चूल सेकें सायडली ॥1981  
 तिलवाडें मे भेळा लागे, मासर दीस धाकडली ।  
 मल्लीनाथ जी देता दोम, मीठी पाणी नाडडनी<sup>3</sup> ॥1991  
 गगनहर घोरा म बहवें, मिटती दीस टीवडली ।  
 मरुधरा लहरावें खेती, गगानगर री घरतडली ॥2001  
 आधी राता घर मू चाल्यो, जाव दूजो गावडनी ।  
 चोर चकरा वचें भाईडी, कमर वाधिया रोकडली ॥201  
 जागळ देस जगळ मँ बसियो, दूर दर है गावडली ।  
 ऊचा घोरा दिख लाघता, चडिया ऊपर साडडली ॥2021  
 कंर आकडा झाड्या सूकी झपटा लाग्या खूवडली ।  
 लूख भरोडी डाळ्या हान, हरी भरी है खेजडनी ॥2031

1 सिंध मे लाक कहत है कि अकबर बाहूगाह का नाम आक और वड के बीच मे जाम लेन के कारण रखा गया था । 2 कोकडी-पालुआ का सुका कर जालोर के लोक वाकडी बनाकर दूर दिसावर तक साय रख कर चूसत हैं । 3 मले के समय थोडी घहराई पर ही मीठा पानी निकल जाता है । मले पश्चात् इसी स्थान से खारा पानी निकलता है ।

घाटी मारघा गवरू दीसै, ढकिया गमछै नाकडली ।  
 ऊटा चढिया घाडा मार, लूट सोनी चादडली ॥204॥  
 घरम निभाता टुर घाडवी, देवी घ्यावै जोवडली ।  
 हाय जोउता माथी टेक, सुगन देखल आसडली ॥205॥  
 लूठा नअे दिख लूटता, ऊभा भरलै जेवडली ।  
 निरबलिया नै दिस बाटता, मूठघा भर-भर रावडली ॥206॥  
 ऊटा चढिया दीडा दीड, सरपट भाज टोडडली ।  
 अेडी मारघा स्स सू आगै, पगा पागड जीतडली ॥207॥  
 दूर गाव सदेसी देवण, पलाण कसियो साढडली ।  
 ऊटै चढियो द फटकारो, पूर्गै राता रातडली ॥208॥  
 साथळ थापी दता ऊभो, कोछा मारघा घोटडली ।  
 मछवा बुकिया सामे दीस, माली ऊच्या हायडली ॥209॥  
 अेटी करार दिख न दिखसी, जिसडी धोरा घरतडली ।  
 ऊटै नै ईडर सू ऊच, फार मूण्डी हाथडली ॥210॥  
 डोल सू जद व्याव रचाव भरखै परम मरवणली ।  
 सूर कत बिना मरणी चोखी, किणी चाटलै मारडली ॥211॥  
 गाळ भूपडा हिल न हिलसी, जोरा चाल्या आधडली ।  
 बगला माया पून निकळजा, भूपो ऊभो टीवडली ॥212॥  
 सिखरा सूरज तप तावडी, पीपळ गहरी छावडली ।  
 दोफारा मै वँठघा दीस, चिडी गुरसली कागलडी ॥213॥  
 रेतडली मै जलम्या भाई, भरसी बोचा रेतडली ।  
 बिना रेत र दिख भटक्ती, जीव आत्मा घरतडली ॥214॥

1 पुराने जमाने के लोगों म इतनी ताकत था कि ऊट को नीचे से हथेली पर उठाकर उसका मुह दूसरी तरफ फर देते थे 2 झूपडा—मरु प्रदेश म गोल झूपड अधिक तथा झूपडी की संख्या कम होती है क्योंकि अधिक आधिया चलने स झूपडिया उठने का खतरा रहता है तथा झूपड आस पास से हवा निकल जाने स सुरक्षित रहते ह ।

उमस गाव मँ जद छा जाव, हिलै डूलै नी पानडली ।  
 माचौ लीया दिख ढाळतो, खेजडलै री छावडली ॥215॥  
 धारा धरती जायी जलम्यो, कोछा मारधा घोटडली ।  
 चौसगी न लिया हाथ म, काम करै है धाकडली ॥216॥  
 आकटल रा घुनिया उडता, दिखै गगन मँ धाकडली ।  
 घोळा घख है फूला हळका, तिरता दीसै पूनटली ॥217॥  
 मूटौ नाक सिरख सूढकियो, सप्रडक लेवै नीदडली ।  
 खरराटा नाका सू चाल, ऊनी होजा गूदडली ॥218॥  
 ठट पडया सू खिल जवानी, घर घर गररू गावटली ।  
 खाणौ पीणौ अग-चग लागै, चिकणौ चिलकै चामडली ॥219॥  
 ताव-तप जणै चढयो दिखै है, टूणौ करदैं मावडली ।  
 मायै ऊपर मिरच उवार, घरै कुण्डाळ रोटटली ॥220॥  
 मसाण जगाव है जनीजो, मतर पडता ल्हासडली ।  
 वसोकरण सुरमै रै खातर, वठया आधी रातडली<sup>1</sup> ॥221॥  
 भूत भूतिया वाकळ मागै, सूपी म्हारै हाथडली ।  
 नी सूप्या सू थान खास्या, सुणौ जतीजी वातडली ॥222॥  
 आप आप ग वाकळ सामी, देती दीसे हाथडली ।  
 मतर छोडौ काजळ पाडौ, भूत दिखावै अेडडली ॥223॥  
 जणै भूतणी वडै सोखता, सूकै वाया चामडली ।  
 सोच फिकर<sup>2</sup> मँ घुळतौ-घुळतौ, आखिर लेव मोतडनी ॥224॥  
 जण भूतणी वडै पोखता, मूण्डै दीसै हासडली ।  
 दूध घोव री नदिया बहव, रिपिया दीस जेवडली ॥225॥

1, ऐसी मायता थी कि वगोकरण सुरमे के बलवुत पर किसी स्त्री  
 पुरुष को वग म किया जाता था इसे आधी रात के समय गमशानों म  
 प्राप्त किया जाता था । 2 चिंता

औसर मौसर करता-करता, घर री विकजा लोटडली ।  
 खेत डागरा बाँरी लै जा, घर में खाली पोटडली ।।226।  
 मोया वीचा हुव लडाया, भूल गावा रीतडली ।  
 होडा-होडी चढ कचेटघा, खाली करल जेवडली ।।227।  
 यातड वीचा नाक राखवा, खरच सगळी पूजडली ।  
 भूल ब्याज नै देता देता, घर रहव नी टापडली ।।228।  
 ऊघा-ऊघा काम कर है, भूण्डी घाल रीतडली ।  
 अक दुज री देखा-देखी, करतो दीस साधडली ।।229।  
 तू-तू म म होता होता, हाया लेल डागडली ।  
 अक दुज री माया फोड, सूना चाल धारडली ।।230।  
 भाईडा म हुया लडाई, घर-घर खिचजा भीतडली ।  
 मरण परण अक आगणै, भूल बिमरै वातडली ।।231।  
 वंदा पोथ्या लिखी पढी है, मरुदस री गायडली<sup>2</sup> ।  
 काळीबगा खादघा मिलिया, गणा गाभा ठोकली ।।232।  
 मावट भासा अग चग है, रसी बसी है रेतडली ।  
 बोली म्हान घणो सुहान, मोठी लाग वातडनी ।।233।  
 नेणसो इतिहास लिख्या है पढ मानली धाकडली ।  
 जूनो<sup>3</sup> पोथी कहती दीसै, वाता मरुधर धरतडली ।।234।  
 अबुलफजल अर फैजी भाई, खाण्डी थाम्यो हाथडली ।  
 कलम लिया इतिहास लिख है, बठघा खम रातडती ।।235।  
 पीथळ पाती पढी साधिड, राण तणगी मूछडली ।  
 दिन भाया र कद न रहता, आण वाण रा बातडली ।।236।

1 गाव के लोह लडाई होने पर एक दूसरे से नहीं बोलते थे परंतु  
 शान्ति तथा मरण के अवसर पर पुन एक साथ हो जाते थे । 2 गाथा  
 3 पुरानी

## सुखा भरोड़ी

- रात मुहाणी तारा चिलक, इमरत न्हाखे चानणली ।  
घोरलिया र माथ गूजे, मधरी मधरी वासडली ॥237॥
- घोरा धरती साफ सूथरी, कीच दिखे नी आखडली ।  
ओवर गोवर स्त की सूक्यो, सूकी दीसे बाखळडी ॥238॥
- तावन्च्य म माछर मरजा, माखी मरजा लूवटली ।  
सोवण सस बजावण ढूके, मीठी लेती नीदडली ॥239॥
- चानणली राता मै रमल, गवरू ऊची टीनडली ।  
दली गिली दीस सूकती, गरम पसीनी खाखडली ॥240॥
- तू लपटा सू मिटे विमारी, रोग दिखे नी गावटली ।  
हसी खुसी टावरिया रमले, घर-घर जामण गोदटली ॥241॥
- थोडा गाभा मुख सू रहल, टावर डोवर गोरडली ।  
धोगलिय र माथ सूत्यी, ठडी लेत्रे पूनडली ॥242॥
- रात पड्या सू ठडी होजा, बाळू घोरा धरतडली ।  
माचा ढाळ्या वठ्या दीसे, मधरी करता वातडली ॥243॥
- गूद गिरी रा लाडू बाघ, सी मै जीम मेघडली ।  
सासरिया नै तेल देवता, काम करै दिन रातडली ॥244॥
- इसी मुख तन मिले न मिलसी, जिसडो घोरा धरतडली ।  
तनडे-मनड रमै रामजी, सुख सू लेव नीदडली ॥245॥
- जेठ असाढा घोर माथे, सूत्यी ऊपर माचडली ।  
भाभरके न ठघारी लाग्या, ओड साथी धोतटली ॥246॥



## चढी खुमारी

- मनवारा सू अमल ऊगजा किरची धरिया जीभडली ।  
 क'र सखारा हू कारा सू, धोरा घूज घरतडली ।।247।
- हौळी दियाळी व्याव अेढ, प्याला भरद बोतलडी ।  
 देसी ठररी सगळा पीव, ठाकर दारू दाखटली ।।248।
- सगा परमगो भाई बंधू जद मिळ बठै जाजमडी ।  
 दारू र मनवारा प्याला, पूग होटा जीभडली ।।249।
- जण डुमण्या मधगे गाव, दारू प्याला हाथडली ।  
 होडा होडी रिपिया वरस, खाली होजा जेबडली ।।250।
- भरो जवानी दारू पीव राता डोरा आखडली ।  
 मदमस्ती म दिख चालती, गवट ऊचो टीबडली ।।251।
- बब वोलता जुद्ध करवानै, हाथा थामै बीजटली ।  
 दारू पीता दूणी ताकत, दुसमी घूज टागडली ।।252।
- मदछकियोडो दिख जुभाटू, रण मदाना खेतडली ।  
 व्यारू मेरा लडती लखती, लेल साथी जीतडली ।।253।
- लाल कसूबी दारू दोस, गटक ऊभौ बोतलटी ।  
 राता डोळा जगना दोस, पलका उठता आखडली ।।254।
- भाई चारी दारू बीचा, वैठचा दोसै भूपडली ।  
 अेर दुज सू मिल्पा विना सू नी बीते है रातडली ।।255।
- व्याव तिवारा अमल गळ है, घर घर धोरा घरतडली ।  
 हथेळी मै दोम लेवती, सबड ऊभौ गावडली ।।256।

## रमतां

- बुढा बडेरा टावर टोळी, रमता दीमै टीवडली ।  
 विना रम्या सू जीणौ दोरां, ज्यू जीणौ त्रिन रोटडली ॥257॥
- टावरिया घरकुलिया रमन, गवरू कुसती गावटली ।  
 मोटयारा री रम्मत तास है बूढा चौपड जाजमटी ॥258॥
- आघल घोट रम्मत माथने, पाटी प्राधै आखडली ।  
 आघौ त्रणियो चक्कर याव, टटोळ पक्कडे हाथटली । 1259॥
- मीया घोडी रम्मत टावरा, धरै हाथ भुक् भीतडली ।  
 घाडी वणणी पटसी भाई, जमी लागिया टागडली ॥260॥
- ठिया दडी री रम्मत मायने, दूम्या राखी डागटली ।  
 आमी सामी दडी फक्ता, पडता प्रोचै हाथडली ॥261॥
- सात ठीकरया बीच कुण्डाळ, चिणदी ऊचो टेकडली ।  
 दडी मारिया विडै ठीकरया, चिणती लेलै जीतडली ॥262॥
- लील सूकू सू वाजी जीतै ऊभौ साथी टीगडती ।  
 जणै चूक मूडै सू होजा ह्यो खायै हाथडली ॥263॥
- लग्गू टिगू मीडू बट जाव रमल नीचे खेजडली ।  
 चौखडली री रमता प्रीचा, ऊची राख टागडली ॥264॥
- लूणा घाटी रम्मत मायने, च्याहू मेरा डाडडली ।  
 इखरधा विखरधा दिवै भाजता ऊचै धारै टीवटली ॥265॥
- गिल्ली डडा रमता दीमै, गावा टावर टिगरडली ।  
 ऊचै गिगना गिल्ली दिख है, पडती बोचै हाथडली ॥266॥

## दवा-दारु

जिण तलवारा भोड काटिया, खून लागियो धारडली ।  
आघी माघी दु खती मिटजा, देण्या मूडो आखडली ॥267॥

पेट आफरी चढती दीस, सिणियाँ सोघ गोरडली ।  
सिणिय जडनें मूड चाब्या, वाय सुर है घाकडली । 1268॥

टावरिया न टट्या लाग्या उक्ळ हाडी रेतडली ।  
नितरची ठडो पाणी लीनी, वठी पावें मावडली ॥269॥

जणै ताव तप दारा चढजा, गाभा दपटे दादडली ।  
हिरण मुताळी देता देता, टाबर मूड हासडली ॥270॥

चिडो खेतियो घास मोकळी, द ऊकाळी साथडली ।  
म्यादी ताव त्रिं उतरती, हसती दीम वटडली ॥271॥

ओ री माता जणै धमवजा, घासी देव मावडली ।  
ममोलिया री दिया उकाळी रमल टाबर टिगरडली ॥272॥

रातोदी आख्या पर फिरजा, हाथ दिख नी भीतडली ।  
गवार पत्ता घीव म जोम्या, देखें भाळें आखडली ॥273॥

जद भाईडी ठवारी खाव, घास आखी रातडली ।  
हळदी गाठियो पुळपुळ पाक्या, किरची चूसै जीभडली ॥274॥

राईड रो लकडी लीनी, दूर जगाव आगडली ।  
जणै खाजडी अवखी चाल, तेल निकाळ डोकरडी ॥275॥

जेठ असाडा हुव अळाया, मा'रा माघ वेटडली ।  
मुलतानी माटी न मसळें, निया हाथ मै मावडली ॥276॥

## गवर\*

- सिव पारवती दोनू ऊभा, गवरल ईसर गावडली ।  
 घर घर पूजा पाठ हुवै है, करै उजाणौ बहवडली ॥277॥
- घरा घरा सू छोरचा आई, ऊम्या दीसै टीवडली ।  
 होळी घेरचा रळ मिळ वठ, मघरी गाती गीतडली ॥178॥
- वीकारणै रै ढढा चौक मै, टावर साथै गोरडली ।  
 हीरा भोती अग अग चमकै, गणौ पहरचौ घावडली ॥279॥
- सरवर कूवा पाणी पीवण, जाय गवरजा घाटडली ।  
 पहरी ओढी गवरल ऊभी, दिखै जुवारा हाथडनी ॥280॥
- सोळ दिन री गोरी पूजा, ईसर आया साथडली ।  
 गीत गावती टुरी लुगाया, विदा करणन गोरडली ॥281॥
- सिणली रै तळाव गिन्दोनी, पाळा ऊभी साथडली ।  
 भेळी होया दिख त्रिजणिया, साथै राखै वैनडली ॥282॥
- घुडलखा जी वार चढचा है, लाज वचावण प्रहवडली ।  
 सामो छातो तीर खावती, आखिर लोनी भौतडली ॥283॥
- घुडलै वीर ज्यान देईदी खातिर घर री वीदणली ।  
 वचन देवती दिख त्रिजणिया थारी गास्या गीतडली ॥284॥
- गळी-गळी मै छोरचा घूम, घुडली घाम्या हाथडली ।  
 तेल वळ घी घाल सवागण, घर घर गावै गीतडली ॥285॥

\* सेठ गुलाबचन्द अभिनदन प्रथ लेखक चम्पातळ एव जोधपुर दुग मे पुस्तक प्रवागन म बात जगमाल जिन्गोली लायो त स रद्धत ।

## जोगी

देवनाथ जौघाण आया, पकड़ी काली सापणली ।  
समसाणा री राज देवता, राजा राखी वातडली ॥286॥

वनफटियो जोगी घर आयी, देती फेरी गावडली ।  
बैठ राजा वठ परजा, धमचक घालै धाकडली ॥287॥

ओधड जोगी दिख गाव म, हिंगळा चेला मावडली ।  
कान फाडणी वद कियो है जटा दिग नी चोटडनी ॥288॥

जण अधोरी जोगी आव, डर मानखी गावडली ।  
समसाणा सू आयी जोगी, सीध्या राम हाथडली ॥289॥

रावळ जोगी भगवा गाभा राखे भण्डी भोळकडी ।  
घरा घरा सू भिकछा माग, सीगी वाज धाकडली ॥290॥

त्रिल खोदता दिखै साधिडा, ऊभा बीचा रोहिडली ।  
साप पूछ नै पकड खीचलै, दाव मूडी डागटनी ॥29१॥

मूडी खोल फौडे काथळी, जहर नाखल वाटकडी ।  
पूछ पकडघा दीस लावती, ढक मायन छात्रडली ॥292॥

साप सलेटा छाबट वठचा, काधे लीनी कामडली ।  
ठोड ठोड पर खेल दिखाव, रिपिया लेव रोकडली ॥293॥

काल बलिया बीण वजाव, देख टावर टिगरडली ।  
मद-मस्ती लहराव काली मधरी वाज्या पूगडली ॥294॥

ब्याव तिवारा मिनख लुगाई, नाच दिखाव धाकडली ।  
मधरी मधरी ताना छोड, मीठी गाव गीतडली ॥295॥

## कला

- रग-रेजी छापलिया मारें, बिक चोघट<sup>1</sup> हाटडली ।  
 रग लाग्या सू चमकें दूणी, लाल'र पीळी चूदडली ॥296॥
- बीकाण री सदर जेळ म, बुणै गलीचा जाजमडी<sup>2</sup> ।  
 रेसम धागा रग-रगीला, कोरें फूला पाखडली ॥297॥
- गाभा माथै मड माडणा, बाढाण री धरतडली ।  
 रग रगीला वूटा माड्या, छपती दीसै चूदडली ॥298॥
- चित्रकला है घणी सातरी, माड्या घोडा साडडली ।  
 घेर घाघरी देती नाच, भीता माथ गोरडली ॥399॥
- ढोला मारू मड्याखाल पर चिडकल माडी भीतडली ।  
 महल माय न मडी कामणी, धूघट काढ्या चूदडली ॥300॥
- मोर चग मनडै न भावै, जैसाण री धरतडली ।  
 दाता बीचा आन तारियो, मघरी छोड तानडली ॥301॥
- माड राग रागा म मीठी, कण कण गूज टोबडली ।  
 जणै गोरडी गावण दूव, सरमा मरजा वीयलडी ॥302॥
- भीणमाल महोरा पाली, बणी मूरत्या टेकडली ।  
 रणकपुर मिंदरा मै दीस चतर कारिगर हाथडली ॥303॥
- गीत सगीत गरथ मोवळा, बीकाणै री धरतडली ।  
 बडा बडा विघवान आय कर, जूनी पढल पाथडली<sup>3</sup> ॥304॥

1 गांव के मध्य का वह खुला मैदान जिसके चारों ओर दुकानें होती हैं । 2 बीकानेर की जल में बने गलीचे इग्लड फास आदि स्थानों को बिकस है । 3 पोपी किताब ।

- भीणी जाळ्या दिसें भरोखा, ऊभी भाकें गोरडली ।  
 फूला वेला रग रगिली, मडी दिख है धाकडली ॥305॥
- कारिगरा री घडी मूरती, दिख जीवती गोरडली ।  
 आता जाता ऊभा देख, पलका थाम्या वाखडली ॥306॥
- नवलगढ री ऊची ह्वेत्या, मोटी चवडो भीतडली ।  
 गिगन छूवती ऊची दीसै, देख्या पडजा पागडली ॥307॥
- टाकी हथोडी द टणकारा, घड सिलावट भाटडली ।  
 मकराण री चोक्या लीया जडें कारिगर हाथडली ॥308॥
- ऊडी नाडी माटी खोर्द, घडती दीस मटकडली ।  
 कूजा घडिया घड्या मोकळा, विकता दीस हाटडली ॥309॥
- सुथारा री चाल्यो वसोली, विलरचा छाडा धरतडली ।  
 घर दरवाजा ओगळ भोगळ वणती दीसै माचडली ॥310॥
- लोह लोहार दिखें हाथ मै, फूक वठचा आगडली ।  
 जगो हथोडी जोरा चाल वणती दीस गाटडली ॥311॥
- सोनारा री टक-टक चाल, चमक सोनी चादडली ।  
 धोमी धोमी पडै हथोटी, वणती दीस हारडली ॥312॥
- ठ्ठठारा री ठण ठण वाज, घड टोपिया देगचटी ।  
 दिन ऊया मू वाजण दूक, वरतन भाण्डा हाटडली ॥313॥
- इसडा किला दिख नी दिखसी, जिसडा जेसा धरतडली ।  
 विन पाणी विन गार चुणद, गिगना ऊची भीतडली ॥314॥
- ऊट खाल पर काम हुव है, वीकाण री धरतडली ।  
 सोनल रूपल भीणी भीणी, कोरी फूला पाखडली ॥315॥
- मरुधरा र धर धर दीस, कला कार री हाथडली ।  
 दूर दिसावर नाम वमायी, बेटी वाळू रेतडली ॥316॥

## सेठा

- सेठा वेटा अक्ल घणी है, घोरज राखै हीवडली ।  
 दूर देस सू आय फिरगी, सीरयी सेठा वातडली ॥317॥
- मस्देस सू टुरघा सेठजी, पूगै दूजी गावडली ।  
 विन दिसावर फळै नी फूलै, सेठा जाणी वातडली ॥318॥
- काम-काज खोजण नै चाल्या, साथे खाली लोटडली ।  
 पूठा मुडता हाथ दरब है, हीरा मोती जेवडली ॥319॥
- सोनी चादी दिखै मोकळी, हे'ली वणगी घाकडली ।  
 जाळी क्षरोखा पग पग दिख, मकराण री भाटडली ॥320॥
- गरीब गुरवी आस लगाया, जोव सेठा वाटडली ।  
 दिसावर सू आया सेठजी, बाट गमछा घोटडली ॥321॥
- घरम-करम म स्स सू आग, भगवन बसिया जोवडली ।  
 ठोड-ठोड पर मिंदर वणावै, कुवा खुदावै नाडडली ॥322॥
- दानी अेडा दिखै न दिखसो, जिसटा घोरा घरतडली ।  
 घणी लुगाई रळ मिळ राख, पोसाळा री नीवडली ॥323॥
- दाणै रा दो दाणी करल समझ दिख है घाकडनी ।  
 व्यापारा म घाक जमाई वेटी मरुधर घरतडली ॥324॥
- गाव मोह छोडघा नी छूट, रग-रग बसगी रेतडली ।  
 दिसावर म बैठघा सेठजी, जीव बस है टीवडली ॥325॥
- ऊच-नीच मनड नी भाव, काज बस्यो है जोवडली ।  
 छोटा माटा काम करण मै, नी राखै है लाजडली ॥326॥



## जैसाण

जसाणं में दरब मोकळी, गळिया गादी जाजमडी ।  
अमला री मनवारा गूजै, घरा घरा री चौथडली ॥327॥

जसाणै रै हाबूर गाव भाटा छाया छोटडली ।  
दूध चाडिये जावण देव, दही जम है घाकडली ॥328॥

काजू बिदाम भाटा वणग्या, जेसा गावा कठोडो ।  
जद भाईडो तोड देखल, गिरी जमी है रेतडली ॥329॥

गाव डाबल भाटा वणग्या रख घाठका सेजडली ।  
सैलाणी इण आय गाव म, परख ललै हाथडली ॥330॥

जेसाण र बडे वाग म<sup>2</sup> आम्बा भरल छावडली ।  
शील किनार रूखा माथ मीठी बाल कायलडो ॥331॥

सुहागिया है नाम वावडी, ठडो पाणी घाकडली ।  
कपूरडी बेर सू निसर, जळ नीरोगी घरतडली ॥332॥

बोरा भर-भर पनडी लावै, दिखै बेचता हाटडली ।  
जेसाण री घरती बसगी घर घर खसबो पत्तडली ॥333॥

पत्या माथ पाणी छिडक, सूकै ऊपर छातडली ।  
पुनम चाद री किरण पडचा सू महक भर है पूनडली<sup>3</sup> ॥334॥

कूवै बीचा खोद वणाव, बैठण सारु आरडली ।  
बारै साथै उतर साथिडा, सुख सू लेव नीदडली ॥335॥

1 जसलमेर जिले मे हाबूर गाव म एसा पत्थर है जिस दूध मे डालने पर दही जम जाता है । 2 जसलमेर से 8 कि मीटर दूर है । 3 सिंध से पनडी की पत्तिया लाकर छत पर चादनी रात म सूकाते ये जसलमेर की हवा से पत्तिया मे चौगनी छुसबू हा जाती थी ।

## सेखाण

- रघुनाथगढ़ रा भाटा भाइ, चम-चम चमकै धाकडली ।  
 पणो<sup>1</sup> वणाती दिखै लुगाया, मधरी गाती गीतडली ॥336॥
- गणस चौथ न लाडू वाटै, गुरू बाधलै पागडली ।  
 गुरवाणी चूदड नै ओढ, गाव घरा री रीतडली ॥337॥
- भगर-मगर भेरणिया चाल, भाक फाटिया गावडली ।  
 मधरी मधरी पून बीच मै, घणी सुहावै तानडली ॥338॥
- सेखाण मै रम्मत घालता, साग रचाव धाकडली ।  
 अमरसिध, जगदेव ककाळी, सगळी देख गावडली ॥339॥
- च्याहमेरा भीड दिखै है, पाटी ढाळयो टीवडली ।  
 घरा घरा सू आय लुगाया, देख बैठघा छातडली ॥340॥
- ढुल्ली मोठी गाती दीसै, ऊची खीच तानडली ।  
 आठ बोसा रै आतर सू, सुणलै भाई धोलडली ॥341॥
- भुभा जाट रै नामा माथै, सहर वस्यो है धावडली ।  
 आज भूभुनू नाम बोलिजै, मूण्डे साथी साथडली ॥342॥
- दया धरम रग-रग म बसिया, हिवडै भगवन वातटनी ।  
 जिव जिनावर सुख सू रहवै, सेखाण री गावडली ॥343॥
- धरम करम री वात हुवै है, घर-घर घोरा धरतडली ।  
 सतनारायण बधा सुणी ये, बहती दीसै डोवरडी ॥344॥

1 दीवार पर लिपाई करने के लिए चूने को अत्यंत बाराब पीस कर उत्तम सिध राज नामक चित्रने पत्थर की बुरखी छिन्न कर फिर घुटाई करदी जाती है ।

## सिखा

- जूनी वाता सुणै गावरा, वैठवा ऊपर टीबडली ।  
 रात पडवा सू भळ वठवा, द हूकारा धाकडली\* ॥345॥
- पाच पचारौ कह्यौ करणी, मूड बोली साचडली ।  
 परिहार तन वात बताई टकी राख द हाथडली ॥346॥
- घणै टावरा दु खडौ पासी, राता कटसी रानडली ।  
 थोड टावरा सुख सू रहसी, हिवडै राखी बातडली ॥347॥
- पढणी लिखणी मत भूली घू, हिरद राखी बातडली ।  
 ठगोरा सू कद नी ठगसी, राकड रहसी आटडली ॥348॥
- रूख वाढणी पाप लागसी मिट जावेली छावडली ।  
 काळ दूकाळ आय घेरसी, नी बरसेली वादळडी ॥349॥
- जीव मारिया हत्या हासी, सूनी होसी रोहिडली ।  
 विना सासरा जीणी आघौ, नी लाटीज खेतडली ॥350॥
- अचरौ-कचरौ पास राखी, घूवा दिस न आखडली ।  
 साची जीणी इणन कहव, सूणती जा घू साथडली ॥351॥
- नितरची छाण्यौ पाणी पी'ली सीखा देव मावडली ।  
 कीडा सू छुटकारौ पा सी, पचजावेली रोटडली ॥352॥
- नसापता नै नाक राखी, ऊमर कटसी धाकडली ।  
 मादी ताती कद न दिखसी, मूण्ड रहसी हासडली ॥353॥

\* गर्मों के मौसम में रात्रि के समय गाव के लोक इत्थट्ट होकर ऊंचे टीबे पर बैठते हैं । एक व्यक्ति कहानी सुनाता है दूसरे हूकारा दे के उसका साथ देते हैं ।

लडणी भिडणी नाकै राखी, सुख सू लेसी नीदडली ।  
कोट कचडया चढता चढता, घिस जावेली मोजडली ॥३५४॥

भूण्डी रीता तोड नाखदी, दूधा भरसी चाडडली ।  
घर आगणियै सुख सू रहसी, हस-हस करसी वातडली ॥३५५॥

घाई घुती करघा सू भाई, रोग लागसी जीवडली<sup>१</sup> ।  
सोच फिकर मै घुळती घुळती, आखिर लेसी मोतडली ॥३५६॥

ओछ मिनखा हत न राखी, साख मिटेली सायडली ।  
छोटी छोटी वाता मायै, लडती दीसै गावटली ॥३५७॥

भाइला री भेद न कहणी, हसती लेली मोतडली ।  
बिन साथी रै जीणो दोरो, सुणलै साथी वातडली ॥३५८॥

घरा लुगाई भेद न देणी, वात बसाली हीवडली ।  
घर मालिक बिन घर नो चाल गाव घरा री रीतडली ॥३५९॥

जमो वाटिया जीव बटला उाटी होसी खेतडली ।  
बटतो बटतो दु खडी पासो, अकल बैठघाँ झूपडली ॥३६०॥

आपा-घापी कदै न करनो, घरमा राखी वातटनी ।  
मिनख जमारो मुड नो आव, मत मीचो थू आखडली ॥३६०॥

भाई चारै भगवन मिलसी, कर देखी थू वातटली ।  
मिनख मितयासू मिळै आतमा, मालिक बसिया जीवटनी ॥३६१॥

धीरज राख्या वीर बणेली, सगळा सुणसी वातटनी ।  
रीस करघा मू बळता झळता, काळी पडसी चामडली ॥३६२॥

मिनख जमारो दियो सावर, भजन करी दिन रातडनी ।  
सरगा वीचा जाय बसेली, सुण साथीला रातडली ॥३६३॥

१. एक दूसरे की बुराई करने से मनुष्य भूत खडा कर लेता है। भूत रूपी रोग से पीडित होकर चिता में घुल घुल के मृत्यु का प्राप्त होता है।

## मरुधरा

चादडले री रात चादणी तारा छायो रानडली ।  
घोरलिया रा गाव भलेरा, रळ मिळ वठै साथडली ।।364।

रग-रग म माटी कण बसियौ, हिवड माता घरतडली ।  
वोकाण गावा म वसगो, मरुधरा री साथडली ।।365।

सूर तणा ही सदा रही है, इण वरती री लाजडली ।  
जोधाने री घरती माथ, हेला दव साथडली ।।366।

मरुधरा री माथा ऊची दिल्ली पूगी वातडली ।  
नागणी पूठा नी देख्या, राणी हाडी साथडली ।।367।

चागाना र वोचा ऊभा, किली दिख है टकडली ।  
जालाण र गल वोचा, नाम पूछल साथडली ।।368।

वाळू रेता रगा रगोजी, रूपल गोगी सानडली ।  
जैसाण री गळी गळी म मूमल बठी साथडली ।।369।

घरा घरा म हरखकाड है मूड दीस हासडली ।  
वाढाणे रे गाव वसो है, गीत गावती साथडली ।।370।

घोरा घरती मूड बोले, मोती निपज घावडली ।  
संखाने रे खना वोचा, हसती नाच साथडली ।।371।

मरुधरा सूर री घरती जलम जोधा भावडली ।  
घरती मा री लाज राखदी, बहती दीस साथडली ।।372।

मरुधरा री लाज राखवा ऊभी टोल वटडली ।  
करणी माता साथ पदमनी, मरवण मूमल साथडली ।।373।

# परिशिष्ट

## भिणलै

- सिणकलिया टाबरिया दीस, हाथा लीया पाटडली ।  
गावा री पोसाळा भिणलै, क-कौ कोटकी बारखडी ॥३७४॥
- पोसाळा मै उधम मचाया, गुरु खीचलै चोटडली ।  
सिचला सिचला टाबर वैठै, पडती दीस्या ठूळवडी ॥३७५॥
- पढणौ बोळी लिखणौ थोडौ, कठा जूनी पोथडली ।  
उणणौ गुणणौ हिवडै उपजै, डढा ढावा घूटडली ॥३७६॥
- गुरु देव री मुहारणी मै, ऊचा-पूचा ढूचडली ।  
पढणौ लिखणौ कोठ करियो, हिमै उतारी वातडनी ॥३७७॥
- विना पढोडा दिख गाव म, अकल वसी है हीवडली ।  
हाथ आगळधा गिणता-गिणता, करलै लेखा जोखडली ॥३७८॥
- अ सू अडवौ दीमै खत म, ढरती भाजै लूवडली ।  
आ सू आळी बण्यौ भीत पर, कूच्या राख मावडली ॥३७९॥
- इ-सू इडाणी माथै राखी, पाणी लाव गोरडली ।  
ई-सू ईसा माचा टूटी, तागा होगी मूजडली ॥३८०॥
- उ-सू उखळी कूटै वाजरी, मूसळ लीया भावजडी ।  
ऊ-सू ऊटौ वैठघौ दीस, ठडी छीया खेजडली ॥३८१॥
- अे-सू अेडी दिख रगडती, भाटै माथै गोरडली ।  
अै-सू अैवड चरतौ चालै, माथौ जोडया घेटडली ॥३८२॥

1 गावा की पाठशालाआ मे पुराने समय म क की काटका माने शदा के साथ स्थानीय रोजमर्रा काम म आने वाली वस्तुओ के नाम के साथ जोड कर पढाया जाता था । इसी मन्म म छ दा के माध्यम स गीत गात

## मरुधरा

चादडले री रात चादणी तारा छापी रातडली ।  
धोरलिया रा गाव भलेरा, रळ मिळ वेंठ साथडली ॥1364॥

रग रग म माटी वण बसियो, हिवड माता धरतडली ।  
वीकाणै गावा म बसगो, मरुधरा री साथडली ॥1365॥

सूर तणा ही सदा रही है, इण धरती री लाजडली ।  
जोधण री धरती माथ, हेला दव साथडली ॥1366॥

मरुधरा री माथा ऊचो दिल्ली पूगी वातडली ।  
नागाणी पूठो नी दख्या, राणी हाडी साथडली ॥1367॥

चागाना रें वीचा ऊभा, किली दिखें है टकडली ।  
जालाण र गेल वीचा, नाम पूछल साथडली ॥1368॥

वाळू रेता रगा रगीजी, रूपल गोगे सोनडली ।  
जसाण री गळी-गळी में मूमल वठी साथडली ॥1369॥

घरा घरा में हरखकाड है, मूड दीस हासडली ।  
वाढाण र गाव बसो है, गीत गावती साथडली ॥1370॥

धोरा धरती मूडें बोल, मोती निपज धावडली ।  
सखाण र खता वीचा, हसती नाच साथडली ॥1371॥

मरुधरा सूर री धरती, जलम जोधा मावडली ।  
धरती मा री लाज राखदी, कहती दीस साथडली ॥1372॥

मरुधरा री लाज राखवा ऊभो टील बटडली ।  
करणी माता साथ पदमनी, मरवण मूमल साथडली ॥1373॥

# परिशिष्ट

## भिणलै

- सिणकलिया टाबरिया दीस, हाथा लीया पाटडली ।  
गावा री पोसाळा भिणलै, व कौ कोटकी वारखडी ॥1374॥
- पोसाळा म उधम मचाया, गुरु खीचल चोटडली ।  
सिचला सिचला टाबर वैठै, पडती दीस्या ठूळकडी ॥1375॥
- पढणी बोळी लिखणी थोडी, कठा जूनी पोथडली ।  
उणणी गुणणी हिवडै उपज, डेढा दावा घूटडली ॥1376॥
- गुरु देव री मुहारणी मै, ऊचा पूचा दूचडली ।  
पढणी लिखणी कोठ करियो, हिय उतारी वातडनी ॥1377॥
- बिना पढोटा दिखै गाव म, अकल बसी है हीवडली ।  
हाथ आगळचा गिणता गिणता, करल लेखा जोसडली ॥1378॥
- अ सू अडवी दीमै घत म डरती भाजै लूवडली ।  
आ-सू आळी वण्यो भीत पर, कूच्या राखै मावडली ॥1379॥
- इ-सू इढाणी माथै राखी, पाणी लावै गोरडली ।  
ई-सू ईसा माचा टूटी, तागा होगी मूजडली ॥1380॥
- उ सू उखळी कूटै वाजरी, मूसळ लीया भावजडी ।  
ऊ-सू ऊटो बठची दीस, ठडी छोया खेजडली ॥1381॥
- अे सू अेडी दिख रगडती, भाटै माथै गोरडली ।  
अ सू अवड चरतौ चालै, माथो जोडचा घेटडली ॥1382॥

1. गावा वी पाठशालाओ म पुराने समय म व वी काटवा याने गढा के साथ स्थानीय रोजमर्रा काम में आने वाली वस्तुओ के नाम के साथ जोड कर पढ़ाया जाता था । इसी मदम म छ दा व माध्यमस गीत गाले



- आ नू आरण घास मोरळी, चरतो दीस टोगडली ।  
 ओ सू आसया ढलतो दिखै, थामी हाथा डागडली ॥383॥
- अ-अ वाट्या सू भाई, भिण्या मानखी गावडली ।  
 विना भिण्या गू जीणी बाघी हिवट राखो वातडली ॥384॥
- क-की कोटकी कड-रड बोल, पापट तोडघा हाथडली ।  
 स खी साजडी माथ चाल, जूवा काट्टे मावडली ॥385॥
- ग गो गारो गावणी भाई, मार सवडका पीरडली ।  
 घ घो घघूडी उड गिगन मै, भेळी चिलखा कागडली ॥386॥
- च चौ चीपियो राटी सेक, जीम घोव सावरडली ।  
 छ छो छीकी ऊचो टागियो, माय राखदो राटडली ॥387॥
- ज जी जळव्या वठी जीम, मेळा ठळा गोरडली ।  
 झ भी भरणा दही विनोव, वणती दीसै छाछडली ॥388॥
- ट टी टण मण टोरगे भाई, गण मण चारत गाडडली ।  
 ठ ठी ठठारी घडता दीस ताम्बा पीतळ देगचडी ॥389॥
- ड-डो डम्मर हाथा वाज मूड वाज वासडली ।  
 ढ ढी ढकणी दीम ढाकती, चूले सीज्या खीचडली ॥390॥
- त-ती ताकडी वठघो तोल, घर घर गावा हाटडली ।  
 थ थी थाळी पुरम्या वठी, जीम घर म गोरडली ॥391॥
- द दी दीवटी जगती दीस, हुयो चादणी झूपडती ।  
 ध धी धणी र लार चाल घूघट काढघा वहवडती ॥392॥
- न नो नाकने झाल्या ऊभी, घर घर सासू गावडली ।  
 प पो पपयी मीठी वाल, वादळ छाया रातडली ॥393॥

एव गुणत गुणाते वणमाला तथा दस तत्र के अको का पान हो जायेगा ।  
 यह काय व्यक्ति घर का काय करत खेत बोते, गादी त्योहार एव  
 उत्सव के समय गात गात कर सकता है । स्थानिये धुनो म उक्त छंदो

- फ फौ फलसियौ खोल्या ऊभौ, घर म बडजा साढडली ।  
व वौ वाटकी साग पटस्यौ, बठचौ जीमै रोटडली ॥394॥
- भ भौ भँसौ आवै मारती, करती ऊचौ पूछडली ।  
म मौ मोरियौ दिखै नाचती, बादळ नाग्या छाटडली ॥395॥
- य यौ यज्ञ म्हानै होतौ दिखै, हरक कोड गावडली ।  
र रौ राखी पूनम तिवारा, वैनड वाघै हाथडली ॥396॥
- ल-लौ लाडू बठचौ जीम फेर पेट पर हाथडली ।  
व-वौ वीरतौ गावा आयौ, हसती दीस वैनडली ॥397॥
- स सौ साप लहरायै काळी मधरो चाल्या पूनडती ।  
ह हौ हळियौ खेत म चालै, निपजै मोती घरतडली ॥398॥
- क्ष त्र ज बोल्या सू भाई, भिण्यौ मानखौ गावडली ।  
पढै लिख र च्यार आख है, समझी भाया जातडली ॥399॥
- अेकी अक अेक गेडीयो, मडियौ ऊपर पाटडली ।  
दूओ दो है दो गावडत्या, रळ मिळ चाली रोहिडली ॥400॥
- तीर्यै तीन है तीन बकरघा, घर घर दूवै मावडली ।  
चोक च्यार-च्यार पाडक्या, चरती दीस घासडली ॥401॥
- पाच पाच पाच बागलिया रैठघा ऊपर भीतडली ।  
छक छबू है उबू छाजला, धान फटकलै मावडली ॥402॥
- सात सात सात कबूतर, उडता दीस झूपडली ।  
आठ आठ आठ चिडकल्या, भीता माडी गोरडली ॥403॥
- नवै नवू है नवू गेजडघा, ऊभ्या दीसै टीवडली ।  
अेकै मीडी दस बोल्या सू, भिण्यौ मानखौ गावडली ॥404॥

को जोड के गाने से ग्रामशासी शीघ्रता से गाने लगेगे इस स उनका पढ़ने क बाय स-पात्रित हाना दृष्टिगाचर होया ।

ओ मू ओरण घास मोरुळी, चरती दीस टोगडली ।  
औ सू आसथा ढलती दिख, थामी हाथा डागडली ॥1383॥

अ-अ वाल्या सू भाई, भिण्या मानखी गावडली ।  
विना भिण्या सू जीणी आघी, हिवडे राखी वातडली ॥1384॥

क-कौ कोटकौ कड कड गोल, पापड तोडचा हाथडली ।  
ख खी खाजडी माथ चालै, जूवा काढे मावडली ॥1385॥

ग गौ गोरी गावटी भाई, मार सबडका खीरडली ।  
घ घौ घघूडी उड गिगन मै, भेळी चिलखा कागडली ॥1386॥

च चौ चीपियौ राटी सेक, जीम घोव साकरडली ।  
छ छौ छीकौ ऊचौ टागियौ, माय राखदी रोटडली ॥1387॥

ज-जो जळेव्या वठी जीम, मेळा ठेळा गोरडली ।  
झ भी भेरणी दही विनोव, वणती दीस छाछडली ॥1388॥

ट-टी टण-मण टोकरी भाई, गण मण चाल गाडडली ।  
ठ ठी ठठारी घडती दीस ताम्बा पीतळ देगचडी ॥1389॥

ड डौ डम्मरू हाथा वाज, मूड वाजै बासडली ।  
ढ ढौ ढकणी दीस ढाकती, चूले सीज्या खीचडनी ॥1390॥

त ती ताकडी वठचौ तोल, घर घर गावा हाटडली ।  
थ थौ थाळी पुरस्या वठी, जीम घर म गोरडली ॥1391॥

द दी दीवटी जगतौ दीस, हुयौ चादणी झूपडली ।  
ध धौ घणा र नार चाल, घूघट काढया वहवडनी ॥1392॥

न नौ नाकने झाल्या ऊभी, घर घर सासू गावडली ।  
प पौ पपयौ मीठी गोल, वादळ छाया रातडली ॥1393॥

एव सुणते सुषाते वणमाला तथा दस तत्र के अको का जान हो जायेषा ।  
यह काय व्यक्ति घर का काय करत खेत बोते गादी त्यौहार एव  
उत्सव के समय गात गाते कर सकता है । स्थानिये धुनो में उवन छदो

- फ फी फलसियो खोल्या ऊभो, घर में बडजा साढडली ।  
 व वी वाटकी साम परूस्यो, वैठघो जीमै राटडली ॥394॥
- भ भो भसी आव मारतो, करतो ऊचो पूछडली ।  
 म मी मारिया दिख नाचती, वादळ नाख्या छाटडली ॥395॥
- य यो यज्ञ म्हान होती दिख, हरके कोडें गावडली ।  
 र री राखी पूनम निवारा, वैनड वाघै हाथडली ॥396॥
- ल ली लाडू बठयो जीम फेर पेट पर हाथडली ।  
 व-वो वीरती गावा आयी, हसती दीस वैनडली ॥397॥
- स सी साप लहरावें काळी, मधरो चाल्या पूनडली ।  
 ह ही हळियो खेत म चाल, निपज मोती धरतडली ॥398॥
- क्ष ष न बाल्या स भाई, भिण्या मानखी गावडली ।  
 पदै लिख ७ च्यार आव है, समक्षी भाया वातडली ॥399॥
- अकी अक अेक गेडीयो, मडियो ऊपर पाटडली ।  
 दूओ दो है दो गावडत्या, रळ मिळ चाली रोहिडली ॥400॥
- तीय तीन है तीन वकरघा, घर घर दूव मावडली ।  
 चोके च्यार च्यार पाडव्या, चरती दोमै घासडली ॥401॥
- पाचे पाच पाच कागलिया वैठघा ऊपर भीगडली ।  
 छक छवू है टरू छाजला धान फटकलै मावडली ॥402॥
- सात्त सात्त सात्त ववूतर उडता दोसै झूपडली ।  
 आठ आठ आठ चिडकल्या भीता माडी गोरडली ॥403॥
- नव नवू है नवू तेजडघा, ऊभ्या दोमै टीउडली ।  
 अेके मीडी दस बोल्या मू भिण्यो मानखी गावडली ॥404॥

को जोड के गाने से ग्रामवासी शीघ्रता से गान रुकन इन से उनका  
 पढ़ने के साथ सम्पादित हुाना श्रुतिगावर हुाना ।



## मरकरी

५

- माहत्र उण्यो फिर टावरियो, मूड डडी मम्मडली ।  
ऊटियो जद मारी लातडो, नाम आयग्यो मावडली ॥405॥
- जे चचळ्ळाई घणी दिखात्र, सग्या वाघद माचडली ।  
गाध पूछ वाधी जेवडी मार ऊम्या डागडली ॥406॥
- गोधी ठडती दिर्ये भाजती, अटकें दूजी माचडली ।  
हाथ अकुण्या लूसा उतरी, फूटी दोनू गोडडली ॥497॥
- जणें जेवडी टूटें माच, सोरी लीनी सासडती ।  
ऊधो पडियो आग्या फाडे, आ हुई काइ वातडली ॥408॥
- चौथडली पर वैठजो भाई, गप्पा मारें धावडरी ।  
रात सेत म भूत देखियो, मार भगायो डागडली ॥409॥
- दूज दिन साथीडा नाचें, भूत वणोडा गेतटली ।  
भूत देखिया घाती भरदी, जोरा हाल टागडली ॥410॥
- सतर वतर हुयो डौकरी, टात्रर खोचें घेतडली ।  
मोकौ मिलिया लाग मारतो, मूछा फेर हाथडली ॥411॥
- घोळा टोभा काळ रगरी, गध लेड सी नाकटसी ।  
टिरती राफा घोळ दाता डाकी आयी साथडली ॥412॥
- जद खवासजी गावा आव, टावर लुकजा भूपडली ।  
इरला विरला वाहर रहजा, चढ वठ है खेजडली ॥413॥
- विना धार र फिर उस्तरी माथी दाव्यो गोडडली ।  
टोपसी न दोस रगडती. खोर उदावण. टाडकरी ॥414॥

